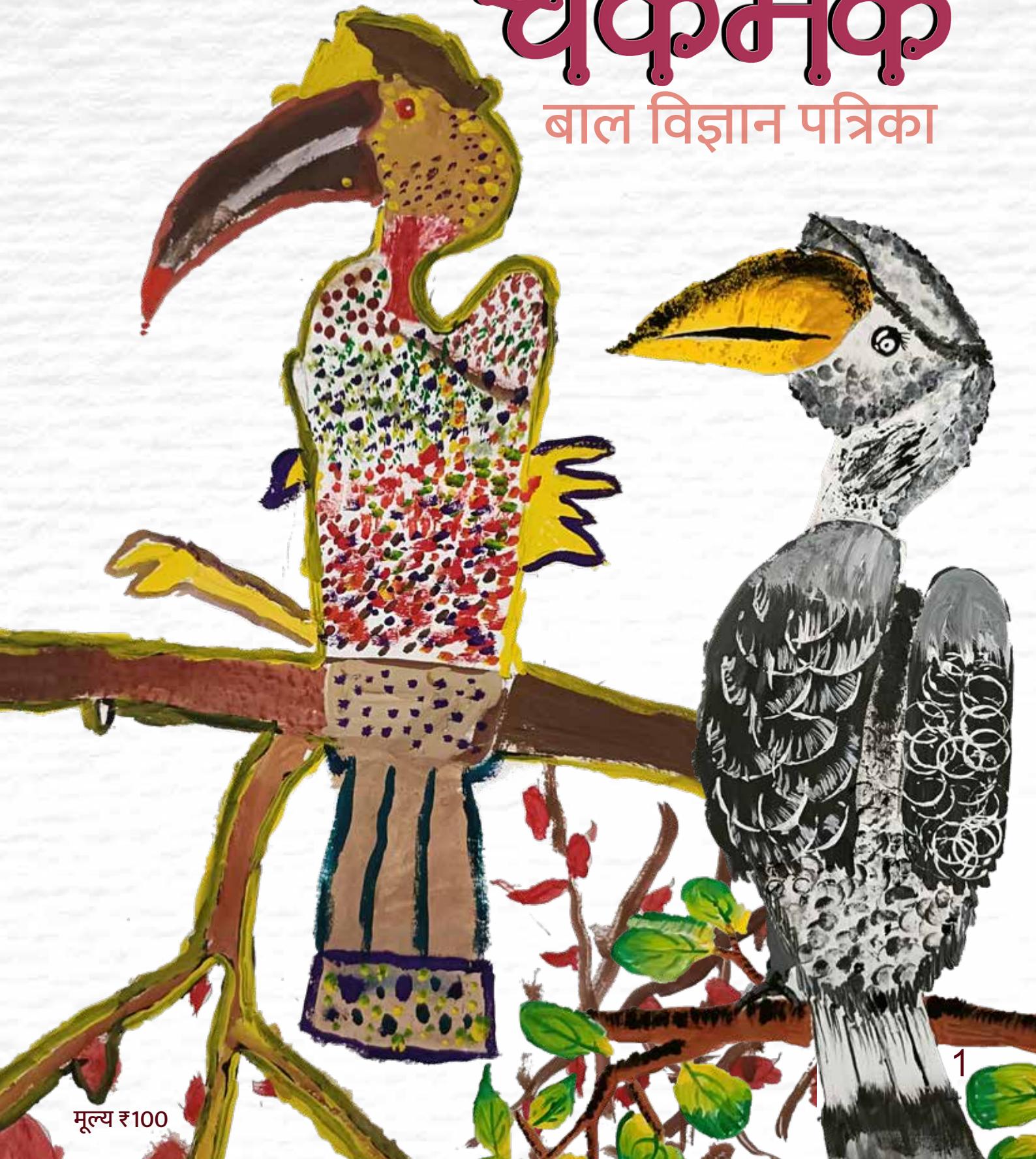


RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 88/प्रकाशन तिथि 1 नवम्बर 2025

अंक 470-71 ● नवम्बर-दिसम्बर 2025

# चक्रमंक

## बाल विज्ञान पत्रिका



मूल्य ₹100

प्रिय चकमक,

पूरे एक महीने बाद तुम आती हो।  
तुम्हें पढ़कर मज़ा बहुत आता है। एक  
उत्सुकता बनी रहती है कि इस महीने  
फिर कुछ नया मिलेगा। कभी कहानी,  
कभी अनुभव, तो कभी वैज्ञानिकता  
की झलक, कभी-कभी तो अनूठे चित्र।  
जिन्हें देखकर एक झटका लगता है  
कि हमारी कल्पनाशीलता को तुम  
जैसी पत्रिकाएँ कितना बढ़ावा देती हैं।

कभी-कभी तो यह भी उत्सुकता बनी  
रहती है कि इस बार मेरी रचना तुम्हारे  
सुन्दर पन्नों पर दिखेगी। कभी-कभी यह  
सोचना सच होता है, कभी नहीं। पर  
इससे बुरा नहीं लगता। पता है क्यों?  
क्योंकि मुझे वहाँ मेरे दोस्तों की रचनाएँ  
पढ़ने को मिलती हैं। और उन्हें पढ़कर  
अलग ही मज़ा आता है। मुझे लगता  
है ‘मेरा पन्ना’ तो बिलकुल मेरा ही है।  
मतलब हमारा। लिखें भी हम, पढ़ें भी  
हम। हर महीने तुम्हारे आने से बहुत  
खुशी मिलती है। बहुत अनोखी हो तुम।  
तुम में जो छपते हैं, वे सब भी तुम्हारी  
तरह ही अनूठे हैं। इस बार तो और  
ज्यादा इन्तजार रहेगा क्योंकि इस बार  
तो विशेषांक आ रहा है।

तुम्हें पढ़ने वाली मित्र  
आकृति राज

आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

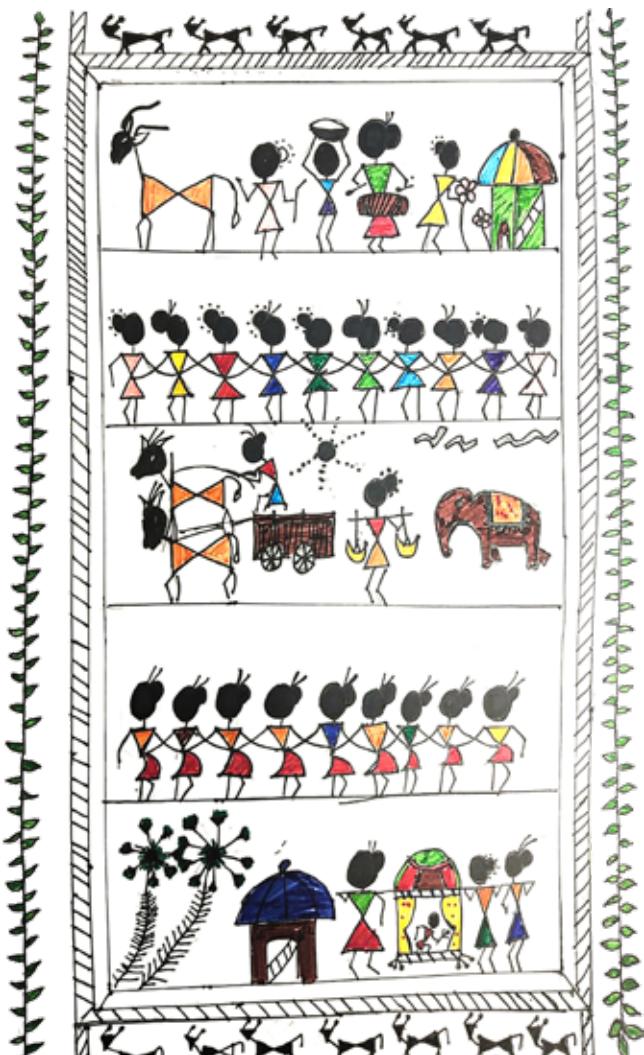
प्रिय सम्पादक चकमक,

मैंने सितम्बर की चकमक पढ़ी थी। उसमें  
अच्छे-अच्छे चित्र बने थे। मुझे उसमें सुडोकू,  
चित्रपहेली, क्यों-क्यों और कहानी ननकी व  
चोरू की दुनिया अच्छे लगे। चकमक हर वक्त  
मुझसे बातें करती है। मैं चकमक की कविता  
पढ़ती हूँ। काश मैं एक कविता भेज पाती।

भूलभुलैया मुझे खुद करना पसन्द है। जब तुम  
मेरा मन खुश कर देती हो तो आज मैंने सोचा  
कि तुमको भी खुश कर दूँ। तुम बहुत मेहनती  
हो, चकमक।

यक्षिका

दूसरी, बढ़ीपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड



चित्र: आयशा, चौथी, दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल, वजीराबाद, दिल्ली

# चक्रमक पैना

प्रिय दोस्तों,

हम पाठकों से जब पूछते हैं कि चक्रमक के कौन-से पञ्चे वे पहले पढ़ते हैं तो अक्सर जवाब मिलता है — मेरा पन्ना। जितना मजा तुम्हें इन पञ्चों को देखने-पढ़ने में आता है, शायद उतना ही आनन्द हमें भी इनकी तैयारी में मिलता है। तुम्हारी रचनाओं को देखते समय, पढ़ते समय तुम सब हमारे दिलों में रहते हो। हम सोचते हैं कहाँ होगे तुम, कैसे होगे, तुम्हारा घर कैसा होगा, कहाँ बैठकर तुमने ये बातें सोची होंगी, लिखी होंगी, उकेरी होंगी... हम तुम सबसे मिलकर ये बातें तो कर नहीं पाते हैं। लेकिन एक तरह से इन पञ्चों के ज़रिए हम तुम सबसे मिल ही रहे होते हैं, और इस मुलाकात से हमें बहुत खुशी मिलती है।

हर साल की तरह यह अंक सिर्फ तुम्हारी रचनाओं और कुछ मजेदार पहेलियों से बना है। लेकिन इस अंक में कुछ चीजें अलग हैं। इस बार तुमने चित्रों से कहीं ज्यादा शब्दों में अपने मन की बात कही। हमारी तरफ से अलग चीज़ यह है कि अंक के डिजाइन में बदलाव किए गए हैं। तुम्हें ये बदलाव दिखेंगे — हमें जरूर बताना कि तुम्हें पञ्चे कैसे दिख रहे हैं।

हर बार की तरह इस साल भी तुम्हारे विचारों, कल्पनाओं व संवेदनाओं ने इस अंक को खास बनाया है और हमें चक्रित किया है। इसके लिए तुम सबको मुबारकबाद। अंक को पढ़कर-देखकर हमें फोन, व्हॉट्सऐप, ईमेल या फिर चिट्ठी लिखकर बताना ज़रूर तुम्हें चक्रमक कैसे लगी। हमें यकीन है कि आगे भी तुम अपनी कल्पनाओं व अनुभवों से हमें चक्रित करते रहोगे।

ठेर सारा प्यार,

तुम्हारी चक्रमक

आवरण चित्र: ओम गायकवाड और मिताली महामुनि, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

## सम्पादक

विनता विश्वनाथन

## सह सम्पादक

कविता तिवारी

## विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

उमा सुधीर

## डिजाइन

कनक शशि अनिल

## सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

## वितरण

झानक राम साहू

एक प्रति : ₹100

## सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

# इस अंक के रचनाकार

1. आवरण चित्रः ओम गायकवाड और मिताली महामुनि, फलटण, महाराष्ट्र 1
2. चित्रः आयशा, वज्रीराबाद, दिल्ली 2
3. चित्रः सिया, मण्डी, हिमाचल प्रदेश 3
4. तेजस्वनी देवांगन, बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़ 6
5. अनुजा मिंज, रिया दास, जयनन्दन सारथी, कुमारी रितिका, दुर्गा व शान्ति दास, परसा, छत्तीसगढ़ 6
6. आर्य पटेल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश 7
7. चित्रा जोशी, नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड 8
8. चित्रः जुग्नू, उज्जैन, मध्य प्रदेश 8
9. अरहम, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश 8
10. चारिका, बाड़मेर, राजस्थान 9
11. यक्षिका, देहरादून, उत्तराखण्ड 9
12. चित्रः अरहम, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश 9
13. शिवांश कास्दे, केसला, मध्य प्रदेश 9
14. भावना यदुवंशी, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश 10
15. मुख्यार, धर्मपुर, उत्तर प्रदेश 10
16. सीरत कौर, नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड 11
17. शशांक मिश्रा, दरभंगा, बिहार 12
18. दनिका तिवारी, सितारगंज, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड 13
19. तेजस, करनाल, हरयाणा 13
20. चित्रः नूर खान, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड 14
21. चित्रः हसन, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड 14
22. मुस्कान गुलाब शेख, चन्दपुर, महाराष्ट्र 15
23. चित्रः अदिति तिवारी, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश 15
24. चित्रः मुस्कान गुलाब शेख, चन्दपुर, महाराष्ट्र 16
25. आध्या सिंह, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश 16
26. रुही, जोग्यूडा, नैनीताल, उत्तराखण्ड 16
27. यशवी, चंगलपेट, तमिलनाडु 17
28. आस्तिक उड़िके, बीजाडाणी, मण्डला, मध्य प्रदेश 17
29. ई हन्तिता, चंगलपेट, तमिलनाडु 17
30. कशिश, मानवी, नैना व देवराज, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश 18
31. संगम, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश 20
32. पीयूष मलिक, सितारगंज, ऊधमसिंह नगर 20
33. विकास, जयपुर, राजस्थान 21
34. हीना ठाकुर, मण्डी, हिमाचल प्रदेश 21
35. अयान चन्द्र, नोएडा, उत्तर प्रदेश 22
36. चित्रः अर्जुन चढ़ा, नोएडा, उत्तर प्रदेश 22
37. सावर्णिका मनु, पंतनगर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड 23
38. चित्रः अनिष्क जैन, नोएडा, उत्तर प्रदेश 23
39. मालिनी, भोपाल, मध्य प्रदेश 24
40. चित्रः अनीता वर्मा, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश 26
41. चित्रः अर्विंश, टोक, राजस्थान 27
42. योग्य आनन्द, नोएडा, उत्तर प्रदेश 28
43. पीहू कुमारी, पटना, बिहार 29
44. चित्रः कबीर चश्मावाला, वडोदरा, गुजरात 30
45. राधिका यादव, सागर, मध्य प्रदेश 31

46. श्रीजा बाबोड़े, फलटण, महाराष्ट्र 31
47. चित्रः अमांडा मोयोग, लोहित, अरुणाचल प्रदेश 31
48. चित्रः करण, मुम्बई, महाराष्ट्र 32
49. उत्कर्ष यादव, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश 32
50. आरणा वसान, नोएडा, उत्तर प्रदेश 33
51. चित्रः झरना, नैनीताल, उत्तराखण्ड 33
52. चित्रः प्रज्ञा, जयपुर, राजस्थान 36
53. तेजस्विनी दुबे, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश 36
54. प्रीति लकड़ा, दिल्ली 36
55. सना माकिन, नोएडा, उत्तर प्रदेश 37
56. चित्रः प्रिया कुमारी, सिवान, बिहार 37
57. सोनू साहू सिंह, नगांव, असम 38
58. चित्रः आयुष्मान भट्ट, देहरादून, उत्तराखण्ड 41
59. अंजीत रोकया, बैंगलुरु, कर्नाटका 41
60. गुनगुन, बाड़मेर, राजस्थान 42
61. लक्ष्मीना, नगांव, असम 43
62. प्रिसी यादव, सागर, मध्य प्रदेश 44
63. मोहम्मद इकबाल, दरभंगा, बिहार 44
64. श्रीधी राज, चंगलपेट, तमिलनाडु 44
65. ईशा शर्मा, नैनीताल, उत्तराखण्ड 45
66. रुबी बानो, सीतापुर, उत्तर प्रदेश 45
67. शिवांगी नेलवाल, रानीखेत, उत्तराखण्ड 48
68. पीहू कुमारी, पटना, बिहार 48
69. सावर्णिका मनु, पंतनगर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड 49
70. चित्रः प्रकाश डावर, खरगोन, मध्य प्रदेश 49
71. काजल देवी, मलसराय, सीतापुर, उत्तर प्रदेश 50
72. सुष्णेन्द्र कुमार, मलसराय, सीतापुर, उत्तर प्रदेश 51
73. चित्रः शांभवी, वडोदरा, गुजरात 51
74. मानवी रावत, दिनेश्पुर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड 52
75. चित्रः सुरगी, बैंगलुरु, कर्नाटका 52
76. क्रान्ति, धर्मपुर, उत्तराखण्ड 52
77. अमरजीत, धर्मपुर, उत्तराखण्ड 53
78. चित्रः सृष्टि रावत, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड 53
79. चित्रः दिया असवाल, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड 53
80. भारत, मण्डी, हिमाचल प्रदेश 54
81. ज्योति मण्डल, दिल्ली 54
82. चित्रः निहार वासुदेव हलबे, चंगलपेट, तमिलनाडु 54
83. प्रिसी यादव, सागर, मध्य प्रदेश 55
84. विरेन, करनाल, हरयाणा 55
85. काजल, जयपुर, राजस्थान 56
86. काव्या यादव, दिल्ली 56
87. श्वेता बलसूनी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड 56
88. स्मिता उड़िके, केसला, मध्य प्रदेश 57
89. दिया भट्ट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड 57
90. दिव्या, बाड़मेर, राजस्थान 57

91. कल्पना रजक, बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़	60
92. छाया अहिरवार, केसला, मध्य प्रदेश	61
93. प्रज्ञा, जयपुर, राजस्थान	61
94. प्रथम सिंह पटियाला, चंगलपेट, तमिलनाडु	61
95. चित्र: तेजस, करनाल, हरयाणा	62
96. चित्र: जियांश देसाई, वडोदरा, गुजरात	63
97. सनंदा एल. और निकिता एस. चंगलपेट, तमिलनाडु	64
98. विकास कुमार, केसला, मध्य प्रदेश	65
99. मानवी, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश	65
100. नवजोत कौर, नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड	65
101. हर्षिता कहार, केसला, मध्य प्रदेश	65
102. सेहज त्यागी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	66
103. शोएब एवं मुख्तार, धर्मपुर, उत्तर प्रदेश	66
104. कर्हैया कुमरे व विवेक कुमरे, केसला, मध्य प्रदेश	67
105. महफूज खान, भोपाल, मध्य प्रदेश	67
106. दीपा, सोनीपत, हरयाणा	67
107. यश, बाड़मेर, राजस्थान	68
108. शांभवी, वडोदरा, गुजरात	68
109. दुर्गा, परसा, छत्तीसगढ़	68
110. प्रज्ञा शहा, फलटण, महाराष्ट्र	69
111. राधिका यादव, सागर, मध्य प्रदेश	69
112. भूमिका राना, नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर	69
113. सत्यम कुमार, पटना, बिहार	70
114. मोहिनी शर्मा, केसला, मध्य प्रदेश	72
115. वर्षा, मण्डी, हिमाचल प्रदेश	73
116. प्राजक्ता काकड़े, फलटण, महाराष्ट्र	73
117. सुमन, कानपुर, उत्तर प्रदेश	73
118. नगमा, दिल्ली	76
119. स्नेहा कलमे, केसला, मध्य प्रदेश	76
120. राखी लविस्कर, केसला, मध्य प्रदेश	76
121. चित्र: सुमन, कानपुर, उत्तर प्रदेश	76
122. अहान जैन, दिल्ली	77
123. पलक, मण्डी, हिमाचल प्रदेश	77
124. चित्र: प्रथम सिंह पटियाला, चंगलपेट, तमिलनाडु	77
125. चित्र: नैवध्य थपलियाल, देहरादून, उत्तराखण्ड	78
126. चित्र: रोहित, बाड़मेर, राजस्थान	79
127. चित्र: मंजूर अली, बाड़मेर, राजस्थान	79
128. चित्र: नन्दिनी धुमाल, फलटण, महाराष्ट्र	80
129. प्रकाश ठाकुर, नगांव, असम	81
130. समर्थ यादव, मण्डला, मध्य प्रदेश	81
131. ममता, बाड़मेर, राजस्थान	82
132. विवेक कुमरे व कर्हैया कुमरे, केसला, मध्य प्रदेश	82
133. अमरजीत, धर्मपुर, उत्तर प्रदेश	83
134. चित्र: अमरजीत, धर्मपुर, उत्तर प्रदेश	83
135. श्रेयांश राज, चेंगलपेट, तमिलनाडु	83
136. लक्ष्मी, जालौर, राजस्थान	86

## इस बार

मैंने खत लिखा	2, 18, 52
शशा... ये सीक्रेट है	6
ख्वाबों में	8, 36
मेरे घर का सबसे	
पुराना सदस्य	10, 20, 44, 82
भूलभूलैया	14, 78
बैलपोला	15
चिड़िया क्या सोचती होगी	16
छोटी गिलहरी हमसे डरती है	16
चमगाढ़ की मौत	17
हमारे गाँव का रास्ता	17
साहसी शिक्षिका	17
क्या मैंच था वो	22, 54
अन्तर ढूँढो	26, 62
फिल्मी बातें	28, 70
पहली-पहली बार	30, 48
चित्रपहेली	34, 74
अम्बेडकर जयन्ती पर एक डिस्प्ले	38
नवमी में पूरी-हलवा	41
किताबें कुछ कहती हैं...	42
माथापच्ची	46, 58
वो मेरा हीरो	56
मन की पसन्दीदा जगह	60, 72, 76
तुम भी बनाओ	64
क्यों-क्यों	66
झण्डू बाम	81
भेदभाव और घमण्ड	81
मेरा बचपन	86



१२३... चाहो

मूँह गहरायी थी हँडी में जानी के घट बापी पो छुप्पी छला की थुमा ने फूलाकू पलवा रुदी रखा था क्वार भूमा जाए तो मैं उफक ऊपर हुसा की छुपा थी वे भूमि किसी की नहीं बात ही थी,

अनुजा मिंज  
८५९

चलालगाल लेखन  
कई लोक

मुहाला  
चाहो

देश के लोगों ले भूमि  
तभी इक्के बाटा उधर  
उठके बढ़ा करके  
आज देह लगो आया  
देखने में ग्राम आया  
डांडे छोड़ दे पहुँचे

तुम्हारा कोई ऐसा सीक्रेट नो तुम साझा करना चाहो।

उत्तर → इम एक समय घूमने के लिए गए थे। और माता-पिता को नहीं बताये थे इम सब सदैलीया उस समय हो थे। और इम सब सदैलीयाँ श्रीरघोष मे सती मंदिर भा रहे थे। और ये सड़क पाड़ करना परा दूर चलता परा उसके बाद इम सती मंदिर वहाँ गये। और इमने प्रगतान का दरखात श्री कीवा और इम वापस घर लौ रहे थे तब कुले भ्रौकने लगे और घर डर गये जैसे तैसे कर के इम बहा से निकले तो तोकिन बासिसा शुरू हो गयी किर इम दोडने लगे और इम सब सदैलीया एक-एक करके घर चले गये।



नाम → दिया कारा  
जाहा → दूरी कारा

रचनात्मक जेवल  
कुमारी कोई सीक्रेट थो तुम  
जब इम दूड़ रुक थोते हैं, तो  
वाहं कहे हो। और रुक लौ तो  
अकाहि दूर वही थी तो मैं दीसू  
दुमि यथि पिंगाह किट लौ तो  
मैं क्ल लिं बालाह ग्राम तो  
फिट ऊहां भीमासु सिलहि तो  
सिराहि भारत न मैं लाग उपि-  
फिट रुक लिं मैं घट मैं बिना  
फिट झूक रेल दीवां लगा

## ਜੇਥਾ ਸਿੰਕ੍ਰੈਟ

मेरे पास एक सीक्रेट हैं जो भी अपनी  
बुटन के ऊपर जैसे कि मेरी बुटन हमेशा पापा  
से मुझे जांत खिलवाती हैं तो मैंने एक योजना  
सीधी की हैं अपनी बुटन से बदला ज़रूर  
लूगी तो मैंने पहले पापा के कपड़े पर दाग  
लगा दिया जब पापा उसे पहनने और  
उटोने देखा तब बौत की ये हाग मिसने  
लगाया हैं तो मैंने बौत आर्नि ने लेगाया  
हैं तो पापा उसे डार्ने लगे फिर मैंने  
पापा के जूते मेरे हाथ लगा दिया फिर  
पापा जैसे जूते पहनने लगे तो उटोने कुटा  
अब यह लंग किसने लगाया हैं? तो मैंने  
का अर्नि ने तो फिर उसे जांते साध  
मेरे मार भी पड़ी। और मैंने अपनी  
बुटन से क्ये नहीं बताया कि मैंने  
किया है।



**Signature**

DATE:  

ਅਕਾਦਮੀ ਸਿੱਖਿਆ ਲੋਡ ਕਾਨੂੰਨ ਵਕਤਾ - ਚੰਗਾ  
ਮੈਂ ਬੁਧਨਾਨ ਦੀ ਹਾਂਦੀ

में दुर्घटना की वजह से अपने लोगों को बचाने के लिए जैसे उनका विचार होता है।

मैं कुणर तो इस लिए बाबी रही थी मैं यारीनकी  
जी नहीं थी और उसे बहुत ज्यादा नहीं रही थी।  
आरे इसी भी मैं बाबी बाबी तो अब जानी थी।  
ओर मैं अभी ले बैल इसी उल्लंघन में समझना  
मीठे में दबुल में ग्री खड़ी तो इस प्रेरणी उसे गठी मानें  
गए तो फैली नहीं खोली आप सुखाए घोबा लड़कू  
खारी, कु गोरी विहय आप ही बाबाके थी उल्लंघनकी  
रक्षणी गोरी,

नम-कुर्मा  
ठाठा-२ ठी(A)  
शा. श-मा, वाला कुर्मा

১০০

## पारी रितिका, दुर्गा व शान्ति ल

ନାମ ଶ୍ରୀମତୀ ମା  
ଜାତ୍ଯା - ୧ (A)  
ଶଳେ ନେ ୩୩  
ଦୀର୍ଘ ମା ଶୋ

# ख्वाबों में

## भूत

चित्रा जोशी

सातवीं, नानकमत्ता  
पब्लिक स्कूल, नानकमत्ता  
ऋधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

मैं थी अपने घर में। मम्मी-पापा दूसरे कमरे में सो रहे थे। मैं दूसरे कमरे में थी। मुझे नींद नहीं आ रही थी। और मैंने देखा मेरे आगे एक भूत खड़ा है। तो मैं बहुत डर गई। मुझे हनुमान चालीसा नहीं आती, लेकिन उस वक्त मैंने पता नहीं कि तनी बार जैसे-तैसे करके हनुमान चालीसा पढ़ी। एकदम टूटी-फूटी। मुझे उस रात नींद ही नहीं आ रही थी। फिर पता नहीं कैसे मैंने भूत को अपनी बातों में फँसाया और रात भर उससे बातें करती रही। उसने मुझे अपनी कुछ बातें बताई और मैंने भी। और पता ही नहीं चला कि बातें करते-करते कब सुबह हो गई। फिर मैं स्कूल चली गई और ये सारी बातें अपनी दोस्त शिखा और कोमल को बताई।



चित्र: जुग्नू

## नकली भूत

जुग्नू

आठ साल, अवंती स्कूल  
ऑफ एक्सीलेंस, उज्जैन  
मध्य प्रदेश



## डरावना सपना

अरहम

तीसरी 'ब', जिंगल बेल स्कूल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

मुझे एक बार बहुत ही डरावना सपना आया। क्या आप सोच सकते हैं कि कैसा सपना था? सपना बहुत ही डरावना था। मैं बेड पर से गिर गया था। अरे! मैं तो मज़ाक कर रहा था। मैंने सपना देखा कि एक बहुत बड़ा भूत मुझे खाने के लिए तैयार था। वो मुझे अपने हाथ में लेकर खाने ही वाला था कि मेरी मम्मी बोलीं, “बेटा उठो, स्कूल जाना है।” क्या आपको भी कोई डरावना सपना आया है?



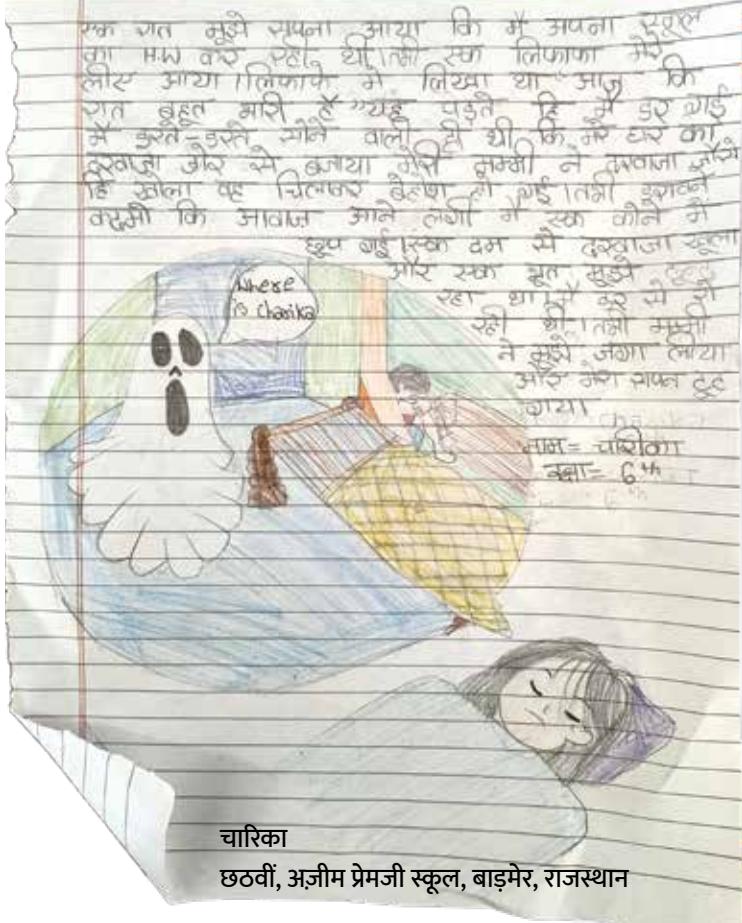
मुझे सपना आया कि हमारे घर में एक भूत आ गया है। और सब वहाँ पर बेहोश हो गए हैं। मैं भी वहाँ पर थी। मुझे लगा कि ये एक नकली भूत है तो मैं उसके पास गई और मैंने उसका मुखौटा खींचा। और वो वहाँ बेहोश हो गया।



# रात बहुत भारी है

Mansa

Date \_\_\_\_\_  
Page \_\_\_\_\_



## मैंने सपना देखा

यक्षिका

दूसरी, बद्धीपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड

एक रात को मैंने सपना देखा कि मैं दूर तक उड़ रही हूँ। डाल-डाल पर बैठ रही हूँ। पेड़ों से बातें कर रही हूँ। एक सुबह मैं एक मोरनी से मिली। वो सच में सुन्दर थी। उसके रंग पंखों पर नाच रहे थे। मैंने उससे दोस्ती कर ली। हम हमेशा साथ रहेंगे। जो भी मुसीबत में हो उसकी मदद करेंगे।

मंसा

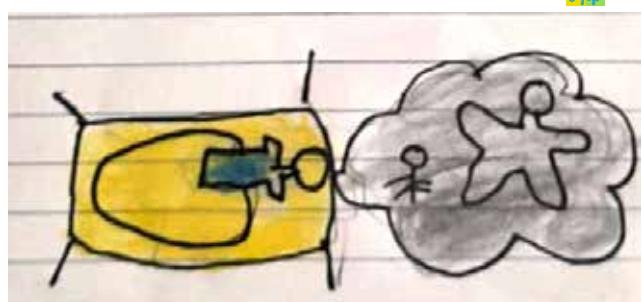
## चिड़िया और मछली

शिवांश कास्दे

छठवीं, शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला  
जामुनडोल, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

हमारे गाँव की जो जगह मुझे बहुत अच्छी लगती है वो है नदी। नदी में जाकर हमें बहुत अच्छा लगता है। नदी के पास कई सारी चिड़िया आती रहती हैं और मछली को नदी से पकड़कर ले जाती हैं। एक दिन हमें नदी के किनारे पर एक मछली मिली। वह पानी के बाहर थी। हमने उस मछली को नदी में डाल दिया। लेकिन वह फिर बाहर आ गई। ऐसा लगा कि मछली हमारी दोस्त बनना चाह रही थी। हमने उसे फिर से नदी में डाल दिया। फिर वह नहीं आई क्योंकि जैसे ही नदी में डाला एक चिड़िया आई और उसे लेकर चली गई। लेकिन उस चिड़िया ने हमें उदास देखा तो उस मछली को वापिस छोड़ दिया। और फिर पापा ने मुझे जगा दिया।

मंसा



चित्र: अरहम, तीसरी 'ब', जिंगल बेल स्कूल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

# मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य



## पाई-पाई

भावना यदुवंशी

पाँचवीं, डेफोडिल, नर्मदा वैली

इंस्ट्रनेशनल स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

इसे पाई कहा जाता है।  
यह गेहूँ नापने के काम  
आती है। पहले लोग एक-  
दूसरे को पैसे नहीं देते थे,  
बल्कि इससे गेहूँ नापकर  
देते थे। और अभी भी कुछ  
लोग इससे गेहूँ नापकर  
देते हैं।

## दुई पाटन के बीच में

मुख्तार  
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय  
धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश



मेरे घर में एक चक्की है। जब मेरे दादा के परदादा थे तब से वो चक्की हमारे घर में है। वो अभी भी इस्तेमाल होती है। उसमें मटर और मसूर की दाल भी पीसी जाती है। उसमें चावल भी पीसा जाता है। वह पत्थर की बनी है। इस्तेमाल होते-होते उसके पाट चिकने हो जाते हैं तो चक्की से ठीक से पिसाई नहीं होती। तब पत्थरकट को बुलाते हैं। वो छैनी और छोटी हथौड़ी से धीरे-धीरे चोट करके चक्की के पाट को छीन देता है।





## रिश्तों की गर्माहट

सीरत कौर  
सातवीं, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, नानकमत्ता  
ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

जब मैं छोटी थी, तब हमारे घर में एक चूल्हा था। यह हमारे घर की सबसे पुरानी चीज़ थी और मेरे लिए सबसे खास और रोमांचक यादों का पिटारा भी। वह चूल्हा मेरे दिल के बहुत करीब था, क्योंकि जब भी मम्मी सुबह-सुबह पकवान बनाती थीं, तो उसकी खुशबू दूर-दूर तक फैल जाती थी और घर का वातावरण एकदम जीवन्त हो जाता था।

सर्दियों के दिनों में चूल्हे की गर्माहट पूरे परिवार को एक जगह इकट्ठा कर देती थी। सभी लोग चूल्हे के पास बैठते थे, अपना दुख-सुख साझा करते थे और एक-दूसरे के करीब आते थे। बच्चे और बूढ़े मिलकर कहानियाँ और कविताएँ सुनते थे। उस समय घर में खुशी, अपनापन और रिश्तों की मिठास भरी रहती थी।

लेकिन अब समय बदल गया है। चूल्हे की जगह गैस सिलेंडर ने ले ली है। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी के पास मोबाइल फोन आ गए हैं। अब न कोई चूल्हे के पास बैठता है और न ही कोई अपना दुख-सुख साझा कर पाता है। हर कोई अपने-अपने मोबाइल में ही व्यस्त रहता है।

पुराने समय का चूल्हा सिर्फ़ खाना पकाने का साधन नहीं था, बल्कि वह परिवार को जोड़ने वाला केन्द्र था। आज भले ही सुविधा बढ़ गई हो, लेकिन रिश्तों में वह अपनापन और मेल-जोल कहीं खो-सा गया है।

# मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य

## मिट्टी की कोठी

शशांक मिश्रा  
नौरीं, किलकारी बिहार बाल  
भवन, दरभंगा, बिहार

पुरानी चीजें मुझे हमेशा से आकर्षित करती हैं और मैं उन्हें जानने की हमेशा कोशिश करता हूँ। इसके लिए अक्सर मैं अपने दादा और दादीजी के पास बैठता हूँ और उनसे उनके समय की बातें करता हूँ। मेरे घर के कोने में मिट्टी का एक

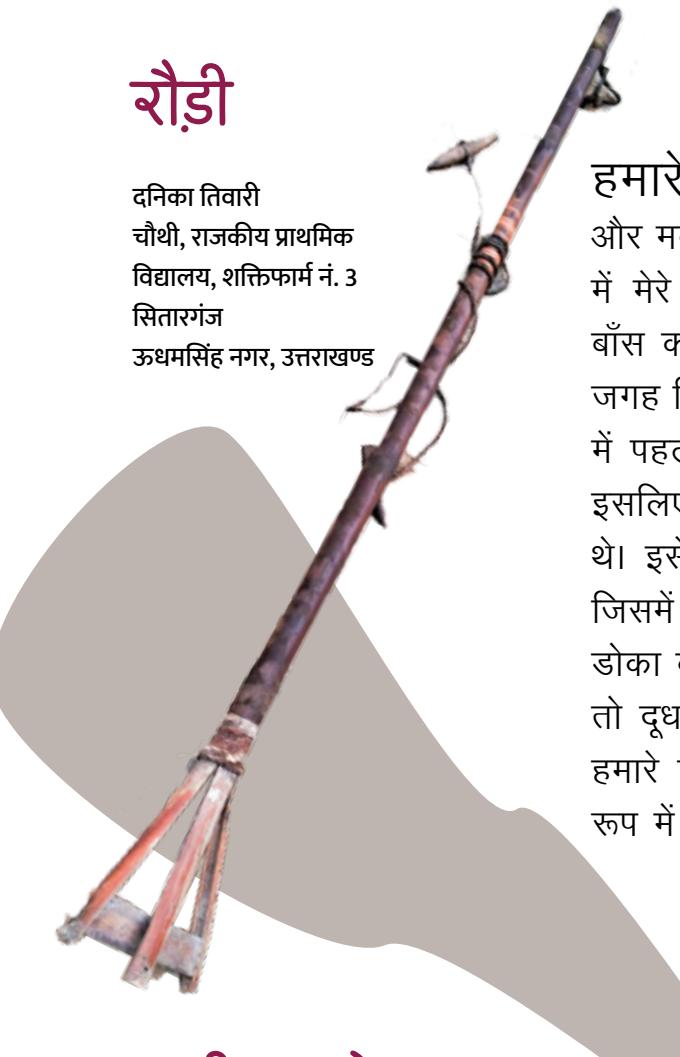
झम जैसा है, सुन्दर-सा डिजाइन किया हुआ। मछली और कई दूसरी तरह की आकृतियाँ बनी थीं उसमें। और ढक्कन भी लगा हुआ था। मिट्टी से ही उसकी पूरी संरचना बनी हुई थी।

मैंने दादी से पूछा, “दादी ये क्या है?” दादी ने कहा, “जैसे अभी के समय में अन्न भण्डारण के लिए झम का उपयोग होता है वैसे ही हमारे समय में मिट्टी की कोठी का उपयोग होता था। बहुत समय तक इसमें अनाज सुरक्षित रहता था। समय-समय पर लोग इससे अनाज निकालते थे और फिर मिट्टी से बन्द कर देते थे।” फिर वहीं रखे एक सन्दूक पर मेरी नज़र गई तो दादाजी से मैंने पूछा, “यह कैसा बक्सा है और इसमें क्या रखा है?” दादाजी ने बताया, “यह हमारे बाबूजी ने बनवाया था। इसमें कुछ पुराने पीतल के बर्तन और कुछ औज़ार भी रखे हुए हैं।” मुझे देखने का बड़ा मन किया और मैंने दादाजी से सन्दूक खोलकर दिखाने को कहा। उसे देखकर मुझे बहुत ही अच्छा लगा और मैंने भी प्रण किया कि मैं भी अपने पूर्वजों की धरोहर को संजोकर रखूँगा।



## रौड़ी

दनिका तिवारी  
चौथी, राजकीय प्राथमिक  
विद्यालय, शक्तिफार्म नं. 3  
सितारगंज  
ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड



हमारे घर में एक रौड़ी है। यह लरसी, मट्ठा और मक्खन बनाने के काम आती थी। सन 1992 में मेरे दादू इस रौड़ी को लाए थे। यह रौड़ी बाँस की डण्डियों से बनती थी। पर अब इसकी जगह फिरकी और मिक्सी ने ले ली है। हमारे घर में पहले तीन गाँँ थीं। तो दूध बहुत होता था। इसलिए इसे दादू हमारे पहाड़ के घर से लाए थे। इसे खम्भे पर बाँधकर इस्तेमाल करते थे। जिसमें दूध मथने के लिए डाला जाता था उसे डोका कहते थे। पर अब हमारे पास गाय नहीं हैं तो दूध भी ज्यादा नहीं होता। इसलिए अब यह हमारे घर में पुराने ज़माने की एक निशानी के रूप में रखी है।

संकेत

## दादी का बेल्ला

तेजस  
सातवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल  
पाड़ा, करनाल, हरयाणा

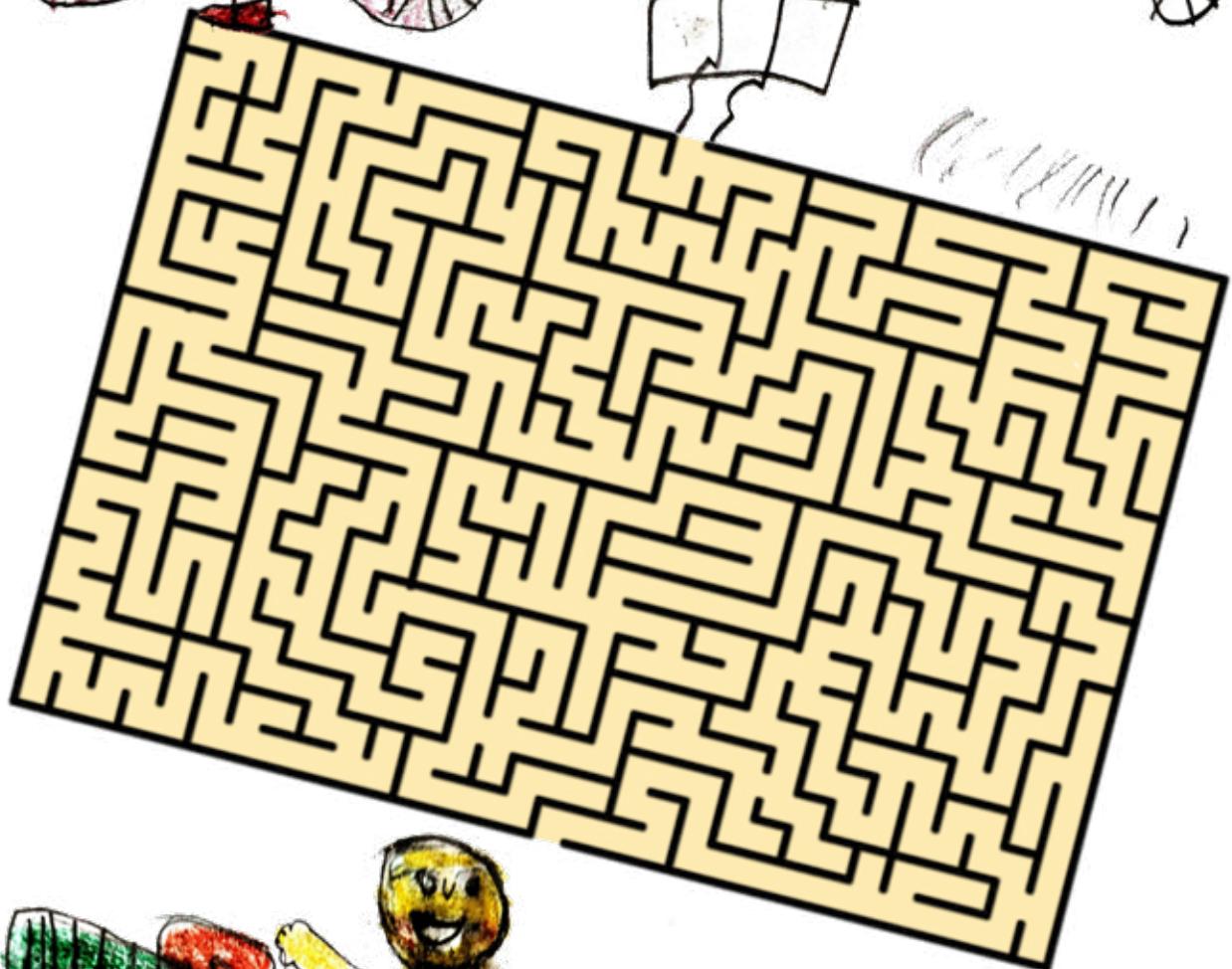
यह हमारी दादी के ज़माने का है। इसे हमारी मातृभाषा में बेल्ला कहते हैं। इसमें मेरी दादी बचपन में खाना खाया करती थीं। यह पीतल से बना है। वैसे तो यह बेल्ला मेरी दादी का है, पर इसे मैं रखता हूँ।



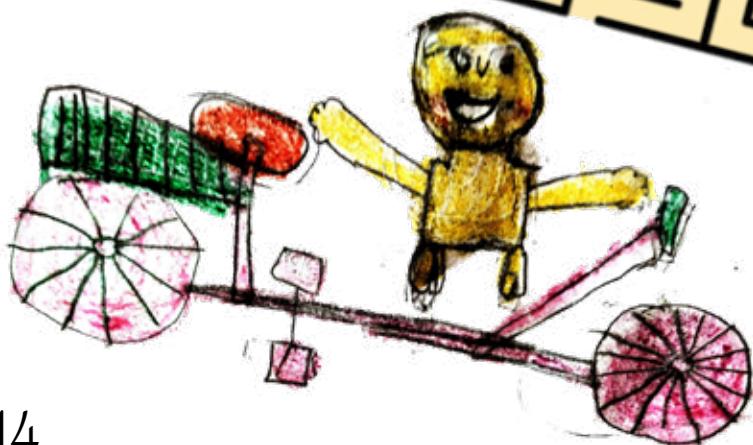
संकेत



चित्र: नूर खान,  
पहली, राजकीय  
प्राथमिक विद्यालय,  
महाराया, रुद्रपुर,  
ऊधमसिंह नगर,  
उत्तराखण्ड



चित्र: हसन, दूसरी,  
राजकीय प्राथमिक  
विद्यालय, महाराया,  
रुद्रपुर, ऊधमसिंह  
नगर, उत्तराखण्ड



## बैलपोला

बैल को बैलपोला के दिन पूजा जाता है। इस दिन उसे नहला-धुलाकर सजाया जाता है। उससे इस दिन कोई काम नहीं करवाया जाता। उसे मन्दिर में ले जाते हैं, मीठा खिलाते हैं। उसे घर-घर धुमाते हैं। बस यही एक दिन उसे आराम मिलता है और प्यार मिलता है।

मैंने बैल से पूछा उसे कैसे लगता है ये सब, तो वो बोला कि वो बेहद दुखी है। उसे रोज़ बहुत काम करना पड़ता है। खाना भी कम ही मिलता है। उसे मार भी पड़ती है। गालियाँ भी सुननी पड़ती हैं। कमज़ोर होने पर भी उससे काम करवाते हैं। काम करने के लायक न होने की वजह से उसके एक दोस्त को बाजार में बेच दिया गया। उसे दुख हुआ। पर किसी ने उसके आँसू नहीं देखे।

उसने यह भी कहा कि वो थक जाता है, पर रुक नहीं सकता। रुक गया तो डण्डे पड़ते हैं। कभी-कभी बोझ उठाते हुए वो इतना थक जाता है कि चल नहीं पाता और बैठ जाता है। तब उसे बहुत मार खानी पड़ती है। जब कभी बैलगाड़ी कीचड़ में फँस जाती है, तब उसे बहुत जोर लगाना पड़ता है। वो पूरी ताकत लगाता है, थक जाता है, पर रुकता नहीं है। उसकी जिन्दगी सिर्फ काम करने में जाती है। उसे कोई प्यार, सम्मान नहीं मिलता और कोई उसकी सेवा नहीं करता।

मैं ये सब सुनकर दुखी हो गई। सोचने लगी क्यों इन्सान जानवरों से इतना काम करवाते हैं? क्यों उसकी जान को जान नहीं समझते? और उसके दर्द को नहीं समझते?

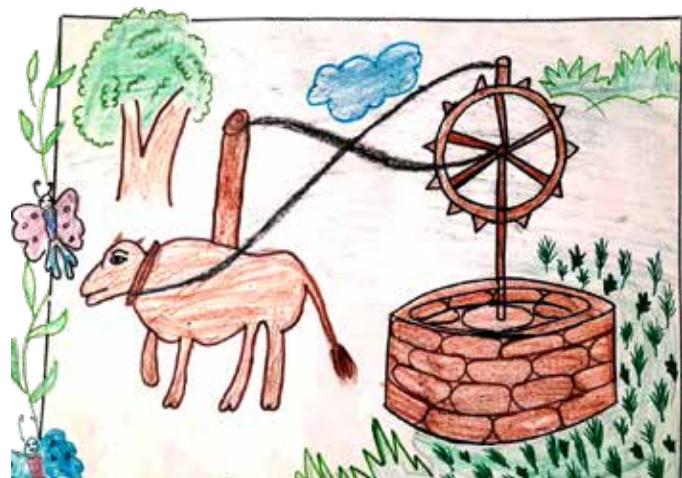
उस रात मैंने मीठा खाना नहीं खाया।

मुस्कान गुलाब शेख  
छठवीं, ज़िला परिषद स्कूल  
खुटाला, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र



चित्र: मुस्कान गुलाब शेख

चित्र: अदिति तिवारी, तीसरी 'स', जिंगल बेल स्कूल, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश



# चिड़िया क्या सोचती होगी

रुही

पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय  
जोग्यूड़ा, नैनीताल, उत्तराखण्ड



चिड़िया क्या सोचती होगी  
इन्सान अच्छे हैं  
चावल मिले खुश होगी  
दुनिया में अच्छे लोग हों तो हमें चावल मिल सकते हैं  
मैं भी इन्सान को उड़ा पाती  
चिड़िया सोचती होगी इन्सान मेहनत करके देते हैं

चित्र: धीरज अहिरवार, आठवीं,  
लाइब्रेरी एकलब्य फाउंडेशन,  
रम्पापुरम, मध्य प्रदेश



## छोटी गिलहरी हमसे डरती है

आध्या सिंह  
जूनियर केजी  
किड्जी स्कॉलर वर्ल्ड  
बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

छोटी गिलहरी हमसे डरती है क्योंकि  
उसको लगता है कि हम उसको मारने  
आ रहे हैं। बड़ी गिलहरी हमसे नहीं  
डरती क्योंकि वो हमारे नाखून चुभा  
सकती है। मैं बन्दर से डरती हूँ क्योंकि  
वो हमारे पैर में काट सकता है।



## चमगाड़ की मौत

यशवी  
सातवीं, रमणा विद्यालय  
महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी  
चंगलपेट, तमिलनाडु

एक बार की बात है। जब मैं छोटी-सी थी तो हम पुराने घर में रहते थे। एक बार हमारी छत पर गेट खुला छोड़ दिया किसी ने, और किसी को भी नहीं पता था। उस रात एक चमगाड़ छत पर से अन्दर नीचे की ओर आया और पंखे से टकरा गया। इस वजह से वह ज्यादा धायल हो गया और मर गया। जब तक मैं कुछ समझ पाती, वह मुझ पर गिर गया। मैं बहुत डर गई। उसके बाद मेरी दादीजी ने उसे उठाया और कहीं पर ले गई और उसे दफना दिया।



## हमारे गाँव का रास्ता

आस्तिक उड़िके  
पाँचवीं, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, पीपरडाही  
बीजाडाण्डी, मण्डला, मध्य प्रदेश



हमारे गाँव का रास्ता बहुत मज़ेदार है। सोहड़ और पीपरडाही के बीच में एक आम का पेड़ है। उसके नीचे इतना कीचड़ है कि जो भी वहाँ से जाता है वह कीचड़ में गिर जाता है। और जो भी व्यक्ति गुज़रते हैं रास्ते से वे सब हँसने लगते हैं।

## साहसी शिक्षिका

ई हन्तिता  
सातवीं, रमणा विद्यालय  
महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी  
चंगलपेट, तमिलनाडु

एक दिन हमारी शिक्षिका कक्षा में हमें बता रही थीं कि तुम सबको जीवन में साहसी बनना चाहिए। कुछ घण्टों बाद उनकी कुर्सी के पास एक छिपकली दिखाई दी। उसे देखते ही वे तुरन्त चिल्ला उठीं, “हे भगवान!” यह सुनकर पूरी कक्षा हँसी से लोटपोट हो गई। सभी सोच रहे थे कि वह हमें साहसी बनने के लिए कह रही थीं। मैं इस मज़ेदार घटना को कभी नहीं भूल सकती।





## सडाको और कागज के पक्षी

एलीनेर कोयर



यह सभी खत प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश की कक्षा चौथी के छात्र-छात्राओं ने सडाको और कागज के पक्षी पुस्तक पढ़ने के दौरान लिखे हैं।

प्रिय बच्चों,

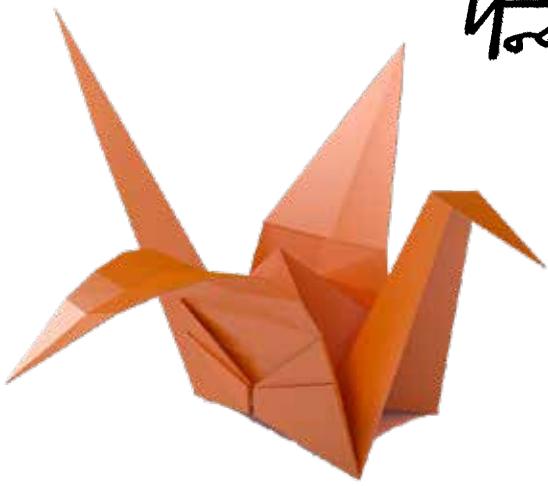
तुम कैसे हो? मुझे बहुत अच्छा लगा कि तुमने मेरे बारे में जाना। मेरी दोस्त चुजुको ने एक दिन मुझसे कहा कि यदि तुम एक हजार कागज की चिड़िया बनाओगी तो तुम ठीक हो जाओगी। मैंने बहुत चिड़िया बनाई। मुझे अच्छा लगा कि तुमने मेरे लिए 261 चिड़िया बनाई। प्यारे दोस्तों 6 अगस्त, 1945 को हमारे शहर हिरोशिमा में लिटिल बॉय नाम का परमाणु बम गिरा था। उससे जापान में बहुत जाने चली गई। पर अब मुझे लगता है कि 2025 में ऐसा नहीं होगा। अब विश्व में कहीं भी युद्ध नहीं होगा और देशों में शान्ति होगी। कहीं भी परमाणु बम नहीं गिरा होगा। और हरियाली ही हरियाली होगी। जैसी बीमारी जापान में हैं वैसी तुम्हारे यहाँ नहीं होगी। मुझे ब्लड कैंसर है। मुझे बहुत दुःख है कि मैं अब दौड़ में भाग नहीं ले पाऊँगी। मुझे परमाणु बम से ही कैंसर हुआ था। अगर तुमने मेरे लिए कुछ लिखा हो तो मुझे ज़रूर बताना। और हो सके तो मेरे जैसे बच्चों की सहायता करना ताकि वो सब अपना जीवन खुशी-खुशी जी सकें।

धन्यवाद  
तुम्हारी प्यारी दोस्त  
सडाको  
(यह पत्र सडाको की तरफ से कशिश ने लिखा है।)

प्रिय लेखक जी,

आप कैसे हो? मैं चाहती थी कि सडाको ठीक हो जाए इसलिए हमने बहुत सारे पक्षी भी बनाए थे। यदि सडाको यहाँ नहीं ठीक हो रही है तो दूसरे हॉस्पिटल में चली जाए। मुझे यह जानकर दुख हुआ कि सडाको इस दुनिया में नहीं रही। जब सर कहानी सुना रहे थे, तो मुझे बहुत बुरा लगा कि हमने इतनी मेहनत से 261 पक्षी बनाए लेकिन फिर भी वो नहीं बची। यदि सडाको ठीक होती तो मैं उसके बारे में कहानी लिखती। मुझे सडाको की बहुत ज्यादा याद आती है। सडाको ठीक हो जाती तो वह स्कूल जाकर रेस लगाती और पढ़ती भी। जो हमने पक्षी बनाए थे, वो हमने सडाको के लिए बनाए थे। अब वो हमने सडाको की याद में अपनी कक्षा में टाँग दिए हैं।

मानवी



प्रिय सडाको,

सडाको मुझे तुम बहुत अच्छी लगती हो। हमारे सर हम सभी बच्चों को तुम्हारी कहानी सुनाते हैं। तुम मैदान में बहुत तेज दौड़ती हो मगर मुझे इस बात का दुख हुआ कि तुम्हें दौड़ते समय चक्कर आ गए और तुम गिर गई। तुम्हारे सर बहुत दयालु थे। उन्होंने तुम्हें उठाया और अस्पताल में भर्ती करा दिया। अगर तुम्हें ठीक होना है तो तुम हरी सब्जियाँ खाओ। उससे तुम बहुत जल्दी ठीक हो जाओगी। मुझे तो बुखार हो गया था। मैंने हरी सब्जियाँ खाई और ठीक हो गई। तुम्हारे माता-पिता का क्या नाम है? तुम्हें चित्र बनाना पसन्द हैं? मुझे तो बहुत पसन्द है। तुम्हारी दोस्त चुजुको ने तुमसे कहा कि अगर तुम एक हजार चिड़िया बनाओगी तो तुम जल्द ही ठीक हो जाओगी। हम भी तुम्हें ठीक करने के लिए बहुत सारी चिड़िया बना रहे हैं। तुम्हें किमोनो पहनना पन्सद है? जब तुम अस्पताल में थी तो नर्स ने तुम्हें किमोनो पहनाया। तुम किमोनो में कैसी लग रही थीं? हमारे देश में कोई किमोनो ड्रेस नहीं पहनता। मैं तो जींस-टॉप, स्कर्ट-टॉप व फ्रॉक पहनती हूँ। मुझे कभी-कभी तो ऐसा लगता है, जैसे मैं तुमसे बातें कर रही हूँ। क्या तुम्हारी सबसे पक्की दोस्त चुजुको हैं? हमारे गाँव में तो बारिश हो रही है। क्या तुम्हारे गाँव में बारिश हो रही है? क्या तुम्हारे विद्यालय में पेड़-पौधे हैं? मेरे विद्यालय में तो बहुत सारे पेड़-पौधे हैं। तुम्हें कौन-सा खेल पसन्द हैं? मुझे तो कैरम बोर्ड खेलना बहुत पसन्द है। तुम्हारे अध्यापक का क्या नाम है? मेरे अध्यापक का नाम तो अरविंद कुमार सिंह हैं। हमने तुम्हें ठीक करने के लिए 261 चिड़िया बना ली हैं। तुमने अब तक कितनी चिड़िया बना ली हैं? मेरे पत्र का जवाब जल्दी भेजना।

तुम्हारी दोस्त  
नैना

प्रिय केनजी,

मुझे बहुत दुख है कि तुम्हें ब्लड कैंसर है। हम तुमको और सडाको को बचाने के लिए कागज की चिड़िया बना रहे हैं। मुझे यह भी पता चला है कि तुम्हें यह बीमारी हिरोशिमा में गिरे उसे एटम बम की वजह से हुई थी जिसका नाम लिटिल बॉय था।

हमने तुमको बचाने के लिए 261 चिड़िया बना ली हैं। मुझे यह बात भी पता है कि तुम्हारी नानी के अलावा तुम्हारा इस दुनिया में कोई भी नहीं है। वह तुमसे हफ्ते में एक बार मिलने आती हैं।

हम तुम्हें और सडाको को बचाने के लिए पूरी मेहनत करेंगे। जल्दी ही हम तुमको कागज के पक्की भेज देंगे।

मेरे पत्र का जवाब जरूर देना

तुम्हारा दोस्त  
देवराज

# मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य

## लालटेन

संगम

चौथी 'ब', जिंगल बेल स्कूल  
फ़ेज़ाबाद, उत्तर प्रदेश



नवम्बर-दिसम्बर 2025

चक्रमक 20

मेरे घर पर एक पुराना लालटेन है जिस पर जंग लग चुकी है। मैंने पापा से पूछा कि यह लालटेन कितना पुराना है। तो उन्होंने बताया कि यह चालीस साल पुराना है। उन्होंने कहा कि यह केवल धीमी रोशनी में टिमटिमाती एक वस्तु नहीं है, बल्कि हमारे बचपन की यादों की रोशनी है। आज बिजली के बल्बों और ट्यूबलाइटों ने हमारे घरों पर कब्ज़ा कर लिया है। लेकिन कभी यह लालटेन हमारी रातों की साथी हुआ करती थी। गाँव में जब दिन ढलता था तो यह लालटेन हमारे आँगन को रोशन कर दिया करती थी। घर के सभी लोग इसके आसपास बैठकर बातें करते और मैं दादी-नानी से कहानियाँ सुना करता था। हमारी पढ़ाई भी इसी रोशनी में हुआ करती थी।

अपने बचपन को याद करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि लालटेन की रोशनी में अपनापन-सा लगता है। जब बिजली चली जाती थी तो अँधेरा डरावना नहीं लगता था क्योंकि लालटेन हमारे साथ हुआ करती थी। यह सिर्फ रोशनी का साधन नहीं, बल्कि हमारे जीवन का हिस्सा हुआ करती थी।



पीयूष मलिक

पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय शक्तिकार्म-3  
सितारगंज, ऊधमसिंह नगर

यह बात है 1984 की जब मेरे पापा का जन्म हुआ था। इक्कीस दिनों के बाद उनके नामकरण के दिन यह लालटेन उनके पापा लेकर आए थे। उन दिनों मेरे पापा झोपड़ी में रहा करते थे। दादाजी लालटेन इसीलिए लाए थे क्योंकि उनके घर में बिजली नहीं थी। यह लालटेन हल्के हरे रंग की है। जब मेरे पापा बारह साल के हुए तब तक इसी लालटेन को जलाकर पढ़ाई किया करते थे। यह लालटेन अभी भी हमारे घर के एक छोटे-से डिब्बे में रखी है। अभी भी जब पापा इस लालटेन को देखते हैं तो यही कहते हैं कि जब मैं छोटा था तब इसी लालटेन को जलाकर पढ़ाई किया करता था।

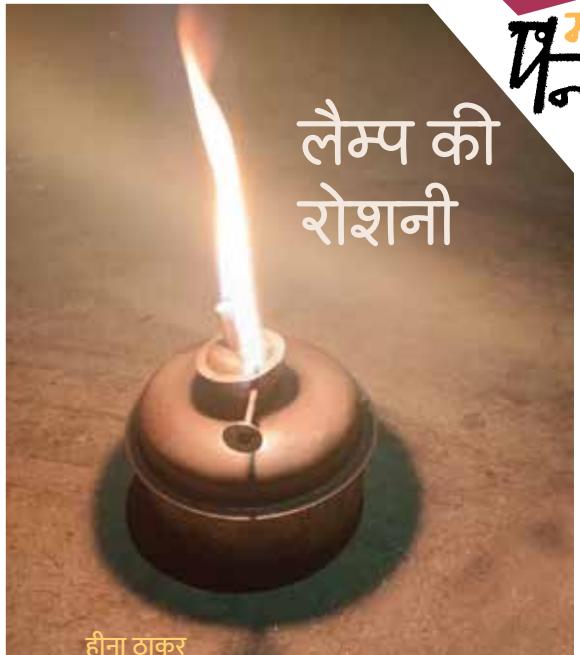


फोटो: पीयूष मलिक

मेरे घर में आज भी दो ऐसी चीजें सुरक्षित रखी हुई हैं, जो हमारे परिवार की अमूल्य धरोहर हैं – एक पुरानी लालटेन और एक तलवार। इन दोनों का सम्बन्ध मेरे परदादा से है।

बहुत समय पहले जब बिजली गाँवों तक नहीं पहुँची थी, तब लोग रात में रोशनी के लिए लालटेन का प्रयोग करते थे। मेरे परदादा जब भी अँधेरे में खेतों की ओर जाते, पशुओं को देखने जाते या घर के बाहर किसी काम से निकलते, तो हमेशा लालटेन अपने साथ रखते थे। एक रात परदादाजी लालटेन लेकर खेत की ओर जा रहे थे। रास्ते में एक पागल कुत्ते ने उन्हें काट लिया। वे बेहोश होकर वहीं गिर पड़े। जब वे देर रात तक घर नहीं लौटे, तो सब लोग चिन्तित हो गए। तभी दादाजी को दूर से चमकती हुई एक रोशनी दिखाई दी। वह रोशनी उसी लालटेन की थी। दादाजी तुरन्त वहाँ पहुँचे और परदादा को डॉक्टर के पास ले गए। इस तरह लालटेन ने परोक्ष रूप से उनकी जान बचाई। आज वही लालटेन हमारे घर की बुखारी में सहेजकर रखी हुई है। यह बात दादाजी ने हमें बताई।

मेरे घर में एक पुरानी तलवार भी है। परदादा इसे हमेशा अपने पास रखते थे। कहते हैं कि एक बार जब वे खेतों में थे, तब अचानक लकड़भग्गों का झुण्ड उनके सामने आ गया। उन्होंने हिम्मत दिखाते हुए तलवार उठाई और उन्हें डराया। लकड़भग्गे भाग गए और वे सुरक्षित घर लौट आए।



## लैम्प की रोशनी

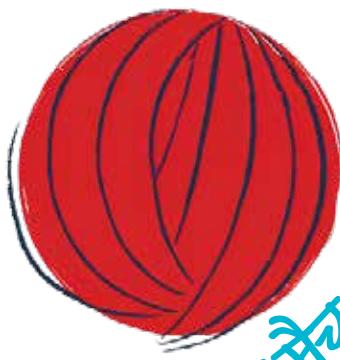
हीना ठाकुर

बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय  
छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

पुराने जमाने में सब जगह लाइट नहीं होती थी। तब इस लैम्प का प्रयोग रोशनी के लिए किया जाता था। लैम्प को जलाने के लिए इसमें मिट्टी का तेल डाला जाता था। और बत्ती लगाकर इसे जलाया जाता था। मेरी दादीजी बताती हैं कि पुराने समय में जब लाइट नहीं होती थी तो तब हम इसी की रोशनी में रात का खाना पकाते थे। और अन्य काम भी इसकी सहायता से करते थे। मेरे पिताजी इसी लैम्प की रोशनी से रात में पढ़ाई करते थे। लाइट न होने के कारण यह लैम्प पुराने समय में बहुत उपयोगी था। अब हर घर में बिजली की सुविधा होने से इस लैम्प का उपयोग नहीं होता। परन्तु पहले इसका खास महत्व था।

मेरे घर का सबसे प्रिया सजावट





क्या मैं शाने

## जब मैंने देखा पहला लाइव मैच

अयान चन्द्र  
सातवीं, पाथवेज स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

20 अप्रैल 2025 को मैं लाइव आईपीएल मैच देखने गया। यह मैच दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में हो रहा था। यह मैच दो मज़ेदार टीमों के बीच होना था — कलकत्ता नाइट राइडर्स और दिल्ली कैपिटल्स। मैं अपने पिताजी और एक अच्छे दोस्त के साथ यह मैच देखने गया। स्टेडियम जाने में बहुत देर लगी क्योंकि वह हमारे घर से बहुत दूर था। जब हम वहाँ पहुँचे तो स्टेडियम के बाहर बहुत भीड़ थी। गाड़ी से उतरते ही हमें बहुत सारी खाने-पीने की दुकानें दिखीं। लोग बहुत सारी चीज़ें खा रहे थे। इस कारण हमें अन्दर जाने में और भी समय लगा।

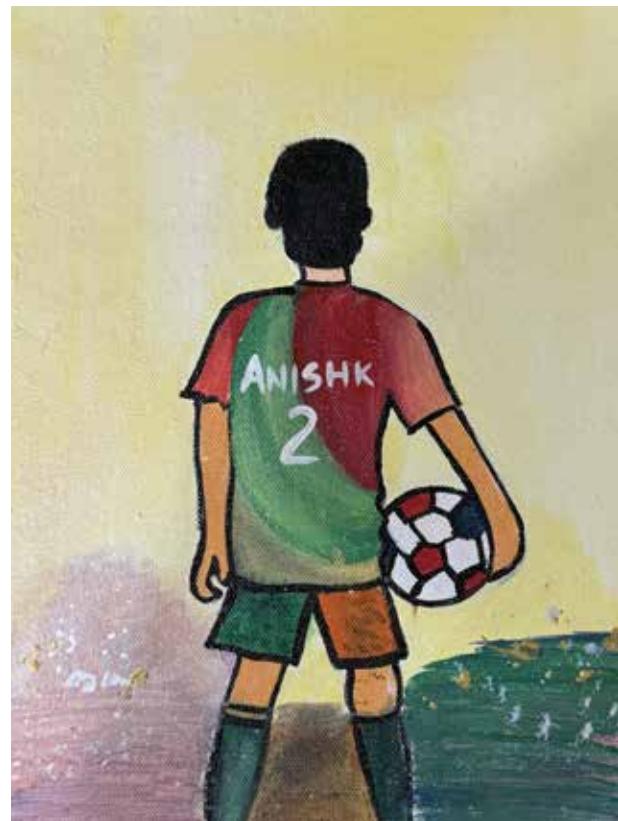


चित्र: अर्जुन चढ़ा, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

हमने भी उन दुकानों से कुछ खाने का सामान खरीदा। अन्दर जाते-जाते हमें काफी रौनक दिखी। बच्चे बलून वाले के पीछे-पीछे भाग रहे थे और उनके माता-पिता उनको रोकने की कोशिश कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि यह क्रिकेट स्टेडियम नहीं कोई मेला हो। अन्दर जाने के बाद गेट के एकदम सामने टीमों की टी-शर्ट और टोपियाँ मिल रही थीं। बहुत

लोगों ने उसे खरीदकर अपने कपड़ों पर पहन लिया। अन्दर जाने की लाइन बहुत लम्बी थी। पर कुछ ही देर बाद हम अन्दर पहुँच गए। क्रिकेट फील्ड देखते ही मेरा दिल धड़कने लगा। टीवी पर दिखने वाली छोटी-सी फील्ड को इतनी बड़ी देखकर मैं तो चौंक गया।

हम अपनी सीट पर बैठ गए और खिलाड़ियों का इन्तज़ार करने लगे। लोग अपनी-अपनी टीम के लिए चिल्ला रहे थे। दिल्ली की टीम टॉस जीत गई और उन्होंने बल्लेबाजी चुनी। यह पता चलते ही दिल्ली के लोग अपनी टीम के स्पोर्ट में बड़े-बड़े बैनर लेकर खड़े हो गए। सभी खिलाड़ी एक-एक करके अपनी जगह पर खड़े हो गए। दिल्ली के दो बल्लेबाज़ आए और पूरा स्टेडियम उनके नाम से गूँजने लगा। के एल राहुल ने पहली ही बॉल पर छक्का लगाया तो सब लोग नाचने व गाने लगे। दोनों टीमों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। परन्तु अन्त में दिल्ली जीत गई। जीवन का यह मेरा पहला लाइव मैच था जो बहुत ही रोचक था। इस अनुभव को मैं कभी भुला नहीं सकता।



चित्र: अनिष्ट जैन, तीमरी, शिव नाइर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

## हम टी-20 वर्ल्ड कप जीते

सावर्णिका मनु

सातवीं, अक्ष पब्लिक स्कूल, पंतनगर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

2024 में भारत ने बारबाडोस में हुए रोमांचक फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को सात रनों से हराकर ट्रॉफी अपने नाम की। इस जीत के साथ ही भारत का 11 साल से चला आ रहा आईसीसी ट्रॉफी का सूखा भी खत्म हो गया।

इस मैच का मेरा सबसे पसन्दीदा मूमेंट यह था – हार्दिक पांड्या गेंदबाजी कर रहे थे। उन्होंने एक वाइड फुल टॉस फेंकी, जिसे दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज़ मिलर ने ज़ोरदार तरीके से सीधे मैदान के बीचोंबीच की ओर मारा। सूर्याकुमार यादव लॉन्च-ऑफ से बाई ओर दौड़े और गेंद को पकड़ लिया। लेकिन गेंद के साथ उनकी रफ्तार उन्हें बाउण्ड्री के पार ले जाने लगी, तो उन्होंने गेंद को हवा में उछाल दिया। और वापस मैदान में आकर गेंद को लपकते हुए शानदार कैच पकड़ा।





मालिनी  
पाँचर्वी, मुस्कान संस्था  
भोपाल, मध्य प्रदेश



## फ्रिसबी ने बदल दी मेरी ज़िन्दगी

मेरा नाम मालिनी है। मैं ओड़िा गोंड समुदाय से हूँ। मैं गौतम नगर में रहती हूँ। मुस्कान संस्था से जुड़ने से पहले मेरा जीवन बहुत कठिन था। मैं सुबह जल्दी उठकर अपनी माँ के साथ कबाड़ बीनने जाती थी और दिन के समय मन्दिर, आसपास के कॉलोनी और चेतक ब्रिज की तरफ खाना या पैसे माँगने जाती थी। मेरी बस्ती के कई बच्चे पढ़ने के लिए मुस्कान स्कूल जाते थे। मेरा भी पढ़ने का बहुत मन होता था। लेकिन मैं नहीं जा पाती थी।

फिर गम्भीर बीमारी के कारण मेरे पापा की मौत हो गई। तब मैं अपनी माँ और भाई-बहन के साथ मुस्कान के हॉस्टल में रहने के लिए आ गई। और इस तरह मेरी पढ़ाई की शुरुआत हुई। यहीं मैंने पहली बार फ्रिसबी नाम का खेल खेला। शुरुआत में मुझे कुछ समझ नहीं आता था। लेकिन धीरे-धीरे मैं सीख गई और

अब मुझे यह खेल खेलते हुए चार साल हो चुके हैं।

जब कोई मेरे खेल की तारीफ करता है तो मुझे अच्छा लगता है। जब दोस्त कहते हैं कि आपके थो अच्छे हैं, आप कट अच्छा फेंकते हैं, आप गेम अच्छा चलाती हो, आप पास अच्छा देते हो तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। खेलने से मैं अपने आप को स्वस्थ महसूस करती हूँ और मेरा पढ़ाई में भी मन लगता है।

यह खेल मुझे इसलिए अच्छा लगता है कि यह खेल मिक्स जेंडर खेल है और इससे बहुत कुछ सीखने को मिलता है। दूसरी मज़ेदार बात यह है कि खेल खतम होने के बाद जब हम स्प्रिट सर्कल में बैठते हैं तब अपन जो महसूस कर रहे हैं, अपने को अच्छा लगा, उस पर बात रख सकते हैं। स्प्रिट सर्कल के दौरान हम जीवन में जो भी उत्तार-चढ़ाव चल रहे हैं उसे भी रख सकते हैं। इस सब से मेरा कॉन्फिडेंस बढ़ा है और मुझे कभी निराशा भी नहीं होती।

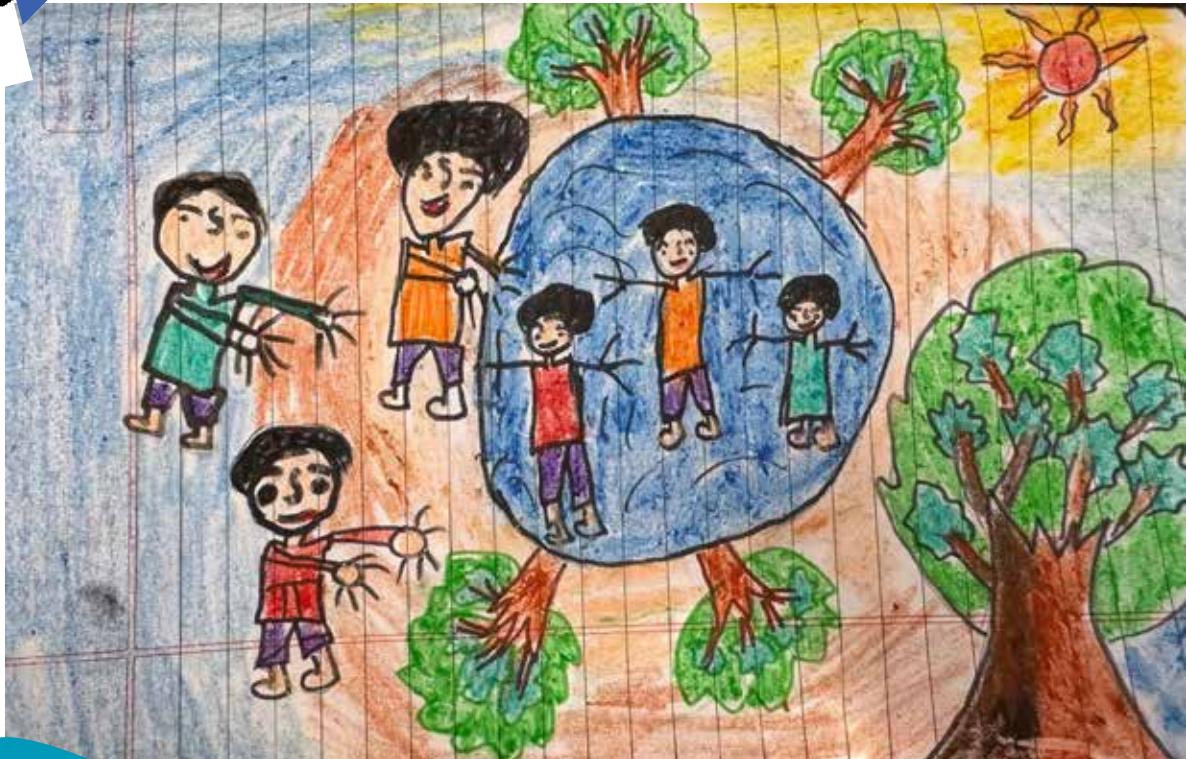
जब मुझे पता चला कि लखनऊ में चिली-यो टूर्नामेंट होने वाला है तो मैंने उसकी तैयारी शुरू कर दी। मैंने बहुत प्रैक्टिस की। सबसे अच्छी बात यह लगी कि इस बार सिलेक्शन में कट, थ्रो, जम्प के अलावा इन सभी आयामों का भी ध्यान रखा गया कि आपका बिहेवियर कैसा है, आप टीम को कैसे चलाते हो, आप जीत के लिए खेलते हो या खेल भावना से खेलते हो।

जब टीम में मेरा सिलेक्शन हुआ तब मुझे ज्यादा ही खुशी हुई कि मैं लखनऊ खेलने जा रही हूँ। मैं अपनी टीम की सबसे छोटी बच्ची थी। जब मैं पहली बार बड़े ग्राउंड पर गई तो देखा कि वहाँ देश भर से चौबीस टीमें आई हुई हैं। छह अलग-अलग ग्राउंड पर मैच चल रहे हैं और देश भर से लगभग 250 बच्चों ने पार्टिसिपेट किया है। यह दृश्य देखकर मुझे लगा कि मैं क्या ही कर पाऊँगी। मुझे डर लगने लगा क्योंकि मैं पहली बार इतना बड़ा टूर्नामेंट खेलने गई थी।

जब मैंने मैच खेलना शुरू किया तो खेलते-खेलते मेरा डर कम हुआ। मेरा मनोबल बड़ा और हमारी टीम ने बेस्ट परफॉर्मेंस दिया। जब हम पहला मैच जीते तब मुझे लगा कि नहीं मैं भी कुछ कर सकती हूँ। मैं भी अपनी टीम को जीतने में मदद कर सकती हूँ। इससे मेरा मनोबल दुगुना हो गया और खेलते-खेलते एक के बाद हम 7 में से 6 मैच जीते। इससे मुझमें अपने खेल के प्रति, अपनी टीम के प्रति एक भरोसा पैदा हुआ। इस टूर्नामेंट में टीम को टी-शर्ट दी गई।

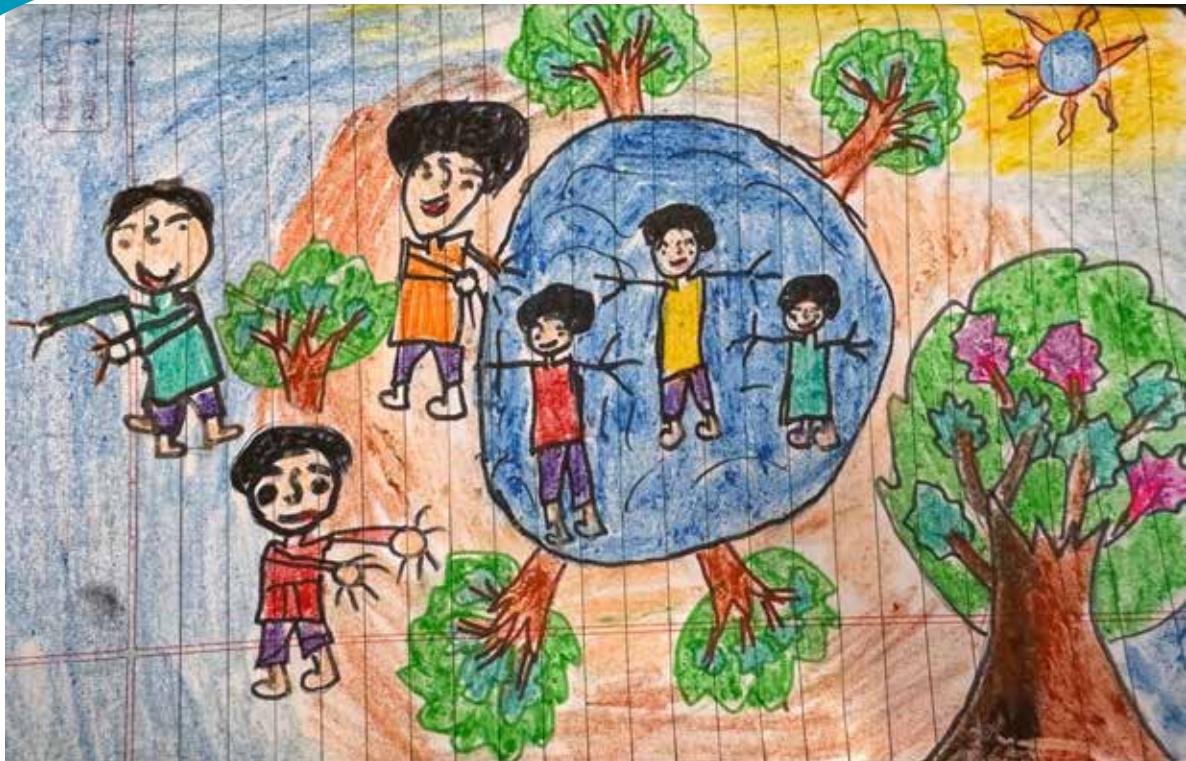
जब मैं वापस आई तब मेरे दोस्त जो मेरे साथ पढ़ते हैं, उन्होंने मेरी बहुत तारीफ की। मेरे घरवाले भी मुझे सम्मान देने लगे और बस्ती के लोग भी मेरी बहुत तारीफ करते हैं। मुझे लगता है कि मैं फ्रिसबी में आगे बढ़ सकती हूँ। यह खेल मेरी प्रेरणा बन गया है। अब मैं खुद पर विश्वास करती हूँ।



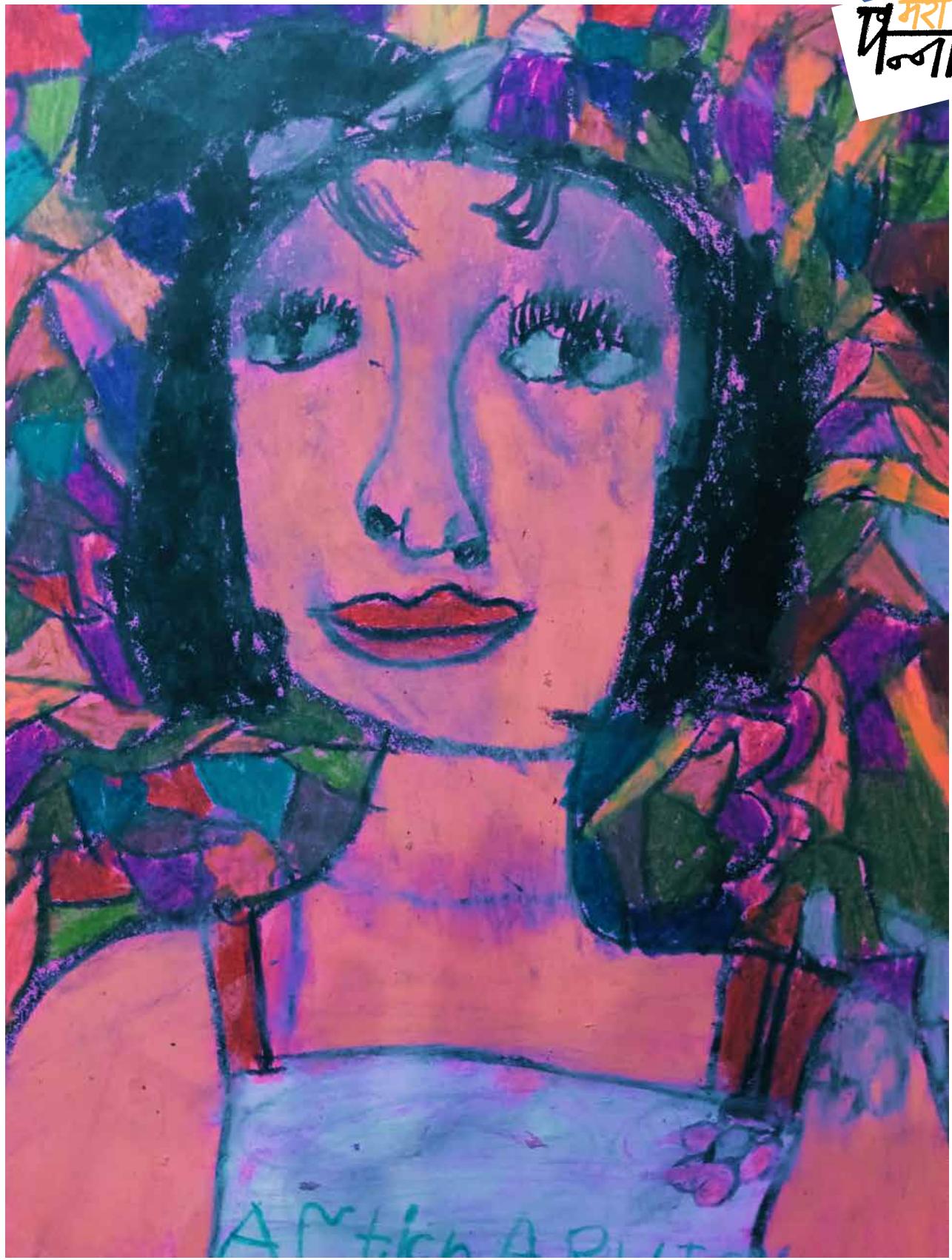


## अन्तर अप्पे दूँढो

एक जैसे दिखने वाले इन दोनों चित्रों में पाँच अन्तर हैं, तुमने कितने दूँढे?



मेरा  
पाना



चित्र: अर्विश, दूसरी, अ.जी.म प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान



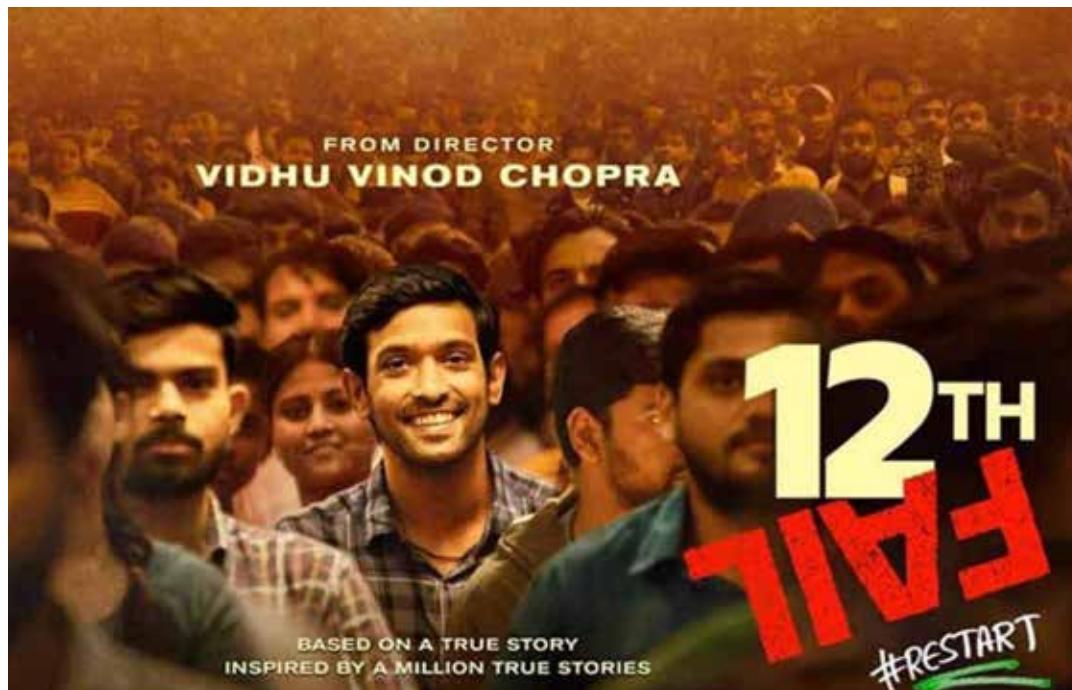
# बातें फिल्मी

कुछ दिनों पहले मैंने घर पर अखबार में बार-बार फिल्म 12वीं फेल और इसके अनिभेता विक्रान्त मैसी की तस्वीरें और खबरें देखीं। इससे मुझे इस फिल्म को देखने की बहुत इच्छा हुई। जब यह ओटीटी पर आई तो मैंने इसे देखा।

फिल्म में छोटे कस्बे का लड़का दिल्ली आता है ताकि वह पुलिस अफसर बने। रास्ते में उसे बहुत मुश्किलें आती हैं क्योंकि उसे देश की सबसे कठिन परीक्षा सिविल सर्विस एग्जाम पास करनी होती है। कई बार असफल होने के बावजूद वह हार नहीं

मानता। मुझे यह फिल्म इसलिए बहुत अच्छी लगी क्योंकि इसने दिखाया कि अगर हम अपने सपने पर विश्वास करें और उन्हें पूरा करने के लिए मेहनत करें तो कोई मुश्किल हमें हरा नहीं सकती। यह कहानी मुझे और मेरे दोस्तों को सिखाती है कि हमें भी अपने सपनों पर भरोसा करना चाहिए। लक्ष्य पाने वालों से प्रेरणा लेनी चाहिए और समाज व देश को बदलने की कोशिश करनी चाहिए ताकि और भी लोगों को हमारी कहानी से हिम्मत मिले।

फिल्म को देखते हुए मुझे लगा कि यह सिर्फ एक परीक्षा की कहानी नहीं है, बल्कि हर उस इन्सान की कहानी है जो कुछ बड़ा करने का सपना देखता है। इसलिए 12वीं फेल सिर्फ एक फिल्म नहीं है बल्कि उत्साह दिलाने वाला अनुभव है।



## 12वीं फेल

निर्देशक: विधु विनोद चोपड़ा  
निर्माता: विधु विनोद चोपड़ा  
रिलीज सन: अक्टूबर, 2023

योग्य आनन्द  
पाँचवीं 'सी', शिव नाडर स्कूल  
नोएडा, उत्तर प्रदेश

फिल्म की कहानी भविष्य के साल 2838 की है। जहाँ प्रकृति और ईश्वर का अस्तित्व बिलकुल खत्म हो गया है। “कॉम्प्लेक्स” ही है सबकी चाहत और सबका भगवान। वहाँ “सुप्रीम यास्किन” शासक है, जो भगवान-सा अमर होना चाहता है।

जिस तरह फिल्म में दिखाया गया है भविष्य में दुनिया कैसी होगी – यह कल्पना वार्कर्ट लाजवाब और कमाल की है। देखकर रोंगटे खड़े हो जाते। हर जगह सुखार, बंजरता, नास्तिकता और बरबादी। काशी जैसे शहर से भी भगवान का वजूद खत्म हो गया है।

कहानी रोचक तब हो जाती है जब सुमति को पता चलता है कि उसके गर्भ में भगवान विष्णु का दसवां अवतार ‘कल्कि’ ही है। और अश्वत्थामा जब उसे बचाने निकला तब से कहानी का असल संघर्ष शुरू होता है।

फिल्म के शुरुआती हिस्से के कुछ सीनों में अधिक व्याख्या है जो थोड़ा बोरिंग लगती है। वैसे बाद में फिल्म कमाल की है। फिल्म का सबसे शुरुआती हिस्सा मेरा पसन्दीदा है, जहाँ महाभारत का आखिरी दृश्य और उसके बाद यह दिखाया गया है कि कैसे आज-कल की दुनिया में इन्सानियत खत्म हो हो रही है। ये दोनों सीन ऐसे लगते हैं जैसे फिल्म की जान हों।

फिल्म देखने के बाद यही महसूस होता कि चाहे पाप कितना भी भारी क्यों न हो जाए जीत इन्सानियत की ही होगी। हर युग में जब सब कुछ खत्म हो जाता है तो कहीं न कहीं जीवन फिर जन्म लेता है। और यही एहसास इस फिल्म को मेरी पसन्दीदा मूवी बनाता है।



## कल्कि 2898 AD

निर्देशक: नाग अश्विन

निर्माता: प्रियंका दत्त, अश्वनी दत्त, स्वप्ना दत्त

रिलीज तारीख: 27 जून, 2024

पीहू कुमारी

आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

# પહલી-પહલી બાર



चિત્ર: કબીર ચશ્માવાલા, તીસરી, બાળ ભવન, વડોદરા, ગુજરાત

## फोन पे का इस्तेमाल

श्रीजा बाबोडे  
आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान  
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: अमांडा मोयोंग, सातवीं, वी. के. वी.,  
सुनपुरा, लोहित, अस्सणाचल प्रदेश



एक दिन था जब मैं पहली बार फोन पे का इस्तेमाल करके कुछ सामान दुकान से लेने वाली थी। उन्हाले की छुटियाँ थीं। तभी मेरे पापा ने मुझे फोन-पे कैसे इस्तेमाल करते हैं – यह सब सिखाया था। उसे याद रखकर मैं दुकान गई।

दुकान जाते वक्त मेरे दिमाग में बहुत सारे सवाल आए। क्या होगा? ज़्यादा पैसे तो नहीं जाएँगे? इन सवालों पर विचार करते-करते मैं दुकान पहुँची। उनसे मैंने सामान लिया और पूछा, “कितने रुपए हुए?” उन्होंने कहा, “सत्तर रुपए हो गए।” मैंने कहा, “ठीक है। आपका स्कैनर कहाँ है?” उन्होंने हैरानी से कहा, “फोन-पे चलाना तुम्हें आता है?” फिर उन्होंने मेरी तारीफ की। मुझे बहुत अच्छा लगा कि कोई मेरी तारीफ कर रहा है। मैंने मोबाइल का पासवर्ड खोला और फोन-पे ओपन किया। पर ये क्या, इंटरनेट गायब। यह देखकर तो मेरी जान ही निकल गई थी। थोड़ी देर बाद इंटरनेट आ गया। पर इस चक्कर में मैं मोबाइल का पासवर्ड ही भूल गई। थोड़ा दिमाग पर ताण (ज़ोर) दिया तब याद आया।

फिर मैंने पासवर्ड डाला और फोन-पे से पैसे ट्रांसफर किए। जब तक पैसे ट्रांसफर नहीं हुए थे मुझे चैन नहीं मिल रहा था। और फाइनली पैसे ट्रांसफर हो गए। और अब मैं आराम से बिना किसी चिन्ता के पैसे ट्रांसफर करती हूँ।



## मोल-भाव

राधिका यादव  
आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला  
जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

जब मैं पहली बार अकेली दूध लेने गई थी तो वहाँ पर बहुत भीड़ थी। मुझे बहुत समय तक इन्तजार करना पड़ा। एक लीटर दूध की कीमत पचास रुपए थी। मैंने कहा, “मैं तो चालीस रुपए दूँगी।” वह कहने लगे, “ठीक है, गुड़िया। तुम चालीस रुपए ही दे दो।” और मैं दूध लेकर खुशी-खुशी वापस आ गई।



# पहली-पहली बार

## सब्जी मण्डी

उत्कर्ष यादव

चौथी 'ब', जिंगल बेल स्कूल  
फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

जब मैं पहली बार सब्जी लेने गया तो थोड़ा डर लग रहा था। लेकिन उत्सुकता भी थी। जब मैं सब्जी मण्डी पहुँचा तो वहाँ की भीड़ और रंग-बिरंगी सब्जियों ने मुझे आकर्षित किया। मैंने दुकानदार से बात की और अपनी ज़रूरत की सब्जियों के बारे में पूछा। उन्होंने मुझे सही दाम बताया और मैं उन्हें खरीदकर खुश हुआ।

जब मैं बिजली का बिल जमा करने गया तो वहाँ की प्रक्रिया थोड़ी मुश्किल लगी। लेकिन वहाँ के एक कर्मचारी ने मुझे सही गाइड किया तो फिर मैंने बिल जमा कर दिया। इन अनुभवों से समझ आया कि अकेले काम करना और लोगों से बात करना कितना महत्वपूर्ण है।



चित्र: करण, छठवीं, कन्नड़ा भवन हाई स्कूल, मुम्बई, महाराष्ट्र (स्लैम आउट लाउड संस्था से प्राप्त)



# ताज़ी सब्जियों की पहचान

आरणा वसान  
छठवीं, पाथवेज स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

आज मेरी जिन्दगी का ग्रेंड शॉपिंग डे था। पहली बार मैं अकेली खरीददारी करने निकली थी। दिल की हालत वैसी ही थी जैसे एग्जाम देने के लिए जाते समय होती है। रास्ते में मैं बस यही सोच रही थी कि भगवान्, बस सब्जीवाला मुझे बेवकूफ ना बनाए। मैं पहली दुकान पहुँची और बोली, “भैया आधा किलो आलू कैसा दिया?” दुकानदार ऐसे धूर रहा था जैसे पूछ रहा हो इतनी बड़ी हो गई और अभी तक आलू का दाम भी नहीं पता। मैंने भी सोचा, “अरे भाई, प्रैक्टिस यहीं से शुरू होगी!”

आगे बढ़ी तो सब्जियाँ इतनी चमकदार दिखीं कि मैं कन्फ्यूज हो गई कि कौन-सी सब्जियाँ ताजी हैं। टमाटर दबाने लगी तो बगल वाली आंटी बोलीं, “बिटिया ऐसे दबाते नहीं है। देखकर पहचानो।” मैं मुरक्करा दी और मन में बोली, “आंटीजी गाइडेड टूर चाहिए तो पैसे चार्ज कर लेना।”

फिर किराने की दुकान पहुँची। वहाँ तो मेरा दिल ही फिसल गया। बिस्कुट,



चित्र: झरना, चौथी, आरोही बाल संसार, प्यूडा, नैनीताल, उत्तराखण्ड

नमकीन, चॉकलेट – सब ऐसे बुला रहे थे जैसे कह रहे हों, हमें भी ले चलो। मैंने मन ही मन सोचा कि आज तो मैं खुद बॉस हूँ और टोकरी में डाल दिया।

असल कॉमेडी सीन हुआ बिलिंग काउंटर पर। कुल बिल बना दो सौ दस रुपए। मैंने पाँच सौ रुपए का नोट थमाया। दुकानदार ने छुट्टे दिए और मैं उन्हें ऐसे गिन रही थी जैसे आरबीआई की ऑडिटर हूँ। घर आकर मम्मी को जब बताया तो बोलीं, “वाह! अब तो तू शॉपिंग क्वीन बन गई।” मैंने सोचा कि अगर पहली बार इतना मज़ा आया है तो अगली बार तो मैं मॉल पर धावा बोलूँगी।

बाएँ से दाएँ →  
ऊपर से नीचे ↓

# चित्र पहेली

दिए हुए बॉक्स में 1 से 6 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 6 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। इतना कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

## सुडोकू 90

4	1	5	3		2
			2	4	5
		2		6	4
		6			3
2	4	3	1		6
	5	6			





जवाब पेज 84 पर

# ख्वाबों में

## मास्क मैन

दो महीने पहले की बात है। घर में पैसों से जुड़ी कुछ दिक्कतें चल रही थीं। तब मैंने दो महीनों तक एक सपना लगातार देखा। और उस सपने में जो था उसका नाम ‘मास्क मैन’ था। और वो मुझे बहुत प्रेरणा करता था। और वो मेरी ज़िन्दगी का सबसे बुरा सपना था।



तेजस्विनी दुबे  
सातवीं ‘डी’, नर्मदा वैली इंटरनेशनल  
स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश



चित्र: प्रज्ञा, दिग्न्तर स्कूल, जयपुर, राजस्थान

## ज़ॉम्बी

प्रीति लकड़ा  
सातवीं, मंजिल संस्था, दिल्ली

मैं स्कूल गई तो मेरी दोस्त ने बताया कि उसने एक डरावना सपना देखा। इतना डरावना सपना उसने आज तक नहीं देखा था। वो इतना डर गई थी कि काँपने लगी थी। मैं बताती हूँ कि दरअसल उसने सपने में क्या देखा था।

उसने देखा कि वो सुबह नहाधोकर तैयार होकर स्कूल पहुँची। तब हमारे पेपर चल रहे थे। हम सभी रीवाइज़ कर रहे थे। मैं होस्टल से अभी आई नहीं थी। तभी हमारी क्लास में एक लड़की आई। उसकी बॉडी में खून ही खून लगा था। उसने अपनी बॉडी को पूरा 360 डिग्री से मोड़ लिया। तब पता चला कि वह ज़ॉम्बी बन चुकी थी।

मेरी दास्त किसी तरह बचकर अपने घर पहुँची। तब तक ज़ॉम्बी वहाँ नहीं आई थी। फिर मैंने कहा कि मेरे पापा की स्कूटर से किसी सेफ जगह पर चलते हैं। उसके माता-पिता ने भी कहा तुम दोनों कहीं सेफ जगह पर चले जाओ। और फिर मैं स्कूटर चला रही थी।



# काला आसमान

सना माकिन  
आठवीं, पाथवेज़ स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मेरा  
प्रैन्स

मैंने भी एक ऐसा सपना देखा था जो पहले बहुत सुन्दर था, लेकिन बाद में थोड़ा डरावना भी हो गया। यह सपना मुझे आज तक याद है।

सपने में मैं एक बड़े और सुन्दर बगीचे में थी। चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। हवा ठण्डी और ताजी थी। पक्षियों की मीठी आवाज़ सुनाई दे रही थी। तितलियाँ फूलों पर उड़ रही थीं। छोटे-छोटे जानवर खेल रहे थे और सब कुछ बहुत शान्त और सुन्दर लग रहा था। मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई। ऐसा लगा कि मैं किसी जादुई जगह पर पहुँच गई हूँ। मैंने फूलों को छुआ और उनकी खुशबू महसूस की। मेरा मन बहुत खुश और शान्त था। मैं वहाँ समय बिताना चाहती थी और उस जगह को छोड़ना नहीं चाहती थी।



चित्र: प्रिया कुमारी, परिवर्तन सेंटर, नारायणपुर, सिवान, बिहार

लेकिन अचानक सपना बदल गया। आसमान काला हो गया और बगीचा अँधेरे में डूब गया। पक्षियों की आवाज़ बन्द हो गई और पेड़ डरावने लगने लगे। चारों तरफ अजीब आवाजें आने लगीं। मुझे लगा कि कोई मेरा पीछा कर रहा है। मैं डर गई और भागने लगी। मेरा दिल बहुत तेज़ी-से धड़कने लगा। मैं घबराई हुई थी और नहीं जान पा रही थी कि अब मुझे क्या करना चाहिए। तभी मेरी नींद खुल गई और मैं समझ गई कि यह सिर्फ़ सपना था।

नवम्बर-दिसम्बर 2025

## अम्बेडकर जयन्ती पर एक डिस्प्ले

सोनू साहू सिंह  
नौवीं, कथा कानन लाइब्रेरी एवं संसाधन केन्द्र  
नगांव, असम



हमारी लाइब्रेरी में अम्बेडकर जयन्ती पर एक डिस्प्ले लगाया गया था, जो जातिवाद और भेदभाव के बारे में था। उसमें एक सवाल पूछा गया था कि क्या पीने के पानी का पात्र भेदभाव का कारण बन सकता है? इस पर मैं अपना अनुभव लिखना चाहता हूँ।



हाँ, बन सकता है। जब हम किसी समारोह या काम में किसी को कप में और किसी को पेपर कप में पानी देते हैं, तो यह भेदभाव होता है। एक बार मेरे घर में एक दादी आई थीं जो मुसलमान थीं। उन्हें बहुत भूख लगी थी। माँ ने उन्हें खाना और पीने का पानी दिया। जब दादी चली गई, तो माँ ने वह थाली मुझसे उठवाई और फिर घर में पानी छिड़का। मुझे तब इतना एहसास नहीं था, लेकिन आज यह घटना याद आ गई।

मेरी माँ जब दूसरों के घरों में काम करती थीं, तो उन्हें अलग थाली में खिलाया जाता था।

यह भेदभाव का एक रूप है। बाबा साहेब अम्बेडकर ने समाज की कल्पना सीढ़ी की तरह की थी, जहाँ अलग-अलग पायदानों पर लोग खड़े होते हैं। इस सीढ़ी में जो सबसे ऊपर है, वह नीचे वालों पर जुल्म करता है। माँ ने भेदभाव झेला था, लेकिन वे समाज के बनाए उस नियम को निभा रही हैं। वे संविधान के कर्तव्यों का पालन नहीं कर रहीं, लेकिन अधिकारों का पूरा फायदा उठा रही हैं। मुझे यह सब देखकर बुरा लगता है, लेकिन मैं माँ को कुछ कह नहीं पाता।



## नवमी में पूरी-हलवा

अंजीत रोकाया  
तीसरी, विद्या विकास हाई स्कूल  
बेंगलुरु, कर्नाटका



एक दिन पहले रामनवमी थी। अपनी बहन के साथ मुझे भी ऊपर फ्लैट वाली आंटी ने खाने पर बुलाया था। मैं वहाँ अकेला लड़का था। बाकी सब लड़कियाँ थीं। हमें खाने में पूरी, सब्ज़ी और हलवा मिला। साथ ही सौ रुपए और एक रुमाल भी। पैसे मम्मी ने ले लिए। मेरे पास बस रुमाल बचा।

मुझे रुमाल बहुत पसन्द आया। इतना मुलायम और छोटा। मेरे जींस की जेब में पूरी तरह से फिट होता। जैसे मेरे लिए ही बना हो। उस पर नीले फूल की ड्राइंग भी थी। मैंने नीले फूल कभी नहीं देखे। रुमाल पर वे कमाल दिख रहे थे। मुझे असली नीले फूल देखने का मन होने लगा।

रुमाल को आए एक दिन भी नहीं हुआ था। हमारी गली के कुत्ते की आँख के नीचे न जाने कहाँ से दो कीड़े आ जमे। मैंने उसे कितनी बार कचरे के ढेर के पास सोने से मना किया है। पापा ने कहा कि कीड़े उसका खून चूस रहे हैं। और उसे दर्द हो रहा है। उसकी आँखों के नीचे आँसू की लाइन बह-बहकर सूख गई थी।

मैंने पापा से उसे बचाने को कहा। पापा ने मुझसे कोई कपड़ा माँगा। मेरे पास कोई कपड़ा नहीं था। फिर मुझे रुमाल की याद आई। मुझे रुमाल देने में हिचक हो रही थी। अब तक के सारे रुमाल मम्मी ने रद्दी कपड़े से काटकर बनाए थे। ये मेरा पहला असली रुमाल था। पर कुत्ते को रुमाल की ज्यादा ज़रूरत थी।

मैंने रुमाल पापा को दे दिया। पापा ने रुमाल को आधा मोड़ा और कुत्ते की आँख से कीड़े निकाल दिए। कुत्ते ने ज़रा भी शोर या हलचल नहीं की। कीड़ों के निकलते ही उसकी आँखें थोड़ी बड़ी हो गईं। चमकने भी लगीं। अपनी जीभ बाहर कर वह दौड़ गया।

मेरे रुमाल पर खून के निशान लगे थे। नीले फूलों के साथ वे लाल गुलाब की तरह दिख रहे थे।

चित्र: आयुष्मान भट्ट, पाँचवीं,  
सन वैली स्कूल, देहरादून,  
उत्तराखण्ड





द जंगल बुक  
लेखक: रुड्यार्ड किपलिंग

गुनगुन  
सातवीं, अःजीम प्रेमजी स्कूल  
बाड़मेर, राजस्थान



यह किताब तो आप सबने कभी ना कभी पढ़ी होगी। इसमें एक लड़का होता है। उसका नाम मोगली होता है। उसके कितने दोस्त हैं? 1, 2, 3 या 4-5 नहीं, बल्कि पूरा जंगल। पर वह एक जानवर से डरता है, वो है शेर खान। इस बुक के

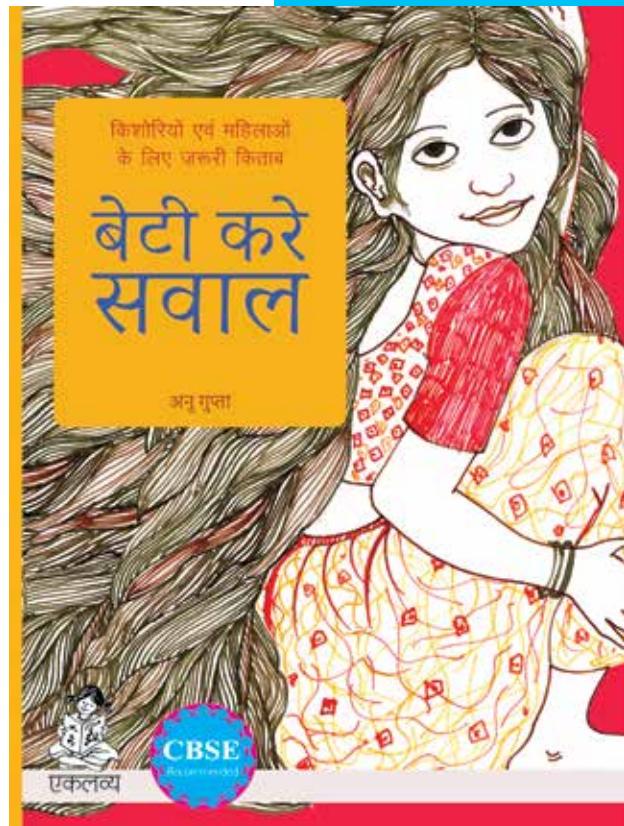
कई पार्ट हैं। जब मैं उन्हें पढ़ती हूँ तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। मुझे भी जंगल में रहने का मन करता है। पेड़-पौधे सबसे ज्यादा अच्छे लगते हैं। वो झारना, उसमें बहने वाले पानी की आवाज़ में एक सुकून है। तुम भी पढ़ना जंगल बुक।

मोगली पेड़ पर चढ़कर भागता। कभी उड़ने की कोशिश करता। कभी कुछ करता, तो कभी कुछ करता। शेर खान से बचने में बलू (जो एक भालू है) और बघीरा (जो एक तेंदुआ है) उसकी मदद करते हैं। हालाँकि हम इन जानवरों से डरते हैं। लेकिन यह मोगली के बड़े अच्छे दोस्त हैं। मैं भी इन्हें अपना दोस्त बनाने की इच्छा रखती हूँ। अब तो शायद तुम्हें भी इच्छा हो रही होगी इस किताब को पढ़ने की और इन्हें अपना दोस्त बनाने की।



बेटी करे सवाल  
लेखक: अनु गुप्ता  
चित्र: कैरेन हैडॉक  
प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन

लक्ष्मीना  
आठवीं, कथा कानन लाइब्रेरी एवं  
संसाधन केन्द्र, नगांव, असम



आज मैंने मम्मी के साथ बेटी करे सवाल किताब का एक चैप्टर पढ़ा। चैप्टर का नाम था – माहवारी से जुड़ी मान्यताएँ। इस किताब को पढ़ने के बाद मम्मी को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि माहवारी के समय छूने से पापड़, अचार खराब नहीं होता है। भगवान को छूने से, पौधे को छूने से ऐसा कुछ नहीं होता है। और माहवारी का खून गन्दा नहीं होता है। फिर मैं मम्मी से बोली, “मम्मी इस किताब में झूठ बात तो नहीं बोला है। क्योंकि किताबें कभी झूठ नहीं बोलती हैं। अगर किताबें झूठ बोलतीं तो लोग इन्हें पढ़ते ही क्यों। और वैसे भी आप बोलते हो कि पढ़ाई करो, पढ़ाई करो तो क्या फिर हम झूठी पढ़ाई करते हैं।” आखिर मैं मम्मी बोलीं, “अभी मेरा बहुत काम है। मैं जा रही हूँ अपना काम करने।” फिर मैं थोड़ी देर बाद मम्मी से पूछी, “क्या आपको अभी भी विश्वास नहीं हो रहा कि माहवारी के दौरान पौधा छूने से कुछ नहीं होता? तो मम्मी बोलीं, “नहीं। यह सब सच ही है। अचार-पापड़ सच में खराब हो जाते हैं और पौधे आदि सूख जाते हैं।”

# मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य

## सरौता

फोटो: श्रीधी राज

प्रिंसी यादव  
आठवीं, शासकीय  
माध्यमिक शाला, जेरवारा  
सागर, मध्य प्रदेश

मोहम्मद इकबाल  
बारहवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, दरभंगा, बिहार

मेरे घर में पुरानी वस्तुएँ तो अनेक हैं मगर उनमें से एक सरौता है। यह उन पुरानी खास वस्तुओं में से एक है जो मेरी अम्मी की शादी में नानी ने यादगार के तौर पर दी थीं। यानी यह सरौता नानी के ज़माने का है। अम्मी बताती हैं कि यह सरौता कितने ही लोगों की शादी में पान-कसेली काटने के लिए ले जाया गया है। इससे पता चलता है कि यह पहले की तरह अभी भी काम करता है। अभी तक इसमें जंग नहीं लगी है।

अम्मी इसे सँभालकर रखती हैं। अगर इसे कोई ले जाए और समय पर वापिस न दे तो अम्मी खुद ही लेकर चली आती हैं। सरौते से अम्मी की बहुत-सी यादें जुड़ी हैं जिन्हें वे अक्सर सुनाया करती हैं। और सुनाते-सुनाते अपने बचपन की कहानियों में चली जाती हैं। उन्हें सुनते हुए हम भी उनकी कहानियों में खो जाते हैं।



श्रीधी राज  
छठवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

मेरे नानाजी के पास एक सरौता है जो लगभग पचास साल पुराना है। उसे एक लोहार ने बनाकर मेरे नानाजी को उपहार में दिया था। वह बहुत काम की चीज़ है। उसे मेरे नानाजी हमेशा अपने साथ रखते हैं। वे उससे छुहारे, सूखे नारियल आदि काटकर हमें खाने के लिए देते हैं।



जब मेरी दादी का ब्याह हुआ था तब मेरी दादी जर्दा खाने के लिए और उसके साथ सुपाड़ी कुतरने के लिए इस सरोतिया का इस्तेमाल करती थीं। इसका वजन कुल सौ ग्राम है। यह कम से कम तीस-चालीस साल से ज़्यादा पुरानी सरोतिया है। पहले के समय में दादा-दादी दोनों इसे इस्तेमाल करते थे।



# आँगन में ओखल

ईशा शर्मा

नौवीं, आरोही बाल संसार, प्लॉडा, नैनीताल, उत्तराखण्ड

# मैं गाली और मूसल हूँ



रुबी बानो

सातवीं, माध्यमिक विद्यालय, बरेठी, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

हमारे कुमाऊँ मण्डल उत्तराखण्ड में कई गाँव हैं। वहाँ के हमारे गाँव में जो घर हैं तो बाहरी लोग देखेंगे तो आँगन में ओखल देखने को मिलेगा जो गहरा होगा और आँगन के बीच में होगा। हमारे पूर्वज इसमें मसाले, धान कूटते थे। और उसे मूसल से कूटा जाता था। यह आपको हर घर के आँगन में देखने को मिलेगा। दीवाली में गेरु और चावल का घोल बनाकर ओखल में डिजाइन बनाई जाती है व लक्ष्मी माता के पैर भी बनाए जाते हैं। परन्तु यह संस्कृति अब धीरे-धीरे खत्म हो रही है।



पाषाण युग से लेकर आज तक मेरा प्रयोग गाँव के घरों में किया जाता है। मैं पत्थर को तराशकर ज़मीन में गड़ा खोदकर स्थापित की जाती हूँ। मेरा उपयोग मेरे साथी मूसर (मूसल) के साथ किया जाता है। मूसल लकड़ी का बना होता है जिसके आगे के भाग में सांजी नाम का लोहे का छल्ला जाम किया जाता है। इससे मोटे अनाज जैसे जौ, सावा, बाजरा, सभी प्रकार की दालों को साफ करने में मदद मिलती है। धान को कूटकर चावल निकाला जाता है जो सब के मुख्य भोजन का हिस्सा है। मैं और मूसल आज भी घरों का हिस्सा बने हुए हैं। शायद इसीलिए अनेक त्योहारों एवं शादी-विवाह में हमारा पूजन किया जाता है। हमारे ऊपर एक लोकोक्ति भी प्रचलित है – “गाली के भीतर रहकर चोट से बाहर नहीं रहा जा सकता।” मैं गाली और मूसल हूँ।

मैं चक्की हूँ। मुझे भी पत्थरों का तराशकर बनाया जाता है। मैं दो भागों में होती हूँ। मेरा आकार गोल होता है। मेरे ऊपरी भाग में किनारे पर सुराख करके लकड़ी का हत्था लगाया जाता है। बीच में जो सुराख होता है उसमें एक लोहे की कील लगी होती है जिसमें अनाज डालकर हत्था पकड़कर चारों ओर घुमाया जाता है, जिससे आटा बनता है। मुझ पर भी एक लोकोक्ति है – “दो पाटों के बीच में साबूत न कोया।”

मेरे घर का सबसे प्रिया सदृश्य





## फटाफट बताओ

कौन-सी चीज़ है जो गर्म करने पर जम जाती है?

(छाँड़)

कौन-सी चीज़ है जो सफेद होती है और उसके अन्दर पानी ही पानी भरा होता है?

(पार्किंग)

यह दोनों पहलियाँ हरयाणा के करनाल ज़िले के ग्राम पाड़ा के दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल की छठवीं कक्षा की छात्रा अर्पिता ने भेजी हैं।

सफेद नदी, काला पथर और उनके ऊपर छाता। बताओ कौन?

(छाँड़)

क्या है जिसे हम कभी ब्रेकफास्ट में नहीं खा सकते?

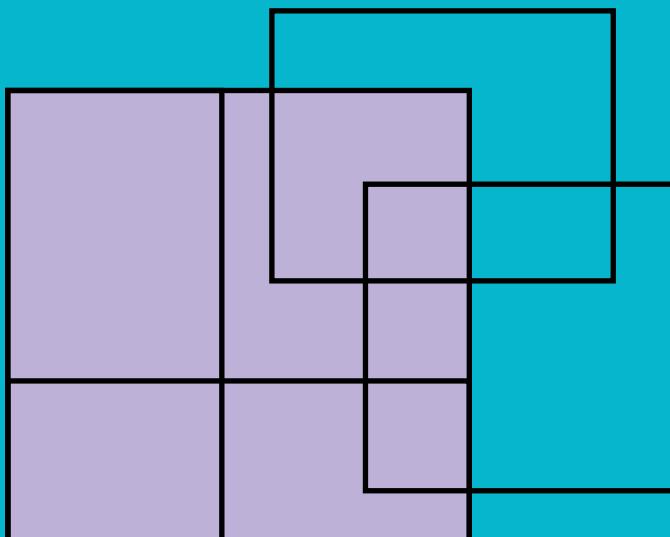
(प्रन्थी प्राई छाँड़)

यह दोनों पहलियाँ मध्य प्रदेश के धार ज़िले के कुक्की के एलीगेंस एकेडमी की पाँचवीं कक्षा की छात्रा मिशिका जैन ने भेजी हैं।

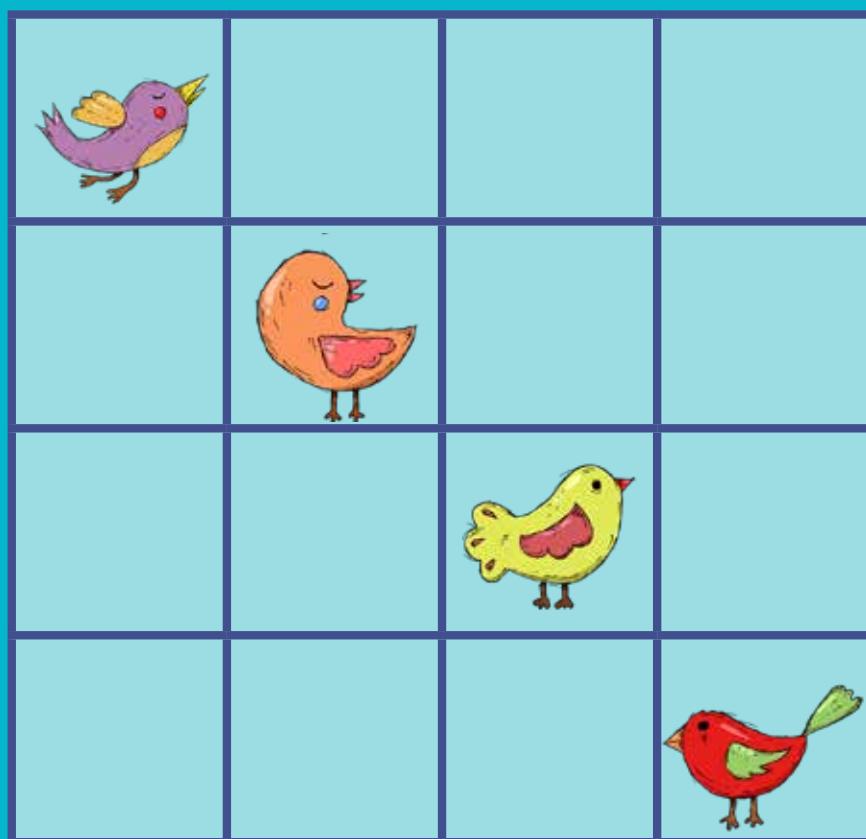
नहला दिया, धुला दिया  
मुक्के मारकर सुला दिया

(प्रन्थी प्राई छाँड़)

1. इस चित्र में कितने आयत दिखाई दे रहे हैं?



2. एक बड़े-से डिपार्टमेंट स्टोर में एक आदमी ने बास्केट में ऊपर तक सामान भरा और बिना पैसे दिए बाहर जाने लगा। दुकान के मालिक ने उसे बाहर जाते देख भी लिया। पर ना तो उसे रोका और ना ही पुलिस को बुलाया। ऐसा क्यों?
3. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग चिह्निया आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी चिह्निया आएँगी?



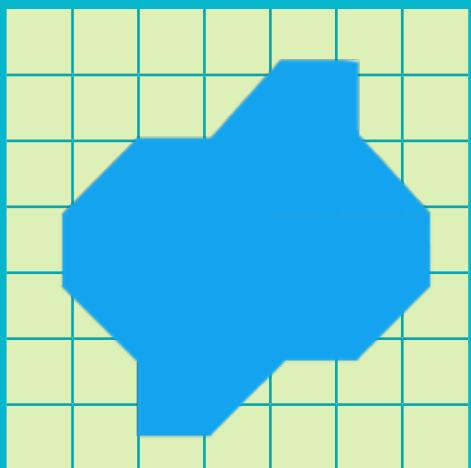
4.

तुम्हें इसमें कितनी संख्याएँ दिख रही हैं?



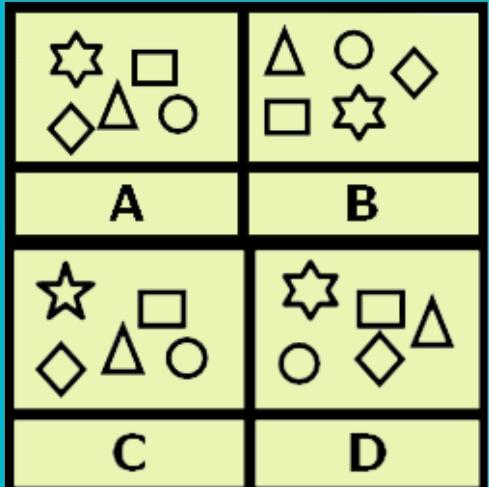
6.

दी गई आकृति को चार टुकड़ों में इस तरह बाँटना है कि उन्हें जोड़ने पर एक चौकोर बन जाए। कैसे करोगे?



10.

चारों में से कौन-सा चित्र अलग है?



5.

क्या तुम केवल एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही कर सकते हो?

7.

सभी खाली जगहों में एक ही अंक आएगा। कौन-सा?

$$1 \dots \times \dots = \dots 4$$

8.

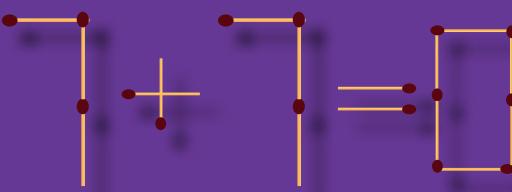
दिए गए वाक्यों में शरीर के कुछ अंगों के नाम छिपे हुए हैं। जरा ढूँढो तो।

1. नेहा थरमस में गरम चाय है, पी लेना।
2. उसका नमकीन बनाने का तरीका ही कुछ अलग है।
3. मेरी पतंग लाल रंग की है।
4. ज्योया ने पावभाजी भरपेट खाई और पैक भी करा ली।
5. महिमा थाली ले आना।
6. सपना कल दिल्ली जाने वाली है।

9.

दी गई ग्रिड में कई सारे फूलों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

क	से	रा	बे	श	र	म
ने	म	गु	ला	ब	जू	ट
र	ल	ल	चं	पा	मा	ही
गें	ल	मो	ग	रा	त	नी
टे	दा	ह	र	सिं	गा	र
पा	सू	र	ज	मु	खी	लि
चाँ	द	नी	रा	च	मे	ली



# पहली-पहली बार

## आलू-प्याज़ और टमाटर

शिवांगी नेलवाल  
सातवीं, रानीखेत  
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

यह बात है पिछले साल की गर्मियों की छुट्टी की। तब रानीखेत में बहुत अच्छा मौसम था। मैं और मेरा दोस्त प्रियांशु खेल रहे थे। तभी मेरी मम्मी ने मुझसे कहा कि दुकान से आलू-प्याज़ और टमाटर लाना है। पहले मैंने मना किया क्योंकि मैं डर रही थी। मैं सोच रही थी कि मैं ला भी पाऊँगी या नहीं। अगर मुझसे कोई गड़बड़ हो गई तो। पर मम्मी ने फिर भी मुझे भेजा। मैंने मम्मी से कहा भी कि आप भी चलो। लेकिन मम्मी ने मना कर दिया और मुझे अकेले ही भेजा।

मैं दुकान में गई। वहाँ से मैंने आधा किलो टमाटर, एक किलो आलू और एक किलो प्याज़ के साथ एक चॉकलेट भी ली। जब मैं घर आई तो मैंने सामान मम्मी को दिया और मम्मी ने मुझे शाबाशी। फिर मैंने सोचा मैं फालतू ही डर रही थी। और मैंने आराम से चॉकलेट खाई।



## घोटाला

पीहू कुमारी  
आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

मैं पहली दफा दूध खरीदने डेयरी की दुकान पर गई। मुझे डर लग रहा था कि कहीं कोई गाड़ी मुझे टक्कर न लगा दे। मैं सोच रही थी कि कहीं दुकान वाले मुझसे ऐसा ना कहे कि तुम्हें सामान नहीं मिलेगा। किसी बड़े को बुलाओ। और अगर मैंने दूध खरीद भी लिया तो मैं बिना कागज़-कलम के हिसाब कैसे करूँगी। लेकिन जब मैं दुकान पहुँची तो मैंने दूध खरीद ही लिया। पर अब डर इस बात का था क्या भैया ने सही हिसाब किया है। फिर मैंने घर आकर पैसे माँ को दिए। उसमें दस रुपए कम थे। दुकान वाले ने घोटाला नहीं किया था, बल्कि मुझसे ही गिर गए थे और फिर नहीं मिले।



# बहन के साथ अण्डे लेने गई

सावर्णिका मनु  
सातवीं, अक्ष पब्लिक स्कूल  
पंतनगर, ऊधमसिंह नगर  
उत्तराखण्ड

मैं एक दिन दिसम्बर में पापा के कहने पर मेरी बहन के साथ अण्डे लेने गई थी। पहले मैं और मेरी बहन शहीद चौराहा गए। वहाँ की दुकान बन्द थी। फिर हम रुबी किराना स्टोर गए। वहाँ पर एक कुत्ता अपने बच्चों के साथ बैठा था। मेरी बहन ने जब उसे कुत्ते की आँखों में देखा तो वह मुझे और मेरी बहन को काटने आ गया था। तभी एक आदमी ने देखा कि कुत्ते ने हमें नीचे गिरा दिया है और हमें काटने आ रहा है तो वो हमें बचाने आ गया। हमने उसका शुक्रिया अदा किया और अण्डे लेकर घर चले गए। घर जाने के बाद हमने मम्मी और पापा को सारी बात बताई तो उन्होंने पूछा कि कुत्ते ने तुम्हें काटा तो नहीं? हमने कहा कि नहीं काटा। फिर उसके बाद हमने साइकिल सीख ली और अब जब भी हमें कुछ लेने जाना होता है तो हम साइकिल से ही आते-जाते हैं।

चक्र  
मंडप

चित्र: प्रकाश डावर, चौथी, खरगोन, मध्य प्रदेश



# पहली-पहली बार

एक दिन मेरी चप्पलें टूट गईं। ये बात अभी हाल ही की है। तो मैं घर में बोली, “मेरी चप्पलें टूट गई हैं। खरीद दो।” मेरे पापा तो हैं नहीं, तो मैं ये बात अपनी मम्मी और भैया से बोली। मम्मी बोलीं, “चप्पलें दिला देंगे।” पर भैया ने मुझे पैसे दे दिए और बोले, “मुझे समय नहीं है। तुम स्कूल जाओगी तो आते समय खरीद लाना।” तो जब मैं यह सुनी तो घबरा गई और बोली, “क्या, क्या कैसे खरीदूँगी। मैं अकेले नहीं जा पाऊँगी।” तो भैया बोले, “मैं नहीं जाऊँगा। खुद खरीदो।” मैं सोच में पड़ गईं।

अगले दिन मैं किसी तरह चप्पलों की दुकान पर गईं। मैं सोच रही थी कि दुकानदार अँग्रेज़ी में बात ना करे और ये भी सोच रही थी कि दुकानदार मुझसे पैसे ज्यादा ना ले। क्या मालूम चप्पलें अच्छी ना दे। तभी दुकानदार बोला, “बेटा क्या लेना है?” मैं बोली, “मुझे चप्पलें दिखा दीजिए।” दुकानदार ने मुझे बहुत-सी चप्पलें दिखा दीं। सारी चप्पलें बहुत अच्छी लग रही थीं। पर मुझे काली चप्पलें पसन्द आईं। मैंने वो चप्पलें ले लीं और पैसे दे दिए।

फिर मैं रास्ते में सोच रही थी कि मैं जितना डर रही थी और जैसा सोच रही थी, वैसा कुछ भी नहीं था। उस दिन समझ में आया कि डरना नहीं चाहिए। जहाँ नहीं गए हों वहाँ जाना चाहिए।

## डर के आगे

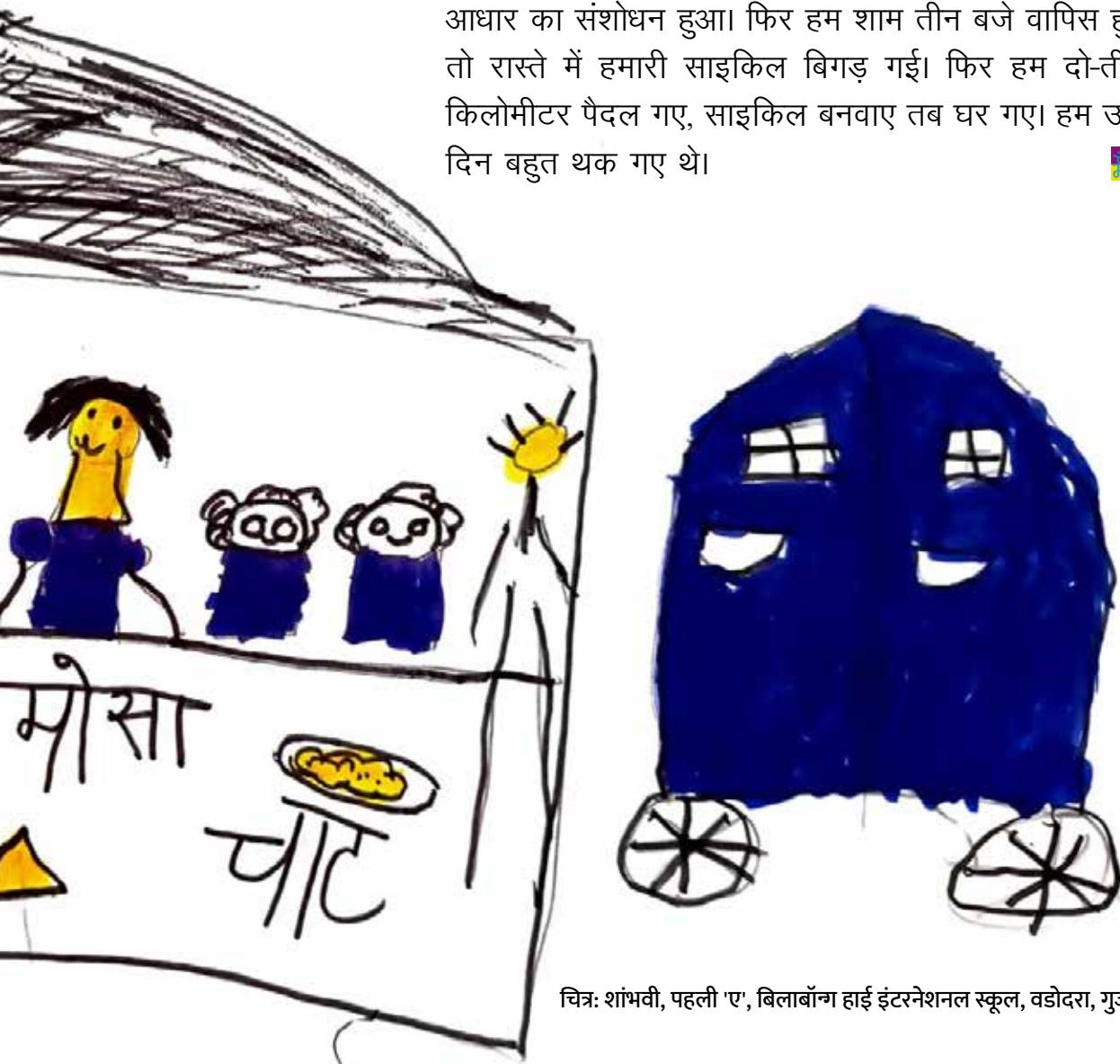
काजल देवी  
नौवीं, स्वतंत्र तालीम फाउंडेशन, मलसराय  
सीतापुर, उत्तर प्रदेश



## आधार में संशोधन

सुषेन्द्र कुमार  
दसवीं, सीख समूह  
स्वतंत्र तालीम फाउंडेशन  
मलसराय, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

हम एक बार अपने आधार में संशोधन कराने गए पोस्ट ऑफिस गए थे। पहली बार हम अकेले गए थे। हमारे पापा ने बता दिया था कि यहाँ पर संशोधन होगा। अगले दिन हम अकेले साइकिल से गए। वहाँ पर हम फॉर्म जमा किए। पहली-पहली बार गए थे तो हल्का-हल्का डर लग रहा था। जब दो-चार फॉर्म कम्प्लीट हो गए तो मेरा नम्बर आया। पर जैसे ही मेरा नम्बर आया तो प्रिंटर व लैपटॉप में कुछ गड़बड़ी हो गई। पहले से ही हम लाइन में खड़े-खड़े परेशान हो गए थे। तो हम चुपचाप मेज पर बैठ गए। लगभग दो घण्टे बाद हमारे आधार का संशोधन हुआ। फिर हम शाम तीन बजे वापिस हुए तो रास्ते में हमारी साइकिल बिगड़ गई। फिर हम दो-तीन किलोमीटर पैदल गए, साइकिल बनवाए तब घर गए। हम उस दिन बहुत थक गए थे।



चित्र: शांभवी, पहली 'ए', बिलाबॉन्ग हाई इंटरनेशनल स्कूल, वडोदरा, गुजरात

मैं खेलता हूँ



चित्र: सुरगी, नौ साल, स्टूडियो रनिंग स्टिच, बेंगलुरु, कर्नाटका

## पत्र

आदरणीय प्रेमचंद जी,  
सादर समरण,

प्रिय प्रेमचंद जी,

हालांकि आप हम दुनिया में  
नहीं हैं पर आपकी कदानियाँ अभी तक लोकों  
के दिलों में हैं। मैंने आपकी कृद कदानियाँ  
पढ़ी थीं। जो कि मैंने कहा 5 और 6 में पढ़ी थीं  
'हैरगाह' और 'नादन दोस्त' थीं। दोनों ही कदानियाँ  
का अलग-अलग महत्व था। जिस तरह 'हैरगाह',  
में पांवी और दादी के लीप का प्रेम धर्मिया था हम  
ही तरह 'नादन दोस्त' में कैशल और हयामा की नादान  
का कथा परिणाम लिकला विस्तार से समझाया है।  
यह दोनों ही कदानियाँ अपना-अपना अलग-अलग  
महत्व रखती हैं।

आप भले ही अक्षी हम दुनिया में हमारे उपर  
नहीं हैं पर आपकी कदानियाँ उपन्यास आज  
लोगों के दिलों में बसती हैं।

धन्यवाद  
मैं  
मानवी रावत  
नं० 'A'

मानवी रावत, सातवीं, अंजीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

नवम्बर-दिसम्बर 2025

DATE / / /  
Page No.

प्रिय लेखक मैंने आपकी लिखी कदानि

आई और मैं पढ़ी। कदानी बहुत आवृक्ष  
थी पर एक लड़की और उसकी माँ की कदानी है।  
माँ कैसर की मरीज है और कई दिन अस्पताल  
में दरा करकर घर लौटी है। माँ के सारे बात  
हीर गए हैं। लड़की अपनी माँ के लिए बहुत  
चिंता है। आटिकतर कदानिपी में माँ की बच्चों  
की चिंता और देखभाल करती है। जबकि इस  
में एक बच्चे की चिंता को दर्शाया गया है।  
मुझे भी आपनी माँ की बहुत चिंता रखती है। घर के  
कामों के अलावा ही तुकान भी देखती है। मेरे  
पापा फरदेश रहते हैं। माँ ही जारा देसाल कैताब  
रखती है। घर का यह चबाती है। और बाजार का

काम भी देखती है। मैं घर के कामों में उनकी  
मदद करती हूँ। फरन्चु भजी छोटी होने के काम  
भर्मी मुझे खाना बनाने नहीं देती।

इस कदानी के लिए शुक्रिया आपनी लिखी और  
कदानियाँ के बारे में मुझे बताइगा।

क्रान्ति काशा = 5

प्राथमिक नियालय धर्मपुर

बलधर्मपुर उत्तराखण्ड।

क्रान्ति, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

Date: .....

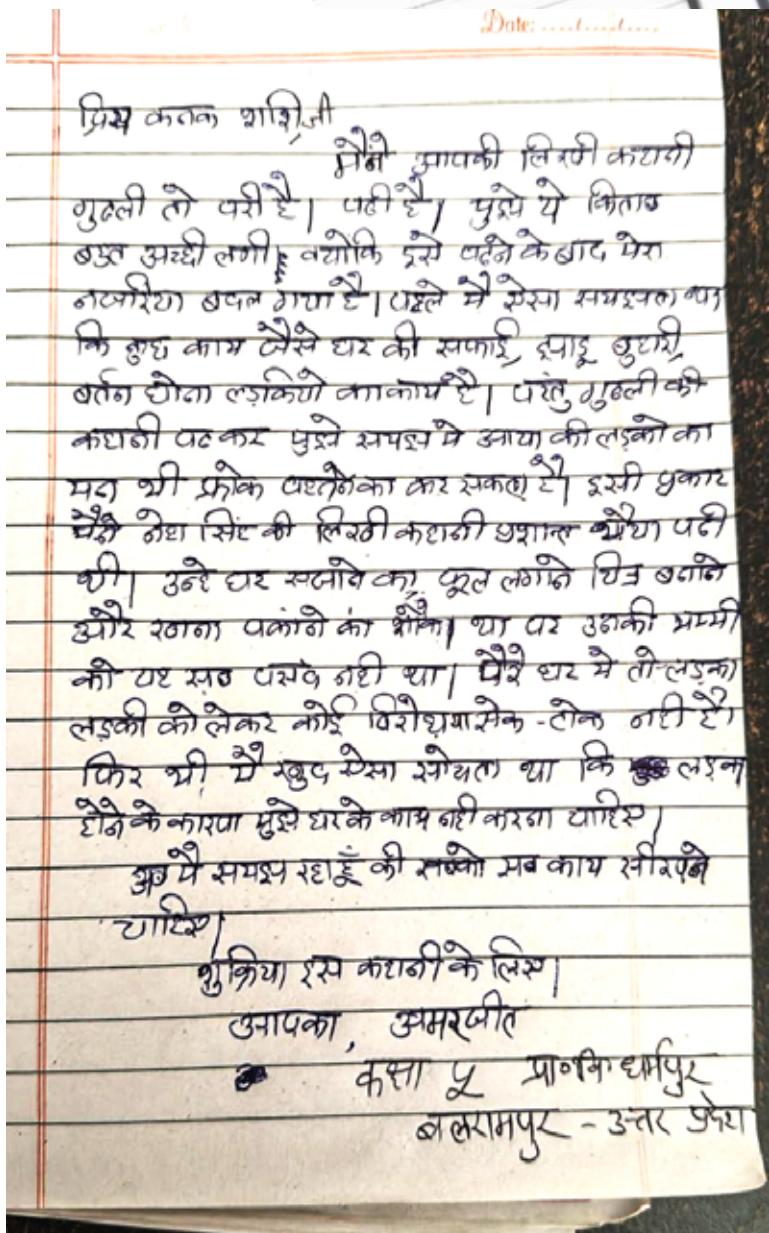
प्रिय कवाल शाकिजी

मैंने मातकी लिखी कहानी  
गुड़ली तो पसौरी, पहींदी, मुझे ये लिखाए  
छह उच्छी लगी, वयोंकि दूसे पहींदोंके हाथ मेरा  
नज़रीया हथल गाया है। पहले मैं इसा समझना चाहा  
कि हुए काम लैसे घर की सफाई राहु छुट्टी  
हर्ता ठोड़ा लड़कीया काकाप है। परेंगु गुड़लीकी  
कहानी बढ़कर मुझे समझ में आया की लड़कोंका  
मद भी फ्रीक वर्षोंका कर सकता है। इसी प्रकार  
चौंड़ी गेड़ा सिंट की लिखी कहानी उशान्तर चौंड़ा पढ़ी  
ही। उन्हें घर स्वामीका फूल लगाने हिंड उठाने  
और रठाना पकाने का थीं। या वह उड़ानी प्रभी  
की हठ स्वर पसंद नहीं था। पैदे घर से तो लड़का  
लड़की की लेकर नींद विशेषण सेक - लौल नहीं है।  
फिर भी उन्हें खुद मैसा सौबह था कि छुड़ा लड़न  
दौड़ोंके कारण मुझे घरके काम नहीं करना चाहिए।  
अब मैं समझ रहा हूँ की दस्तों प्रब काम सीरपड़े  
हाथ।

शुक्रिया इस कहानीके लिख।

अमरजीत

कस्ता पु प्राणभिधमपुर  
बलरामपुर - उत्तर प्रदेश



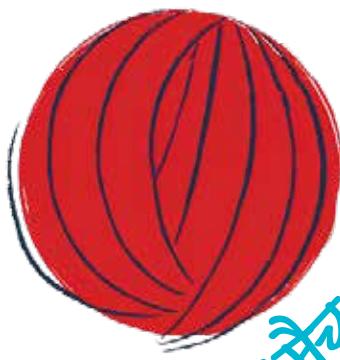
अमरजीत, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: सृष्टि रावत, पाँचवीं,  
अंजीम प्रेमजी स्कूल, मातली,  
उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड



चित्र: दिया असवाल, आठवीं, लक्ष्मी आश्रम,  
कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

संकेत



क्या भैंशा ने

## कबड्डी की खिलाड़ी

ज्योति मण्डल  
नौवीं, मंजिल संस्था, दिल्ली

# हटगढ़ और छम्यार के बीच मैच

भारत

बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय

छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

मेरा आज तक का सबसे रोमांचक मैच हटगढ़ और छम्यार के बीच वाला था। वह हमारा फाइनल मैच था। वह मेरी जिन्दगी का पहला मैच था। हमने इस टूर्नामेंट में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। सब हमारी तारीफ कर रहे थे। जब हमारा मैच हटगढ़ की टीम के साथ हुआ तो सभी लोग हटगढ़ की तरफ से शोर मचाने लगे। परन्तु हमने अपने अन्दाज़ में अपना मैच खुलकर खेला। दूसरी टीम को अपने ऊपर ओवर कॉन्फिंडेंस था। वे सोच रहे थे कि ये तो कमज़ोर टीम है। उन्होंने हमें चैलेंज दिया कि हम तुमसे बड़ी आसानी से जीत जाएँगे। हम हँसने लगे। हमने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। हम खूब अच्छा खेले और जीत गए। इससे हमें यह सीख तो जरूर मिली कि कभी भी किसी को हलके में नहीं लेना चाहिए।

मैं कबड्डी की खिलाड़ी हूँ। और कबड्डी की नेशनल टीम में भी खेलना चाहती हूँ। अभी रीसेंट की बात है। मेरी टीम खेलने गई थी और पहला मैच

चित्र: निहार वासुदेव हल्के, चौथी, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु



जीती थी। उसमें जो हमारे कोच थे उन्होंने हमें खूब साहस दिया और हमारा उत्साह बढ़ाया। पहला मैच हम बहुत आसानी से जीत गए थे। दूसरे मैच में ऐसा था कि जीतने वाला फर्स्ट आएगा और जो हारेगा वो दूसरे नम्बर पर आएगा। दूसरे मैच में हम बहुत अच्छा नहीं कर पाए। और इसलिए हम दूसरे नम्बर पर आए। लेकिन अच्छी बात यह है कि हमने टीमवर्क से खेला।

मेरा  
मन्त्र

## रोमांचक फुटबॉल मैच

विरेन

आठवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल  
पाढ़ा, करनाल, हरयाणा

मेरा  
मन्त्र

मैं आपको हमारे रोमांचक फुटबॉल मैच की ओर लेकर चलता हूँ। उस मैच में हमने 2 गोल मारे और दूसरी टीम ने भी 2 गोल मारे थे। तो हमें पेनल्टी का मौका मिला, जिसमें हमने शानदार प्रदर्शन किया। फिर भी हम जीते नहीं। मैच टक्कर का था। लास्ट में हमें एक गोल मारना था। पर हमारे एक साथी से गोल नहीं हुआ। परन्तु दूसरी टीम के बच्चे ने गोल मार दिया। हम हार गए परन्तु मैच बहुत रोमांचक था।

मेरा  
मन्त्र

## खो-खो

प्रिंसी यादव

आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

मेरा  
मन्त्र

एक दिन मैं मेरे विद्यालय के पास मैदान में खो-खो खेल रही थी। मैं बहुत फुर्ती से खो-खो खेल रही थी। तभी अचानक मैं अपनी दोस्त के ऊपर से गिरकर पलटी खा गई और नीचे गिर गई। तब मुझे तो हँसी आई पर दोस्त को रोना आ गया। तब वहाँ पर मेरी मैम नहीं थीं। तो मैंने अपनी दोस्त को समझाया और माफी माँगी। तब उसने रोना बन्द किया और होंठों पर थोड़ी मुस्कान लाई। फिर छुट्टी हो गई और वो हँसकर बतियाने लगी।

मेरा  
मन्त्र

## सुपर हीरोइन

काजल

नौवीं, समूह लक्ष्य, दिग्नन्तर स्कूल, जयपुर, राजस्थान

मेरे सुपर हीरो नहीं, बल्कि सुपर हीरोइन हैं। और वह हैं मेरी मम्मी। क्योंकि वे मेरी सारी बातें मानती हैं। मेरी गलतियों को सुधारती हैं और मुझे भी सुधारने के लिए कहती है। मैं चाहती हूँ कि जैसे मेरी मम्मी सुपर हीरोइन हैं, वैसे ही मैं भी एक अच्छी इन्सान बनूँ। वे खुद भी सफाई करती हैं और मुझे भी सिखाती हैं।

मनक  
मनक

### मेरी मौसी सुपरहीरो

मेरी मौसी मेरे लिए सुपरहीरो हैं।  
 मैं जो मौसी हूँ वो लाकू दीती हूँ।  
 वो मेरे से बड़त प्यार करती हूँ।  
 वो मेरे लिए स्टैशनरी लाती हूँ।  
 वो मुझे घुमाने ले जाती हूँ।  
 मैं अपनी मौसी के जाथ चक्कमक पढ़ती हूँ।  
 और मैं अपनी मौसी पर ट्रस्ट करती हूँ।  
 मैं यह कविता पढ़ती बार मिलती हूँ।



## सुपर हीरोइन

श्रेता बलसूनी

लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

मेरे सुपरहीरो मेरे पिताजी हैं। उन्होंने बचपन से ही बहुत संघर्ष किया है। मेरे पिताजी ने छोटे-छोटे कामों से आज बहुत बड़ी सफलता पाई है। मेरे दादाजी का देहान्त जब हुआ था तब मेरे पिताजी केवल नौ साल के थे। मेरे पिताजी ने खुद की व अपनी बहनों की शादी अपने दम पर की। पिताजी ने कड़ी मेहनत करके हमारे गाँव का एक फेमस स्थान बनाया।

मेरे गाँव मनकोट में पहाड़ी खाना बहुत फेमस है। इन सभी फेमस चीजों की शुरुआत मेरे पापा ने अपना ज्ञायका रेस्टोरेंट खोलकर की। मेरे पापा ने कभी हार नहीं मानी और हमेशा ज़रूरतमन्द लोगों की मदद की। मुझे मेरे पिताजी से बहुत प्रेरणा मिलती है। मैं अपने पापा के बारे में जितना भी कहूँ वह मेरे लिए कम ही है।

मनक  
मनक

### मेरी मौसी

दिव्या, तीसरी,  
अजीम प्रेमजी  
स्कूल, बाड़मेर,  
राजस्थान

**मेरी SUPER HERO हूँ मेरी प्यारी-मीममी।**  
 क्योंकि वह मेरे लिए खाना, त्यार करना,  
 पढ़ानी, सिखाती, कपड़े लाना, गुह्यकार्य में मद्दह  
 करती और मेरे कपड़े धोती यह भव कान  
 करती मेरे लिए भैंसी मम्मी। मेरी तो मेरी  
 मम्मी ही SUPER HERO हूँ, अब आप यह  
 जाइसे की आपकी /आपका SUPER  
 HERO कौन है? नाम- दिल्ला ठाकुर-डापु  
उम्र- ५ साल

## मेरी माँ हीरो

स्मिता उड़इके  
 आठवीं, शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला, जामुनडोल केसला,  
 नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

मेरी सुपरहीरो मेरी माँ हैं क्योंकि मेरी माँ मेरा ख्याल बहुत अच्छे से रखती हैं। मैं जब भी बीमार हो जाती हूँ तो मेरी माँ मेरा ध्यान बहुत अच्छे से रखती हैं। मेरे लिए मेरा मनपसन्द खाना भी बनाती हैं। मेरे लिए अच्छी-अच्छी चीज़ें भी लाती हैं। अगर मैं कभी कुछ गलती कर दूँ तो डॉट भी देती हैं। अगर मैं कभी गुस्सा हो जाती हूँ तो मुझे मना भी लेती हैं। मेरी माँ मुझे डॉटती भी हैं और प्यार भी बहुत करती हैं। मैं भी अपनी मम्मी से बहुत प्यार करती हूँ। इसीलिए वो मेरी सुपरहीरो हैं। रुको, रुको, एक बात और। अगर मुझे रात को डर लगता है तो मेरी माँ मेरे साथ सो जाती हैं।

## मेरे हीरो

दिया भट्ट  
 दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

मेरे लिए दो शख्स सुपरहीरो से भी बढ़कर हैं। वो मेरे सुपरहीरो अभी अप्रैल 2025 में ही बने। इसका कारण है मैं पहले बहुत गुस्सैल, लड़ाकू थी। उनके समझाने से मुझमें काफी फर्क आया है। मेरा दिमाग पढ़ाई में न होकर अन्य चीज़ों में था। जिनके कारण मेरा व्यवहार चिड़चिड़ा हो गया था। और मेरा स्वभाव भी एकदम अलग हो गया था। परन्तु दीक्षा दीदी व दिया दीदी ने मुझे जीवन जीना सिखाया। इन दोनों की मैं सदैव आभारी रहूँगी।





## फटाफट बताओ

क्या है जिसे पीसा जाता है, काटा जाता है, बॉटा भी जाता है पर खाया नहीं जाता

(निर्मल शर्मा)

काला हण्डा उजला भात  
ले लो भैया हाथों हाथ

(द्वाष्टमी)

दुबली पतली मेरी काया  
एक आँख की देखो माया  
धागे ने जब साथ दिया तो  
दो बिछड़ों को खूब मिलाया

(झूँझु)

मैं कटूँ मैं मर्लूँ,  
तुम क्यों रोते हो?

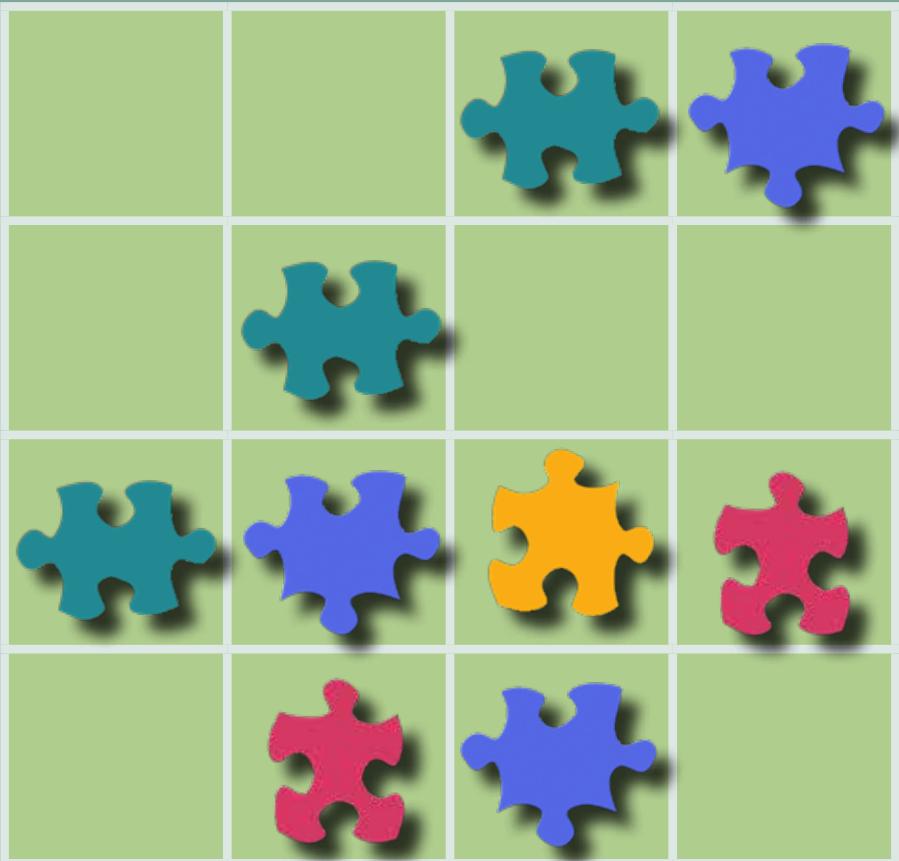
(द्वाष्टमी)

मैं सबको खिलाती हूँ पर  
खुद कुछ नहीं खाती हूँ।  
बताओ मैं कौन हूँ?

(ज्ञान)

क्या है जिसे बिना आग लगे  
भी बुझाना पड़ता है?

(द्वाष्टमी)



**11.** दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में पज़ल का अलग-अलग टुकड़ा आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से टुकड़े आएँगे?

**12.** तुम्हारे सामने तीन बक्से हैं जिनमें से किसी एक में खिलाने वाली कार है। तुम्हें पता करना है कि कार किस बक्से में है। तुम्हारी मदद के लिए तीनों बक्सों पर चिप्पी लगी हैं, लेकिन तीनों में से केवल एक ही चिप्पी सही है।



तुम कौन-से बक्से को खोलोगे?

## 13.

दी गई ग्रिड में कई सारी नदियों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

धा	गं	त	सो	का	चि	ना	ब	बा
ब	घ	वा	कृ	न	पे	का	ली	य
ता	स्ती	रा	ग	र्म	रि	वे	हु	मु
शा	चं	पा	गो	दा	व	री	सो	ना
सा	ब	र	म	ती	पा	को	सी	मी
पा	ल	गं	ती	शा	स्ता	हु	ग	ली
कृ	पा	ड	गा	को	झे	रा	व्या	म
जी	ष्णा	क	ना	सी	ल	जी	पा	स
पे	रि	या	र	ली	म	हा	न	दी

## 14.

बहुत ठण्ड थी। एक माँ और बेटे को नदी के दूसरे छोर पर जाना था। उनके पास दूसरी ओर जाने के लिए कुछ नहीं था। नदी पर पुल भी नहीं था। फिर भी वो दोनों उस पार चले गए। कैसे?

यह सवाल उत्तर प्रदेश के नोएडा के शिव नाडर स्कूल के चौथी कक्षा के छात्र वीर ने भेजा है।

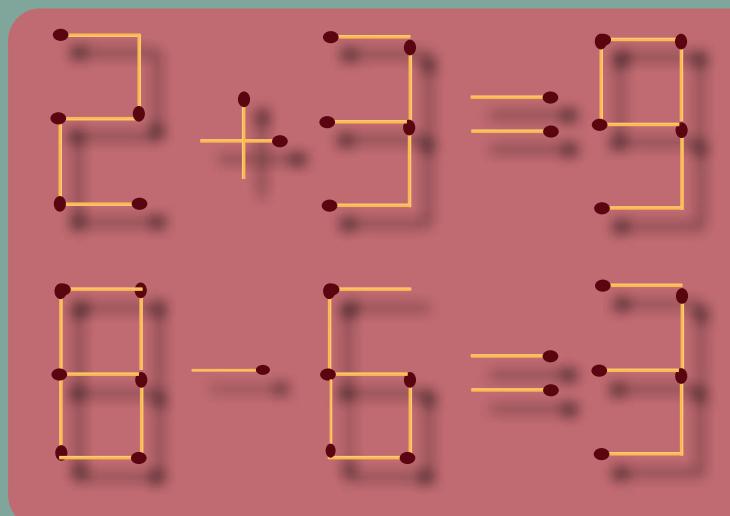
## 16.

एक दुकानदार के पास दस कॉपियाँ थीं। एक बच्चे ने चार कॉपियाँ खरीदीं। फिर एक और बच्चे ने दो कॉपियाँ खरीदीं। फिर पहले वाले बच्चे ने एक कॉपी वापिस की। बताओ अब दुकानदार के पास कितनी कॉपियाँ बचीं?

यह सवाल उत्तर प्रदेश के नोएडा के शिव नाडर स्कूल के छात्र कबीर रावत ने भेजा है।

## 15.

क्या तुम किन्हीं भी दो तीलियों को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही कर सकते हो?



## 17.

किसी भी और चिह्न का इस्तेमाल किए बिना इस समीकरण को सही करो।

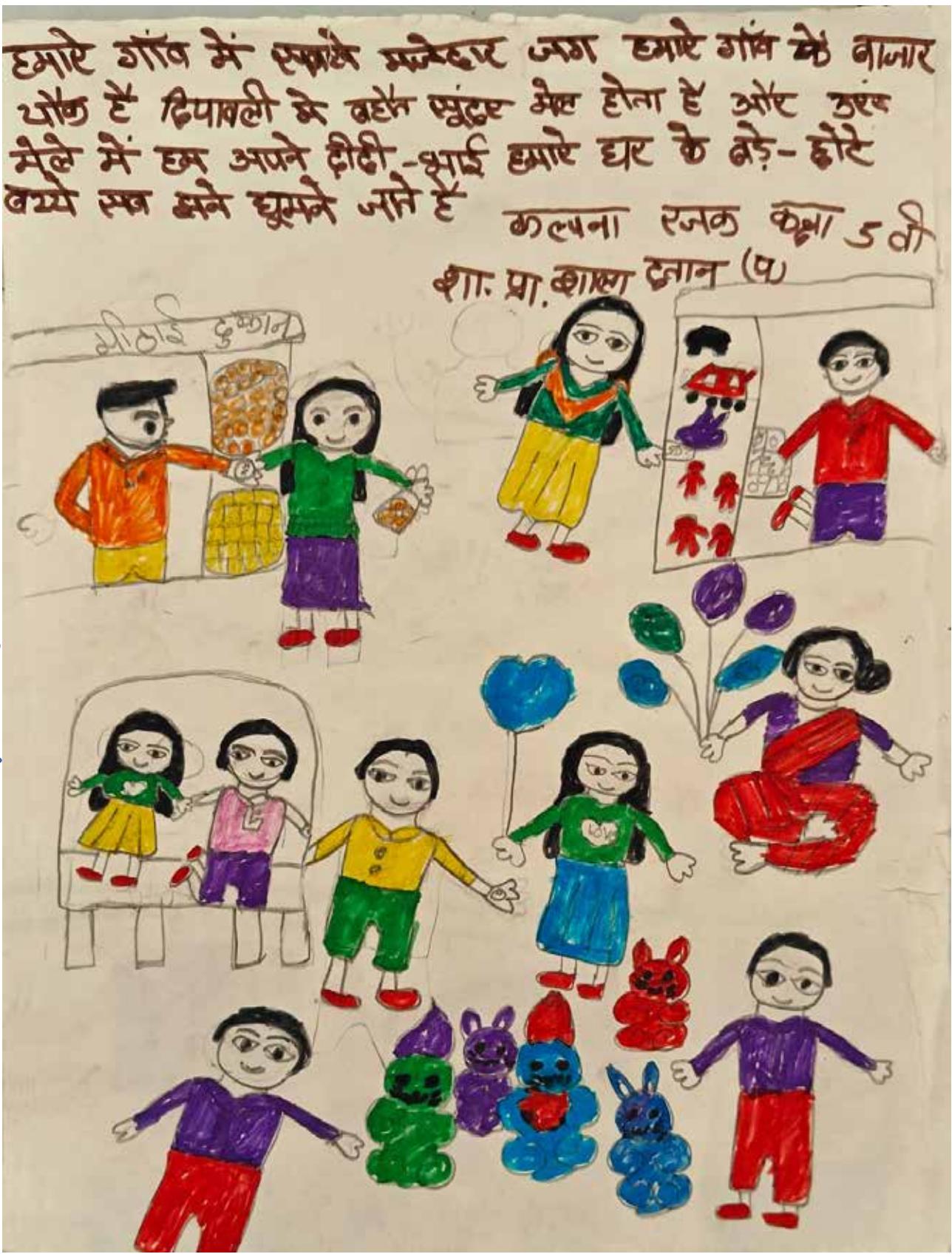
$$8 + 8 = 91$$

## 18.

क्या तुम केवल एक अंक इधर-उधर करके इस समीकरण को सही कर सकते हो??

$$26 - 63 = 1$$

◆ मन की पसंदीदा जगह ◆ मन की पसंदीदा जगह ◆



कल्पना रजक, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक शाला, दतान (प), बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़

# मज़ेदार जगह

छाया अहिरवार

चौथी, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, मरोड़ा  
केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

सबसे मज़ेदार जगह है हमारे गाँव का चबूतरा। वो हमें इसलिए अच्छा लगता है क्योंकि उस पर बहुत सारे लोग बैठते हैं। कुछ लोग वहाँ बैठकर बातें करते हैं तो कुछ सोते हैं। कुछ लोग वहाँ बैठकर अपने मोबाइल में पिक्चर देखते हैं। कुछ बच्चे भी उनके पास ही बैठकर पिक्चर देखते हैं। और जब ये लोग चले जाते हैं तो कुछ लड़कियाँ वहाँ डांस करती हैं। इसलिए वह जगह बहुत प्यारी लगती है।



# कोट पटियाल



प्रथम सिंह पटियाला

चौथी, रमण विद्यालय, महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी  
चंगलपेट, तमिलनाडु

मेरा गाँव कोट पटियाल पंजाब में ज़िला होशियारपुर के पास है। मेरा गाँव पहाड़ियों में बसा है जो कि बहुत खूबसूरत है। मेरे गाँव की मज़ेदार बात यह है कि इतने सालों में अभी तक वहाँ बस एक ही बस आती है। बारिश के दिनों में जो एक बस आती है वह भी आना बन्द हो जाती है। अभी तक भी लोग चूल्हे में खाना बनाते हैं और सब साथ में नीचे बैठकर खाना खाते हैं।



# गाँव के खेत

प्रज्ञा

समूह इन्ड्रधनुष, दिग्नन्तर विद्यालय, जयपुर, राजस्थान

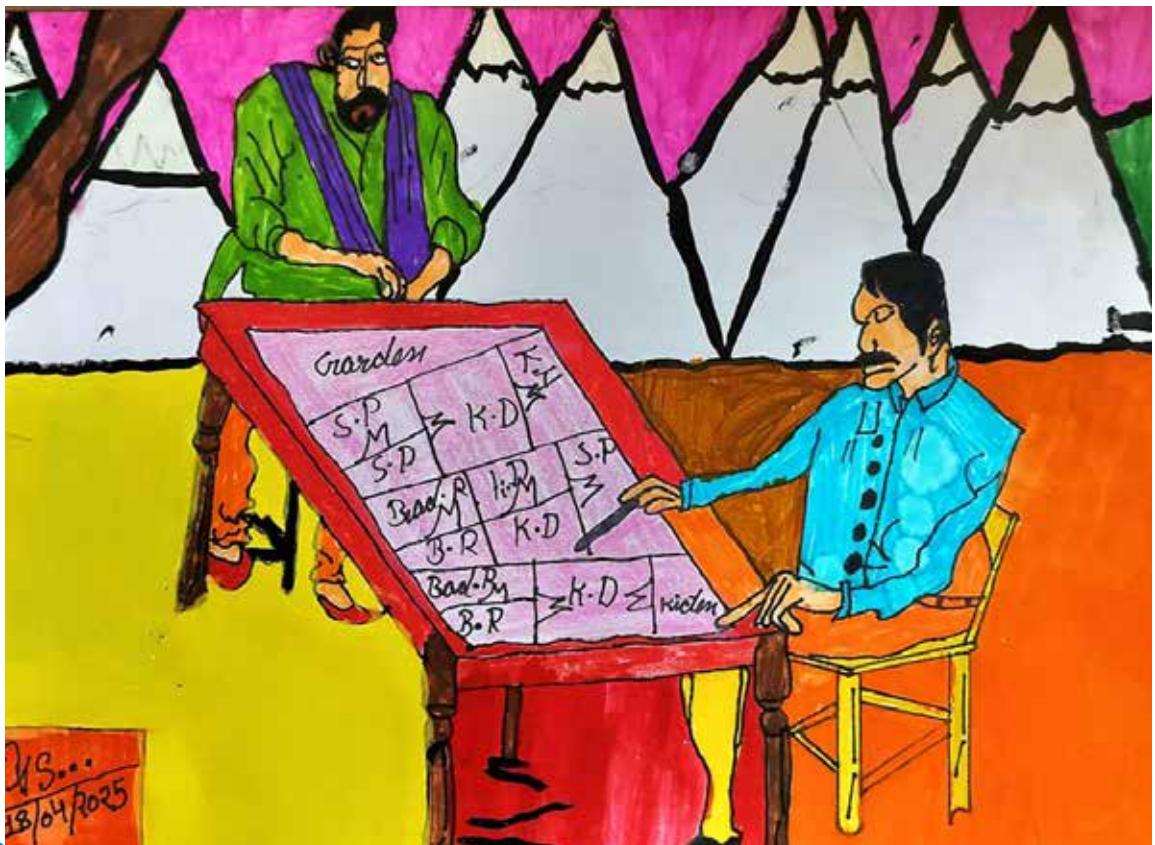
मेरी सबसे मज़ेदार जगह गाँव में एक खेत है जो मुझे बहुत अच्छा लगता है। क्योंकि मैं जब छोटी थी तो मैं गाँव गई हुई थी। तो मैं रोज़ मेरे दादाजी और सारे भाई-बहन के साथ खेत पर जाती थी। खेत पर ठण्डी-ठण्डी हवा चलती थी। वह बहुत अच्छी लगती थी। मैं और मेरे भाई-बहन भागने की प्रतियोगिता करते, पकड़ा-पकड़ा खेलते। कभी-कभी हम दादाजी से उनके बचपन की बातें करते और पापा क्या शरारत करते थे उनके बारे में पूछते। दादाजी बड़े ही मज़े-से हमको सुनाते थे।

गाँव के खेत के पास एक बगीचा था। उस बगीचे में बहुत सुन्दर फूल थे, जैसे कि सूरजमुखी, गुलाब, चमेली। हम फूल के बगीचे के मालिक से अनुमति लेकर खेलते थे। खेत में हरियाली-हरियाली थी। एक दिन अचानक मैंने उस खेत में एक मोर देखा। वह बहुत सुन्दर था। इससे पहले मैंने कभी भी मोर नहीं देखा था। मैं उसे देखती ही रह गई। अब मेरी सबसे प्यारी चीज़ है मोर। मोर की आवाज़ भी मुझे बहुत अच्छी लगती है। लेकिन वह आवाज़ समय-समय पर मुझे खेत पर ही सुनने को मिलती है। शाम होती है तो मोर की मधुर आवाज़ आती है। आज भी मैं जब भी गाँव जाती हूँ तो मोर को अवश्य देखती हूँ और उसकी आवाज़ सुनने का इन्तज़ार करती हूँ।



एक जैसे  
दिखने  
वाले इन  
दोनों चित्रों  
में नौ से  
ज्यादा  
अन्तर हैं,  
तुमने  
कितने  
दृढ़े?

## अन्तर अन्युय



चित्र: तेजस, छठवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, पाढ़ा, करनाल, हरयाणा



चित्र: जियांश देसाई, तीसरी, बाल भवन, वडोदरा, गुजरात

# गुड़िया का परिवार



सनंदा एल. और निकिता एस.  
छठवीं, रमणा विद्यालय, महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी  
चंगलपेट, तमिलनाडु

## जुगाड़

लकड़ी या प्लास्टिक की चार चम्मचें, ऊन (सफेद और काले रंग का), लाल और काला मार्कर, रंगीन और काला मोटा पेपर, रूई, फेवीकॉल, सजाने के लिए मोती या सितारे



लकड़ी या प्लास्टिक की चार साफ सफेद चम्मच लें। लाल और काले मार्कर से चारों चम्मचों पर आँख, कान, नाक बनाएँ। दादा-दादी के चेहरे पर सफेद बालों के लिए रूई चिपकाएँ। गुड़िया के बालों के लिए एक काला चार्ट लें। इसे काटें और बालों की जगह पर चिपका दें। सफेद ऊन से दादी की चोटी और दादा की दाढ़ी-मूँछ बनाएँ। काले ऊन से गुड़िया की चोटी और गुड़डे की दाढ़ी-मूँछ बनाएँ। कुछ रंगीन कागज लें और गुड़िया के परिवार के लिए ड्रेस बनाएँ। ड्रेस पर कुछ मोती या सितारों से सजावट करें। अब हमारी गुड़िया का परिवार तैयार है।



तुम  
भी

## एप्पाना उबाजे का विद्या

हमने मटुआ उडाया और खुरवा दिया  
खुरवा के बाद साफ कर दिया  
और चुल्हा लिया और कड़ाई रखा कड़ाई  
गम्भीर के बाद मटुआ को चुड़ा लिया  
और हमारा घोया बन गया।

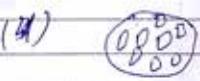
(i)



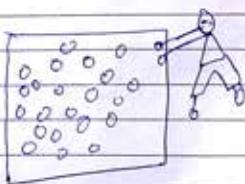
137



(ii)



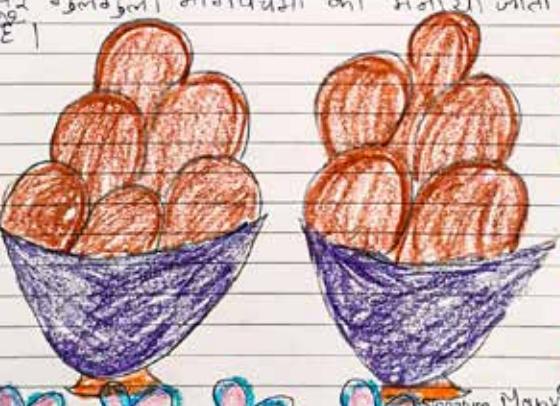
(2)



विकास कुमारे, नौवीं, कोटमीमाल, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

## मीठा गुलगुला पकवान

गुलगुला एक चीज़ा पकवान है जो बाजार में  
नहीं मिलता है गुलगुला चीनी, रस्सी, आटा की  
बहुत ही गुलगुला तो अच्छी पर्सी होता।  
क्योंकि वो मीठा होता है जब भी ढाना  
जाता है तब ये छत-छत-छत होता है  
और भूजे इसकी आवाजे बहुत अच्छी लगती है।  
ये बच्चों का मनमस्तुत भी होता है।  
बच्चे ये बड़े गति से खाते हैं और इसे खाना  
तो बहुत दोग खाते हैं क्योंकि उन्हें नरम रसम  
खूब न हो जाने के लिए इसका गरम रसम  
को गरम कर डाला दोनों हाथों के बीच में रखा जाने  
का जान करता करता है। मेरे घर ब्यास तो ऐसे  
पर गुलगुला नारायणी की मजाका जाती  
है।



## पंजीयी की रेसिपी

पंजीयी काँजे के लिए अब यह तरह मैंहूँ जो बढ़ा  
देंगे ऐसा हम जान करने चाहे जो यह तरह  
बनाएंगे जब तक जान लेने चाहे यह का दो वाष्णव  
और फिर एक नलाई में बाजी लगाएंगे। तब  
पासलों कनकर टैंपार हो जायेगी तब हम उभयों  
गालू, बालाम, गिरपीश, दुआरे और गालों  
को चोककर जारलों में लगाएंगे और मूला हुमा  
जाला दी जानकर पावी को फैसला करते जाएंगे।  
तब अच्छे ये स्पृश हो जायेगा तो फिर हमारी  
पंजीयी कनकर टैंपार हो जाएगी।

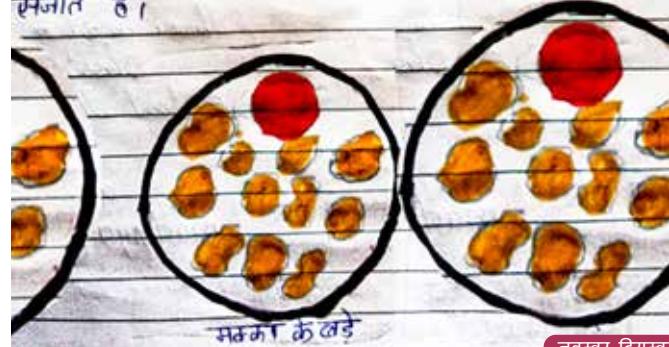
नाम- नवजोत कौर  
नवजोत कौर, सातवीं, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल  
नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड



हर्षिता कहार, सातवीं, शासकीय माध्यमिक कन्या  
शाला, कलाआखर, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

ऐप्पीपी-मक्का के लड्डे।  
सामग्री- भाज पिंडी, बनीया, माला, तेल, मक्का

उनाने का तरीका- मक्का जो किनीने हैं किर मिकी में  
पीसते हैं और फिर उसके एक ग्राही में उपा करे हैं  
फिर उसमें मणाल, कटी वाज, कटी पिंडी, लालीरा को  
मिक्स करके तेल में डालते हैं और फिर पकाकर के  
लिए लगते हैं फिर उसके एक ग्राही में बिलानाला मसाज  
एनाते हैं।



मक्का के लड्डे





क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:  
क्या कभी तुम्हें रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड  
पर लम्बे समय तक इन्तजार करना पड़ा  
है? इस दौरान तुमने क्या-क्या देखा? क्या  
अच्छा लगा और क्या बुरा, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

## अगले अंक का सवाल है:

कुछ लोग चीजें दूसरों के साथ  
आसानी से बाँट लेते हैं, जबकि कुछ  
को यह मुश्किल लगता है — ऐसा  
क्यों होता होगा?

तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम  
लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें  
merapanna.chakmak@eklavya.in पर  
ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर  
हॉटसर्व भी कर सकते हो। चाहे तो डाक से भी  
भेज सकते हो। हमारा पता है:

ਖਕਮਕ

एकलव्य फाउंडेशन,  
जमनालाल बजाज परिसर,  
जाटखेड़ी, फॉर्मून कस्तूरी के पासः  
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

हाँ, मुझे बहुत इन्तज़ार करना पड़ा है बैंगलुरु के स्टेशन पर। मैं सुबह आठ बजे से रात के ग्यारह बजे तक वहाँ बैठी रही। इस दौरान लोगों की भीड़, भाग-दौड़, बच्चों की हरकतें और चाय-समोसे की खुशबू देखने को मिली। अच्छा यह लगा कि अलग-अलग लोग एक जगह मिलते हैं, लेकिन बुरा यह लगा कि बहुत शोर और गन्दगी थी। कुल मिलाकर अच्छा और बुरा दोनों अनुभव हुए। वहाँ बैठकर मैंने कई बार किताब पढ़ने की कोशिश की और अनाउंसमेंट्स बार-बार सुनकर थक भी गई।

सेहज त्यागी, सातवीं, दिल्ली पब्लिक स्कूल, एचआरआईटी कैम्पस,  
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश



क्यों क्यों क्यों क्यों  
क्यों क्यों

एक दिन मैं बस स्टैंड पर खड़ा था। वहाँ मैंने एक दुकान में बहुत सारे पकवान देखे और मेरे मुँह में पानी आ गया। मेरे पास तीस रुपए थे, तो मैंने तीस रुपए की जलेबी ले ली। मेरे दोस्त के पास भी पैसे थे, उसने चार समोसे लिए। हमने साथ बैठकर खाए और हमें बहुत मज़ा आया। थोड़ी देर बाद हमने देखा कि एक कुत्ते की पिछली दोनों टाँगें टूटी हुई थीं और वह इधर-उधर खाना ढूँढ़ रहा था। लेकिन हमारे पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं था, तो हमें बहुत बुरा लगा।

कहैया कुमरे और विरेक कुमरे, आठवीं, शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला, कोटमीमाल, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश



चित्रः शोएब एवं मुख्तार, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

गर्भियों की छुटियाँ आ गई थीं। हमने सामान बाँधा और चल पड़े चाची के घर जाने के लिए। हम स्टेशन पर पहुँचे तो पता चला कि ट्रेन दो घण्टे लेट थी। एक बारी को तो हम उदास हो गए। लेकिन फिर मैं खुश हो गई क्योंकि मुझे चीज़ों को देखकर उनके बारे में सोचना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मैंने मम्मी से पूछा, “मैं स्टेशन घूम लूँ?” मम्मी ने कहा, “घूम ले। लेकिन समय से आ जाना।” मैंने स्टेशन पर देखा कि एक छोटा लड़का लकड़ी बजाकर पैसे माँग रहा था। मुझे यह बात बहुत बुरी लगी। सबसे मज़ेदार बात थी कि स्टेशन पर दो औरतें लड़ रही थीं। उन्हें देखकर मुझे बहुत हँसी आई क्योंकि वो दोनों एक-दूसरे के बाल पकड़कर लड़ रही थीं। फिर मुझे एक आइसक्रीम वाला दिखा। मेरा थोड़ा मन तो किया कि आइसक्रीम खा लूँ, लेकिन मैं पैसे लेकर नहीं गई थी। थोड़ा आगे जाने पर मुझे किताबों की एक दुकान दिखी। वहाँ पर बहुत अच्छी किताबें थीं। मैंने सोचा अगली बार मैं ज़रूर यहाँ से किताब लूँगी। इतने में मम्मी ने आवाज दी कि ट्रेन आने वाली है। और मैं वहाँ से चल दी।

दीपा, पाँचवीं, उमंग स्कूल, गन्नौर, सोनीपत, हरयाणा

मैं जब अपने परिवार के साथ भोपाल से अजमेर जा रहा था तब ट्रेन लेट होने के कारण हमें इन्तज़ार करना पड़ा। तब मैंने बहुत-सी चीज़ें देखीं। जैसे कि शराब पिए हुए लोग, स्टेशन पर सोए हुए लोग, रेलवे स्टेशन पर लगी हुई दुकानें, वहाँ की साफ-सफाई। मुझे वहाँ नशे की हालत में लोगों को देखकर बुरा लगा और वहाँ की साफ-सफाई देखकर बहुत अच्छा लगा।

महफूज़ खान, नौवीं, सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख लाइब्रेरी, भोपाल, मध्य प्रदेश

क्यों क्यों क्यों  
क्यों क्यों



एक दिन जब मेरी मैं, मेरी बहन और मम्मी ननिहाल जा रहे थे तो हमारी बस छूट गई। फिर अगली बस 1 घण्टे बाद थी। तो मुझे बुरा लगा क्योंकि बस स्टैंड बहुत गन्दा था। वहाँ पर कचरा भी था। फिर मेरी मासी और भाई आ गए। हमने उनसे बातें कीं जैसे कि बस कैसे छूट गई। तो मैंने बताया कि हम देर से पहुँचे। इतने में दो बच्चे आगे निकल गए। फिर हमने उन बच्चों की मम्मी को ढूँढ़ा। फिर हमने माज़ा जूस पिया। और जब हम चौहटन पहुँचे तो वहाँ हम अपनी जान-पहचान वाले के हैंडलूम की दुकान गए। दुकान का नाम जसनाथ हैंडलूम था। उन्होंने हमें जूस पिलाया और कचौड़ियाँ खिलाईं। फिर पन्द्रह मिनट में बस आने वाली थी तो हमने जनता स्वीट्स से आइसक्रीम ली और बस में जाते-जाते खाई।

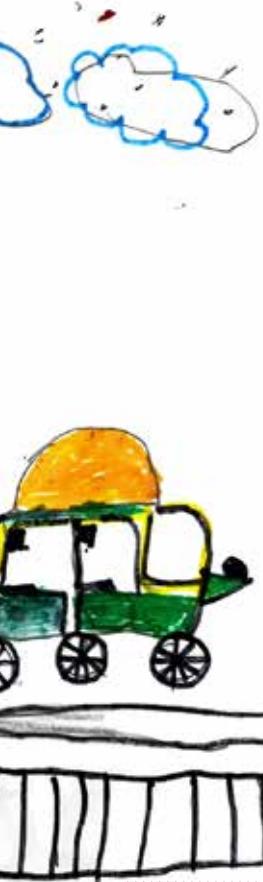
यश, नौ साल, अञ्जीम प्रेमजी स्कूल  
बाड़मेर, राजस्थान



चित्र: शांभवी, पहली 'ए', बिलाबॉन्ग हाई इंटरनेशनल स्कूल, वडोदरा, गुजरात

मैं एक बार बस स्टैंड पर बस का दो घण्टे इन्तज़ार की थी। तो मैंने देखा वहाँ पर छोटे-छोटे बच्चे बस स्टैंड में भीख माँग रहे थे। यह देखकर मुझे बुरा लगा। और वहाँ पर एक तालाब है जो बहुत गन्दा था। उससे बहुत बदबू आ रही थी। वहाँ पर मैंने बहुत सारी बस देखीं और चारों ओर दुकानें भी देखीं। एक बूढ़ी दादी अम्बिकापुर में धूमती रहती हैं। उनके शरीर पर एक भी कपड़े नहीं थे तो मुझे बुरा लगा देखकर।

दुर्गा, सातवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, परसा, छत्तीसगढ़



पिछले साल मैं बस से अपने नाना-नानी के घर गई थी। फलटण से पुणे जाने वाली बस को आने में देरी होने वाली थी। इस वजह से हमें स्थानक पर तीन घण्टे रुकना पड़ा था। मेरी उम्र के यात्राओं के अनुभवों की तुलना में यह समय बहुत ही लम्बा था। इस दौरान मैं बहुत ही बोर हो गई थी। परन्तु इन्तज़ार करने के अलावा मेरे पास कोई चारा भी न था। तो मैं थोड़ी देर अपनी बहन के साथ बात करने लगी। परन्तु मैं बात करती तो कितनी देर। आधे घण्टे बाद हम चुप बैठ गए। तब मेरी नज़रें आसपास मँडराने लगीं। मेरे आसपास बहुत किस्म के इन्सान, औरत, बच्चे-बड़े, बुजुर्ग थे। कोई हमारी तरह ही बस का इन्तज़ार कर रहा था। कोई दूसरी बस में चढ़ रहा था, तो कोई

मुझे बस स्टैंड पर लम्बे समय तक इन्तजार करना पड़ा है। इस दौरान मैंने देखा कि एक व्यक्ति ने गरीब व्यक्ति की मदद की जिसे देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। क्योंकि वह गरीब व्यक्ति की मदद कर रहा था। और देखा कि एक औरत सब्ज़ी बेच रही थी उसकी सब्ज़ी कोई ले नहीं रहा था। जिसे देखकर मुझे बहुत बुरा लगा क्योंकि वह औरत धूप में सब्ज़ी बेच रही थी लेकिन उसकी सब्ज़ी कोई ले नहीं रहा था।

राधिका यादव, आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला,  
जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

उत्तर रहा था। परन्तु वहाँ मुझे कई ऐसे भी लोग दिखे जो अपने बाल-बच्चों सहित स्थानक पर ही अपना घर जमाए बैठे थे। रोज़गार का कोई साधन उपलब्ध न होने की वजह से वे उस हालात में जी रहे थे। उनके पास ना तो पैसे थे, ना ही अन्न और ना ही सर के ऊपर छत। उनके लिए तो जमीन गद्दा और आसमान चद्दर।

कुछ समय बाद एक वृद्ध महिला मुझे दिखाई दीं। वे एक हाथ में लाठी सँभालते हुए लोगों से भीख माँग रही थीं। उनके साथ एक छोटा पोता भी था। उस छोटे बच्चे के मन में गरीबी से उबरने की जिद थी। आगे की दुनिया का कोई अन्देशा न होने वाला वह लड़का अपनी दादी को सभी सुख देने का सपना रखता है। यह बात मझे अच्छी लगी।

प्रज्ञा शहा, नौवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मैं कभी रेलवे स्टेशन तो नहीं गई पर बस स्टैंड गई हूँ। मैंने वहाँ इन्तजार भी किया था। वहाँ पर से बहुत सारी बस निकलीं, पर रुकी नहीं। पता नहीं, क्यों। शायद वह भरी हों। वहाँ भीड़ थी। बस पकड़ने के चक्कर में लोग एक-दूसरे को धक्का दे रहे थे। यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी। और एक बूढ़ी दादी थीं जो बस पर चढ़ नहीं पा रही थीं। उनकी एक ने मदद की। यह बात मुझे अच्छी लगी।

भूमिका राना, पाँचवीं, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल,  
नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

# फिल्मी

## डॉक्टर स्ट्रेंज इन द मल्टीवर्स ऑफ मैडनेस



निर्देशक: सैम रैमी

निर्माता: केविन फिंगे

रिलीज़: 6 मई, 2022

सत्यम कुमार  
नौवी, किलकारी बिहार बाल भवन  
पटना, बिहार

कभी सोचा है अगर जादूगर, चुड़ैल और टूटी हुई हकीकत को एक ही कढ़ाही में डालकर हिलाया जाए तो क्या बनेगा? इसका जवाब है – डॉक्टर स्ट्रेंज इन द मल्टीवर्स ऑफ मैडनेस। एक ऐसी फिल्म जहाँ दिमाग कहता है, “बस भाई!” और दिल कहता है “एक बार और!” इस फिल्म में हकीकत छुट्टी पर जाती है और कल्पना पागल हो जाती है।

बेनेडिक्ट कम्बरबैच यहाँ फिर से जादू बुनते हैं – पर इस बार उनकी लड़ाई किसी खलनायक से नहीं, बल्कि पूरे मल्टीवर्स से है। हर यूनिवर्स का दरवाज़ा खुलता है और हर दरवाज़े के पीछे पागलपन की एक नई दुनिया खड़ी है। कभी आँखों के रंग बदलते हैं, कभी ज़मीन हवा में उड़ती है, और कभी आपको लगता है कि स्क्रीन ही अब जादू कर रही है। एलिज़ाबेथ ऑल्सन ने इस रोल में वो दर्द भरा है जो सीधा दिल चीर देता है। वो माँ है, पर वो चुड़ैल भी है – और जब माँ रोती है तो पूरा ब्रह्माण्ड काँपता है। उसका हर आँसू एक धमाका है, हर मुस्कान एक जादू। वो खलनायिका नहीं, वो भावनाओं का तूफान है।

डायरेक्टर सैम रैमी ने इस फिल्म को ऐसे बनाया है जैसे कोई भूतिया कॉमिक बुक ज़िन्दा हो गई हो। कहीं हॉरर के झटके हैं, कहीं सुपरहीरो की चमक और बीच-बीच में ऐसे सीन कि लगे “ये हुआ क्या अभी?” मैं इस फिल्म में एक भी बदलाव नहीं चाहता। क्योंकि डॉक्टर स्ट्रेंज इन मल्टीवर्स ऑफ मैडनेस फिल्म नहीं, बल्कि एक अनुभव है। एक ऐसा जादू जो अगर जरा भी छेड़ दो, तो अपनी चमक खो दे। हर ट्रिवर्स्ट, हर डर, हर आँसू और हर जादुई चिंगारी अपनी जगह पर बिलकुल परफेक्ट है। यह फिल्म पागलपन और खूबसूरती का ऐसा संगम है जहाँ गलती की भी गुंजाइश नहीं, क्योंकि कुछ चीज़ें अधूरी नहीं होतीं – वो बस जितनी हैं, उतनी ही जादुई होती हैं।



यह फिल्म हमें यह सिखाती है कि हर ताकत की एक कीमत होती है और हर शक्ति के साथ ज़िम्मेदारी और त्याग जुड़ा होता है। सच्चा प्यार किसी को बाँधने में नहीं, बल्कि छोड़ने में है – जैसे वांडा अन्त में समझती है कि अपने बच्चों के लिए मल्टीवर्स तोड़ना सही नहीं। यह फिल्म यह भी दिखाती है कि हर इन्सान के अन्दर थोड़ी 'मैडनेस' यानी पागलपन होता है, लेकिन अगर उसे सही दिशा दी जाए तो वही हमारी सबसे बड़ी ताकत बन जाती है। चाहे कितनी भी दुनिया या हालात क्यों न बदलें, अगर दिल सच्चा और इरादे साफ हों, तो हम हर जगह अपनी पहचान बना सकते हैं। डॉक्टर स्ट्रेंज हमें शक्ति और विनम्रता का सन्तुलन सिखाते

हैं – सब कुछ कर पाना और सब कुछ करना, दोनों में बड़ा फर्क है। कुल मिलाकर, यह फिल्म हमें बताती है कि कभी-कभी थोड़ा पागल होना ज़रूरी है, क्योंकि वही पागलपन हमें सीमाओं से परे सोचने, सपने देखने और खुद को पहचानने की हिम्मत देता है।

यह सिर्फ एक फिल्म नहीं, एक अनुभव है – ऐसा अनुभव जहाँ दिमाग खो जाता है, दिल जीता जाता है, और आपको समझ आता है कि 'मैडनेस' असल में कितनी खूबसूरत हो सकती है।

नवम्बर-दिसम्बर 2025

◆ मन की पसंदीदा जगह ◆ मन की पसंदीदा जगह

नाम - मोहिनी शर्मा  
छाता - ५ वीं

इधेरे गाँव या राष्ट्र की सर्वोन्मत्ता भजेदार जगह है।



यह एक मंदिर है। वहां पर ०८ बुखारों की  
भिन्नी वरणी है जो भक्त पुण्यकुरुप्रसाद भी  
ले कर भिन्नी का उपयोग करते हैं। और यहां

मोहिनी शर्मा, चौथी, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, गजपुर, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

# घर की छत

वर्षा

बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय  
छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

हमारे गाँव के बीच में एक घर है। उस घर की छत पर रहना मुझे बहुत अच्छा लगता है। क्योंकि उस घर की छत से हमारी पाठशाला तथा इधर-उधर का नज़ारा देखने में बहुत आनन्द आता है। उस घर की छत पर अगर कोई भी दिख गया तो सब वहाँ पर इकट्ठे हो जाते हैं और बातें करते हैं। बातें करते-करते कभी तो अँधेरा भी हो जाता है। लाइट बन्द करके हम सभी अपनी-अपनी या डरावनी कहानियाँ सुनाने लगते हैं। उन कहानियों को सुनते समय यदि कहीं पर ज़रा भी आवाज़ हो जाए तो सभी थर-थर काँपने लगते हैं। तभी बड़ा भाई बोलता है, “अरे! कुछ नहीं, यह तो कुत्ता है।” घर से फोन आता है कि खाना खाने के लिए आ जाओ। परन्तु घर जाने वाला रास्ता थोड़ा सुनसान है। घर जाने में डर लगता है। जो भी वहाँ पर बैठा होता है मैं उनसे बोलती हूँ कि मुझे घर छोड़ दो। ये सारी बातें सुनने में डर भी लगता है और मज़ा भी आता है। इसलिए उस घर की छत पर रहना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

मृग  
मङ्क

# रीडिंग प्लाज़ा

प्राजक्ता काकड़े

आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मेरी पसन्दीदा जगह है स्कूल का रीडिंग प्लाज़ा। हमारे सारे सीक्रेट इस रीडिंग प्लाज़ा को पता हैं। जो भी बात हो हम उधर ही जाते हैं। वहाँ बैठते हैं और बातें करने लगते हैं। वो हमारी सारी बातें छुप-छुपकर सुन लेता है। ना जाने कितने सीक्रेट्स होंगे उसके पास। मन करता है पूँछ लूँ उसे सारे सीक्रेट्स। पर क्या करूँ वह तो बोल ही नहीं सकता है।

मृग  
मङ्क

# पिपरा का बड़ा पेड़

सुमन

अपना स्कूल, देहुपुर कानपुर, उत्तर प्रदेश

हमारे मोहल्ले में पिपरा का एक बड़ा पेड़ है। वहाँ एक छोटा-सा मैदान व कुआँ भी है। वहाँ हम सब बच्चे खेलते हैं। और प्यास लगती है तो बाल्टी और रस्सी से पानी भरकर पी लेते हैं। कुएँ का पानी बहुत ही ठण्डा रहता है। दोपहर में मोहल्ले के सभी लोग वहाँ आराम करते हैं। वह जगह मुझे बहुत मज़ेदार लगती है। क्योंकि वहाँ गर्मी नहीं लगती है और ठण्डी हवा और पानी भी मिलता है।

मृग  
मङ्क



4

बाएँ से दाएँ →  
ऊपर से नीचे ↓

# चित्र पहेली



दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? परं ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।



2		9			3		
6	7	8				2	
5				7	6		8
	6	1	7		2	3	
4	5		3				
3							8
7	8	5		2		1	3
	2		8	7		4	9
4	3	1		5	8		

सुडोकू 91



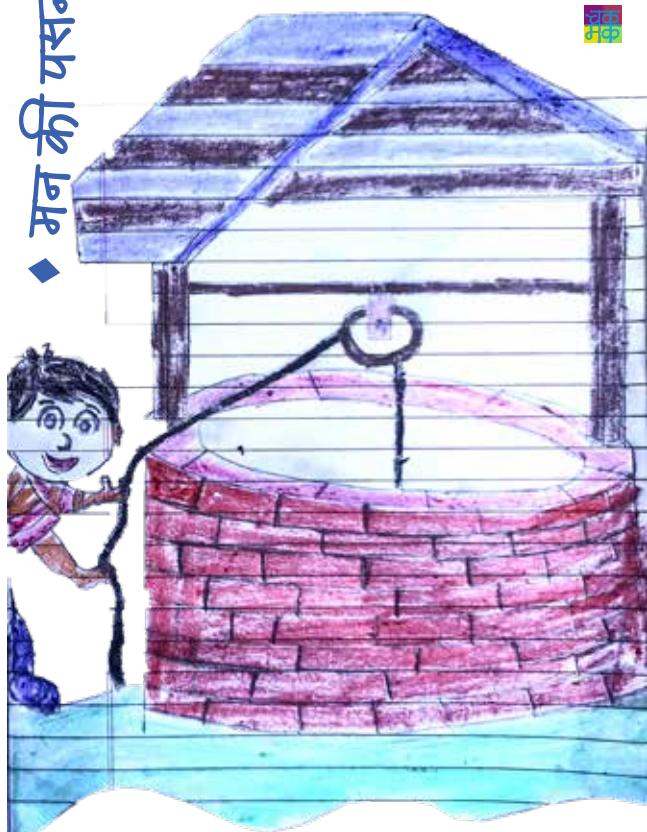
## एक मैदान

नगमा

निरन्तर संस्था, पेस सेंटर, दिल्ली

मेरी नानी के घर के बराबर में एक मैदान है। मुझे सबसे ज्यादा मज़ा वहाँ आता है। क्योंकि वहाँ सब खेलते हैं। छोटे से बड़े तक सब। और ये जो मैदान है इसके पास एक नल है। जब हम मज़े करते-करते थक जाते हैं तो उसी के पास जाकर पानी पीते हैं। और पानी पीते-पीते मज़े में एक-दूसरे के ऊपर पानी डालने लगते हैं। हमारी नानी के घर पर किसी चीज़ की रोक-टोक नहीं है। मुझे अपनी नानी के घर जाना बहुत पसन्द है। और मैं इन्तज़ार करती हूँ नानी के घर जाने का।

मुझे  
मुझे



## छत्रपाल पहलवान ढाबा

स्नेहा कलमे

आठवीं, शासकीय एकीकृत हाई स्कूल, केसला, मध्य प्रदेश

**छत्रपाल पहलवान ढाबा:** मेरा घर अब गली या मोहल्ले में तो नहीं है, मेरा घर है गाँव से बाहर। मेरे घर के बगल में एक ढाबा है। ढाबे का नाम है 'छत्रपाल पहलवान ढाबा'। वो हमारे इधर का एक तरह से प्रसिद्ध ढाबा है। वहाँ पर बहुत भीड़ रहती है। वहाँ खाना भी बहुत अच्छा बनता है। वहाँ पर एक डॉग भी है। आपकी भाषा में कहूँ तो एक कुत्ता भी है। अब मुझे उसका नाम याद नहीं है। वहाँ के लोगों का व्यवहार भी अच्छा है। वहाँ शाकाहारी और माँसाहारी दोनों प्रकार का भोजन मिलता है। पहलवान ढाबा की यात्रा अब समाप्त होती है।

मुझे  
मुझे

## एक कुआँ

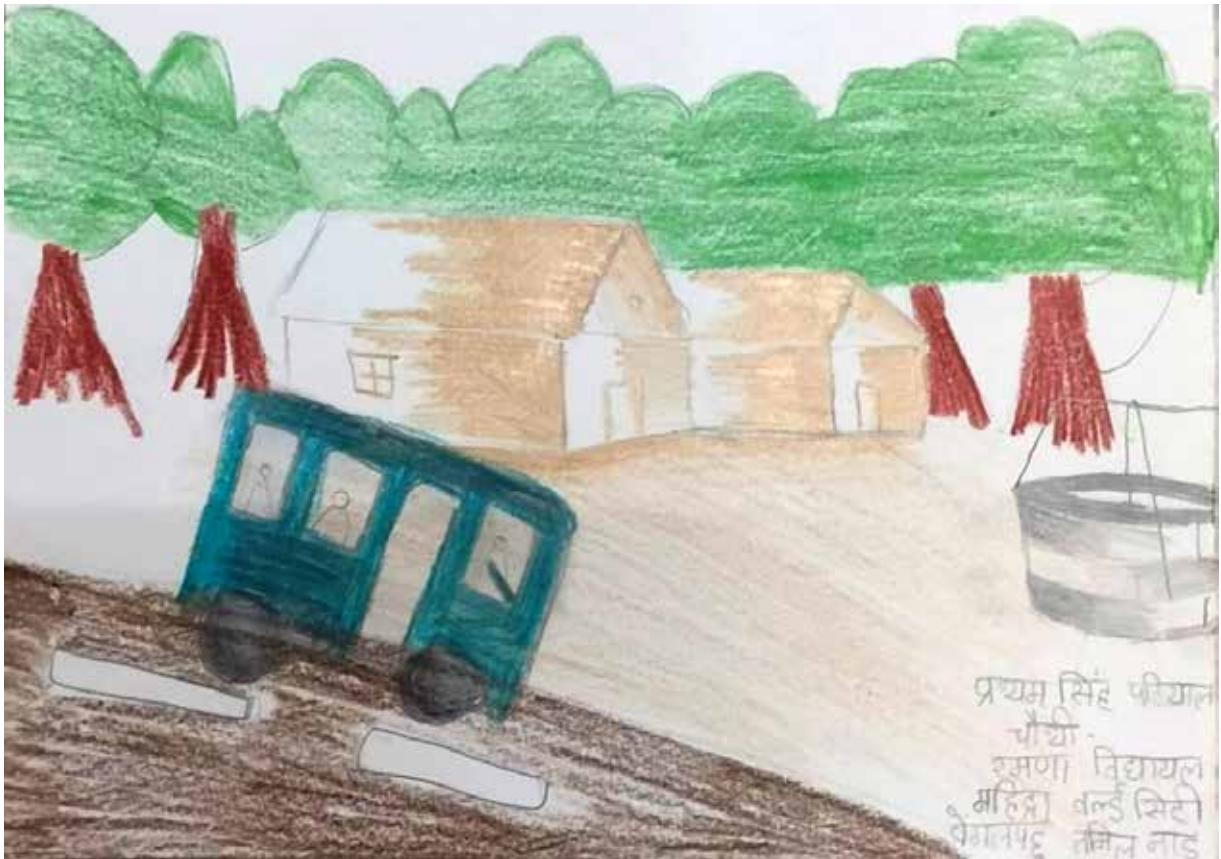
राखी लविस्कर

आठवीं, शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला  
डाण्डीवाड़ा, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

हमारे घर के सामने एक कुआँ है। वो जगह बहुत मज़ेदार है। क्योंकि वहाँ जाम, आम, नींबू के पेड़ हैं और आसपास खेत भी हैं। वहाँ पर हम सभी दोस्त जाकर जाम, आम खाते हैं। जब भी छुट्टी लगती है हम सब दोस्त वहीं पर जाकर मस्ती-मज़ाक करते हैं। और हमारी छुट्टी का दिन वहीं बीत जाता है। अगर स्कूल नहीं लगा तो यह पक्का है कि हम वहाँ पर जाएँगे।

मुझे  
मुझे

चित्र: सुमन, अपना स्कूल, देदुपुर सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश



चित्र: प्रथम सिंदूर अधियाला, चौथी, रमण विद्यालय,  
महिन्द्रा कल्ड स्टीरी, चंगलपेट, तमिळनाडु

## पार्क व पेड़

अहान जैन  
दूसरी, दरबारीलाल देव मॉडल स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली

मेरे घर के पास एक बहुत बड़ा आम का और सुन्दर-सा जामुन का पेड़ है। लेकिन सबसे ज़्यादा अच्छा मुझे डिस्ट्रिक्ट पार्क में लगता है। वह मेरे घर से बहुत ही पास है। वहाँ मैं झूला झूलता हूँ, फिसलपट्टी पर फिसलता हूँ। वहाँ मैं स्केटिंग भी करता हूँ। बहुत मज़ा आता है। वो किसी जंगल जैसा लगता है जहाँ बहुत बड़े-बड़े पेड़ और सुन्दर फूल लगे हैं। वहाँ मैंने कई बार मोर को नाचते हुए भी देखा है। बहुत ही मज़ेदार होता है ये।

मुकु

## खट्टी-मीठी यादें

पलक  
ग्यारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

वैसे तो मुझे मेरा पूरा गाँव पसन्द है लेकिन मुझे मेरे घर का आँगन बहुत अच्छा लगता है। क्योंकि इस आँगन से मेरी खट्टी-मीठी यादें जुड़ी हैं। इसी आँगन में मैंने चलना सीखा। मेरे आँगन में एक पेड़ है। वहाँ पर मैं झूला झूलती हूँ। अपने आँगन में लगे इस पेड़ से मैं आज भी उतना ही लगाव रखती हूँ, जितना बचपन में रखती थी। पर इस बरसात में इस पेड़ की दो टहनियाँ टूट गई हैं। शायद यह पेड़ अब बूढ़ा हो चला है। इस पेड़ के साथ मेरी अनगिनत यादें जुड़ी हुई हैं। मैं चाहती हूँ कि यह हमेशा इसी तरह सामने खड़ा रहे और मैं इससे बातें करती रहूँ।

मुकु

वित्र: नैवध्य थपलियाल, नौरी, विवेकानन्द स्कूल, देहरादून, उत्तराखण्ड





चित्र: रोहित, सातवीं, अ.जी.म प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान



चित्र: मंजूर अली, सातवीं, अ.जी.म प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

मेरा  
पूरा



## झण्डू बाम

समर्थ यादव

चौथी, एकलव्य फार्डेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, चरगाँव माल  
बीजाइण्डी, मण्डला, मध्य प्रदेश

मैं और मेरे दोस्त स्कूल से आने के बाद साइकिल चलाने जाते हैं। हम तीनों एक-दूसरे के साथ कभी झगड़ा नहीं करते। पर तीनों ने एक-दूसरे के नाम कुछ भी रख दिए हैं। मेरे एक दोस्त का नाम लक्खा टकला है और दूसरे दोस्त का नाम महोदय लाल है। और मेरे दोस्त मुझे झण्डू बाम कहकर बुलाते हैं। हम तीनों कभी एक-दूसरे से गुस्सा नहीं होते। और केन्द्र में आते हैं तो भी साथ रहते हैं। कभी लड़ते भी हैं तो शाम तक मिल जाते हैं।



## भेदभाव और घमण्ड

प्रकाश ठाकुर

छठवीं, कथा कानन लाइब्रेरी एवं संसाधन केन्द्र, नगांव, असम

दुर्गा पूजा के तीन दिनों मैं मैंने बहुत कुछ नोटिस किया, जैसे भेदभाव और घमण्ड। नगांव के एक तरफ की कमिटी ने बहत अच्छे से पण्डाल सजाया था और वहाँ किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जा रहा था। लेकिन एक बड़ी कमिटी में भेदभाव और घमण्ड दिखा, खासकर जब एक बुजुर्ग औरत अपनी जाति के लोगों को अन्दर जाने दे रही थीं, लेकिन हम लोगों को नहीं। उनका घमण्ड साफ झलक रहा था क्योंकि इस बार उनकी कमिटी का पण्डाल बहुत अच्छा बना था और वह प्रेसिडेंट बनी थीं। मुझे लगता है कि इस बार एक अलग पण्डाल को जीतना चाहिए था, जहाँ भेदभाव और घमण्ड नहीं था।



चित्र: नन्दिनी धुमाल, आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

# मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य

ममता

ग्यारह वर्ष, अंजीम प्रेमजी स्कूल  
बाइमेर, राजस्थान



## पुरानी लालटेन

फोटो: हीना ठाकुर

पापा जब बच्चे थे तब उनके माता-पिता ने उन्हें एक लालटेन लाकर दी। वह लालटेन बहुत सुन्दर थी। वह सूरज जैसी चमकती थी। उसका काँच साफ था। उस समय सब चिमनी की रोशनी में पढ़ा करते थे। इसलिए जब पापा लालटेन के साथ घर पहुँचे तो दूर-दूर के बच्चे उस लालटेन को देखने आए।

उस समय वह लालटेन सबके हिसाब से बहुत महँगी थी। तब एक लालटेन पचास रुपए की आती थी और महीने में पचास रुपए का तेल पी जाती थी। रात के समय सभी बच्चे पापा के पास आते थे। वे सभी एक छोटे-से पेड़ पर लालटेन को लटकाकर उसकी रोशनी में पूरी रात पढ़ते थे। कई बार सब वहीं मिट्टी में सो जाते। सुबह जल्दी उठते और घर से दूर कुएँ में से पानी भर लाया करते। वह लालटेन सबकी चहेती बन चुकी थी।

एक दिन जब सारे बच्चे पापा के पास पढ़ने आए तो पापा ने उन सबसे कहा, “अगर रोशनी चाहिए तो सभी महीने में एक लीटर मिट्टी का तेल लाना।” अगले दिन से सभी तेल लाने लगे जिससे पापा के पचास रुपए बच गए। पापा जब भी कहीं जाते तो अपनी लालटेन को ताला लगाकर जाते थे। पापा घमण्डी तो नहीं थे, पर मेहनती बहुत थे। वे लालटेन के तेल के लिए अपना समय बचाकर दुकान पर काम करते थे। जब उस लालटेन का धुआँ सबकी नाक में जाता था तो सब सुबह एक साथ पानी में मुँह धोते तो पूरा पानी काला हो जाता था। आज भी हम गाँव जाते हैं तो वह लालटेन एक कोने में पड़ी रहती है।



विवेक कुमारे व कन्हैया कुमारे

आठवीं, शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला, कोटमीमाल, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

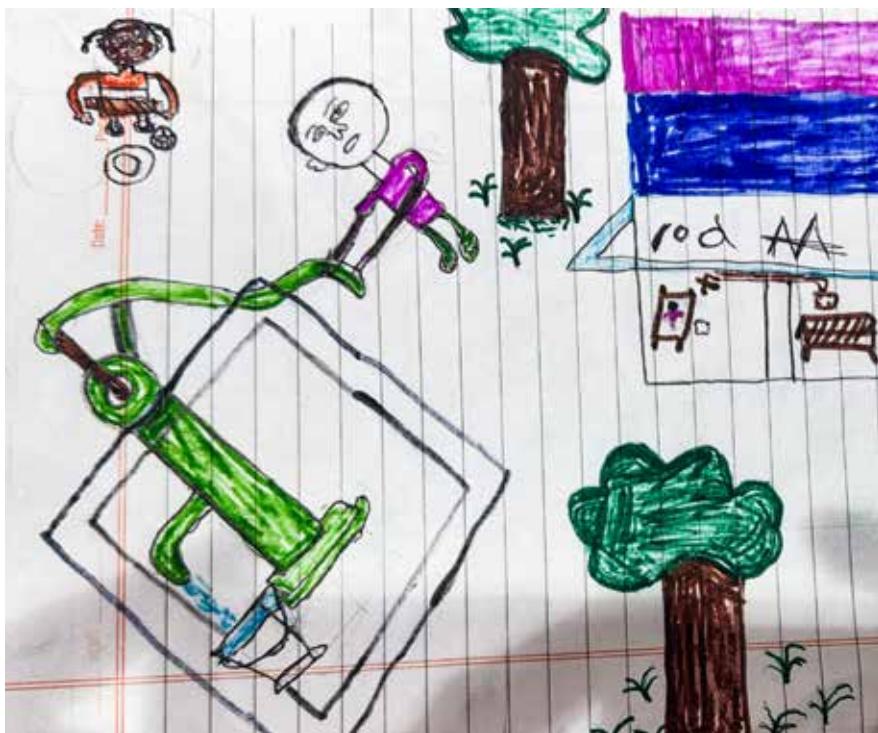
हमारे घर में एक बहुत पुरानी लालटेन है। और सिक्का है जो पुराने जमाने में चलता था। वो दो और पचास पैसे का है। हमारे घरवाले बोलते हैं कि हम ये पैसा दुकान पर लेकर जाते थे तो हमें बहुत सारी चॉकलेट और बिस्कुट देते थे। अब तो पाँच रुपए में सिर्फ एक बिस्कुट देते हैं। और पाँच रुपए में तो हम पूरे घर का राशन ला लेते थे। अब तो पाँच सौ रुपए में भी पूरा राशन नहीं आता।



## नानाजी की स्टीक कार

श्रेयांश राज  
चौथी, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल  
चंगलपेट, तमिलनाडु

# मेरे घर का सबसे पुराना साल



चित्र: अमरजीत, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

## हैंडपम्प

अमरजीत  
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरा घर मेरे खेत में ही बना है। घर के बाहर एक हैंडपम्प लगा है। यह हैंडपम्प मेरे परदादाजी ने लगवाया था। इसका उपयोग तब खेत में पानी चलाने के लिए होता था। अब तो लाइट लग गई है। और खेत में सिंचाई करने के लिए गाँव में मशीन भी मिल जाती है। अब हैंडपम्प का उपयोग हम घर के कामों के लिए करते हैं। हम लोग नल पर ही नहाते हैं और उसी का पानी पीते हैं। दोपहर के समय वहीं पर माँ बरतन भी साफ करती हैं। और कपड़े भी धोती हैं। नल अभी भी ठीक काम करता है। कभी-कभी वासर कट जाता है तो नया लगाना पड़ता है। परदादा तो अब नहीं हैं पर उनका लगवाया हुआ नल अब भी हमारी मदद कर रहा है।

मेरे नानाजी के पास एक तीस साल पुरानी कार थी। उसका नाम फिएट था। वह बहुत तेज़ चलती थी। और बहुत मजबूत भी थी। उसमें घूमने में हमें बहुत मज़ा आता था। कुछ साल पहले एक अंकल जिन्हें पुरानी चीज़ें रखने का शौक था, वे यह कार ले गए और उसे सँभालकर रखा है।

नवम  
दिसंबर



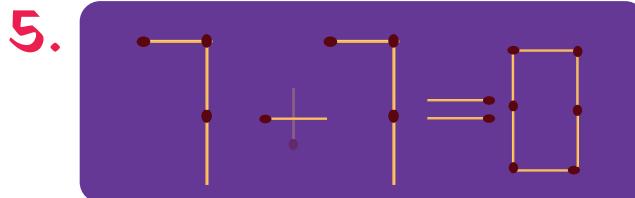
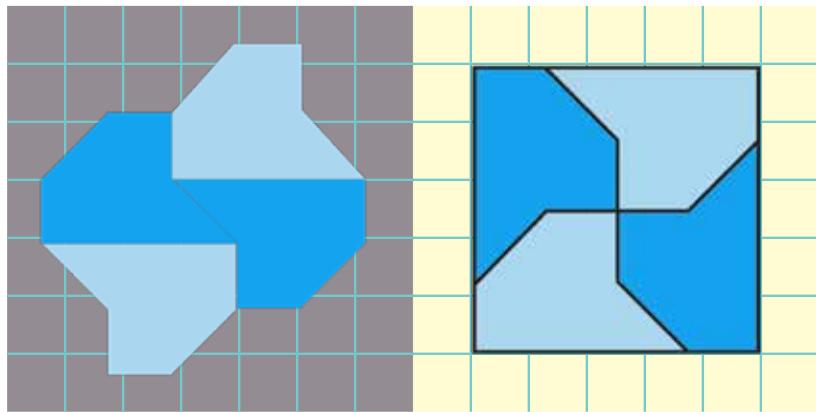


## जवाब

1. 11

2. क्योंकि वह उस स्टोर में काम करता था और बेकार हो गए सामान को कार्ट में डालकर बाहर ले जा रहा था।

4. 6, 9, 4, 1



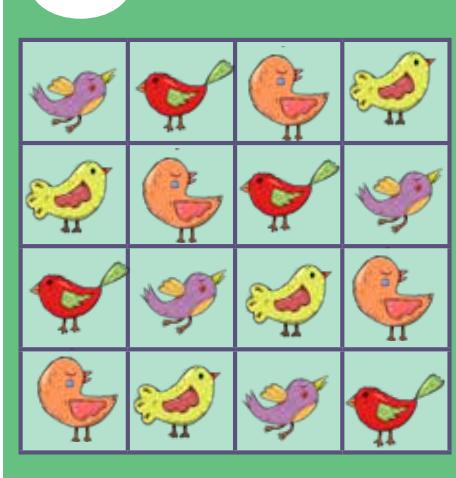
9.

क	से	रा	बे	श	र	म
ने	म	गु	ला	ब	जू	ट
र	ल	ल	चं	पा	मा	ही
गें	ल	मो	ग	रा	त	नी
टे	द्वा	ह	र	सिं	गा	र
पा	सू	र	ज	मु	खी	लि
चाँ	द	नी	रा	च	मे	ली

7.  $12 \times 2 = 24$

8. 1. नेहा थ्रेमस में गरम चाय है, पी लेना।  
 2. उसका नमकीन बनाने का तरीका ही कुछ अलग है।  
 3. मेरी पतंग लाल रंग की है।  
 4. जोया ने पावभाजी भा~~पेट~~ खाई और पैक भी करा ली।  
 5. महिमा थानी ले जाना।  
 6. सपना कल दिल्ली जाने वाली है।

3.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1 के	म	र	2 के	3 आ	4 के
ने			5 च	ना	री
6 र	सी		ना	7 गे	दा
			8 व	र	9 ग
10 ग		बू		द	11 चौ
			धा		
12 के	म	ल	13 या	द	
झी			14 रा	त	रा

सुडोकू-90 का जवाब

4	1	5	3	6	2
6	3	2	4	1	5
5	2	1	6	4	3
3	6	4	5	2	1
2	4	3	1	5	6
1	5	6	2	3	4



10.

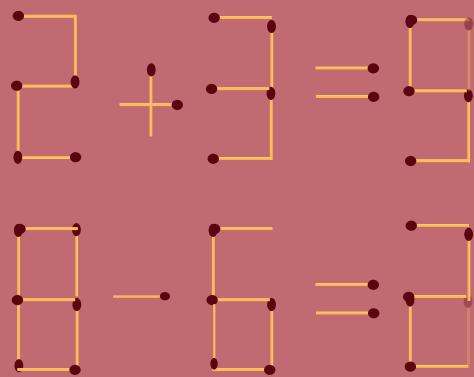


12. बक्सा नम्बर 2 को। यदि कार पहले बक्से में

होती तो बक्सा नम्बर 1 व 2, दोनों की चिप्पी सही हो जाती। इसी तरह यदि कार बक्सा नम्बर 3 में होती तो बक्सा नम्बर 2 व 3 दोनों की चिप्पी सही हो जाती। इसलिए कार केवल बक्सा नम्बर 2 में ही हो सकती है।

14. पैदल चलकर, क्योंकि नदी में पानी नहीं था।

15.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब



1. ह	2. ना	3. दो	4. क
5. र	6. मे	7. ना	8. ता
9. का	10. का	11. य	12. डा
13. ज	14. कु	15. ग	16. र
17. ग	18. सी	19. य	20. डा
21. ओ	22. घो	23. ग	24. क
ट	ला	कु	टो
स	गौ	रो	शी

13.



16. 5 किताबें

17. 9 को उठाकर उलटा करके 1 के बगल में रख दो, तो  $8 + 8 = 16$  हो जाएगा।

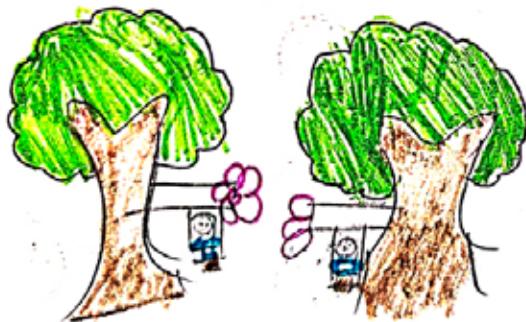
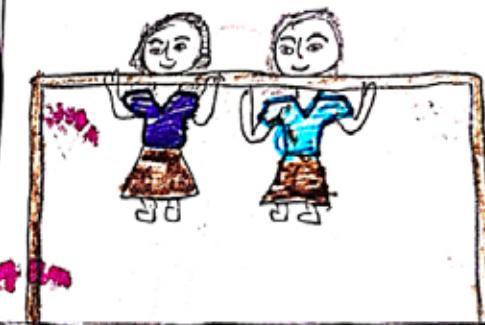
$$2^6 - 63 = 64 - 63 = 1$$

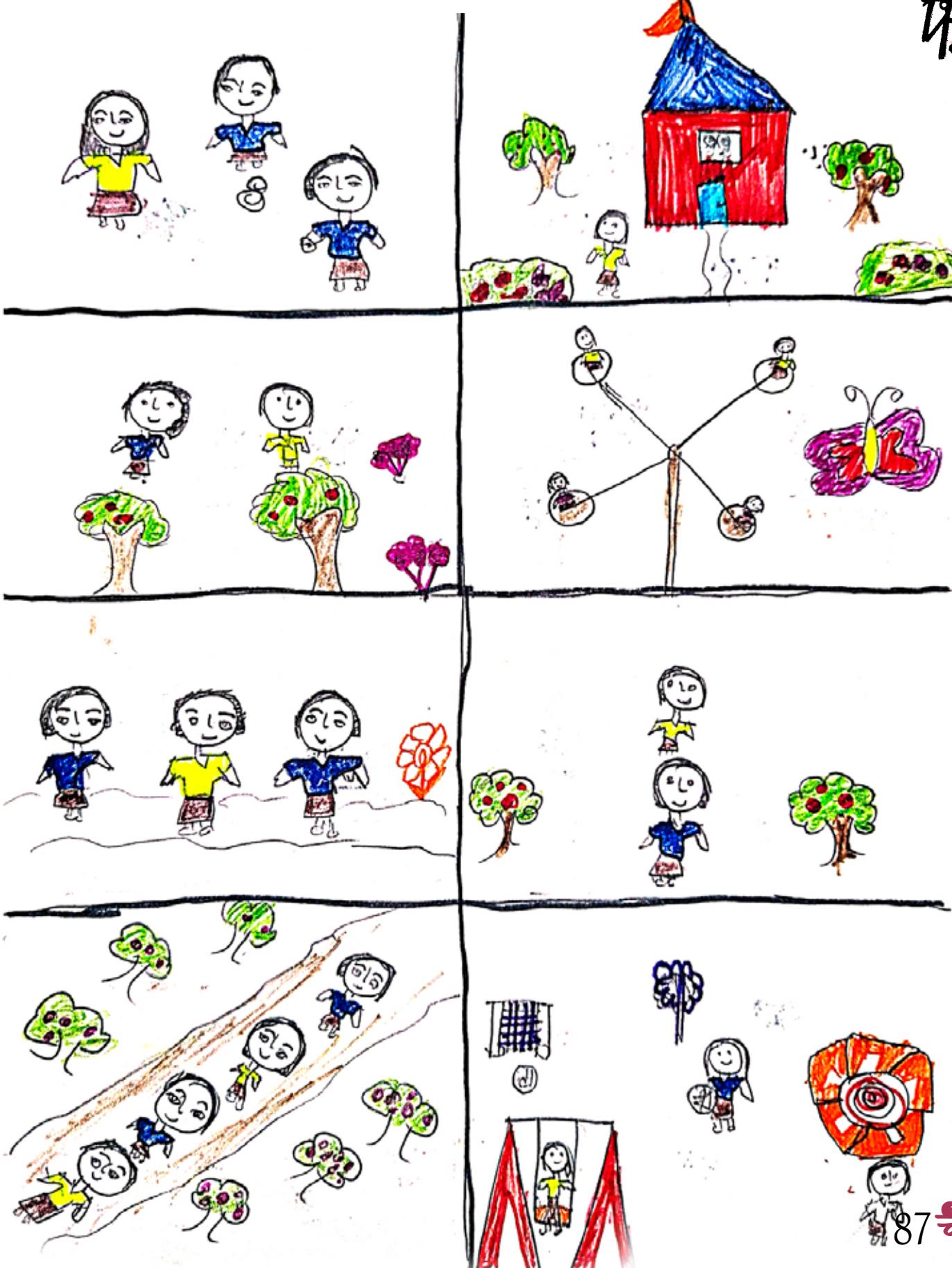
सुडोकू-91 का जवाब

2	1	9	4	8	3	7	5	6
6	7	8	5	1	9	2	3	4
5	3	4	2	7	6	9	8	1
8	6	1	7	4	2	3	9	5
4	5	2	3	9	8	6	1	7
3	9	7	6	5	1	4	2	8
7	8	5	9	2	4	1	6	3
1	2	6	8	3	7	5	4	9
9	4	3	1	6	5	8	7	2

Name = LAXMI  
Class = VII

Roll No = 713 [मेरा वन्धुन: चित्र कथा]  
School Name = S.S.S. Kamba





नवम्बर-दिसम्बर 2025

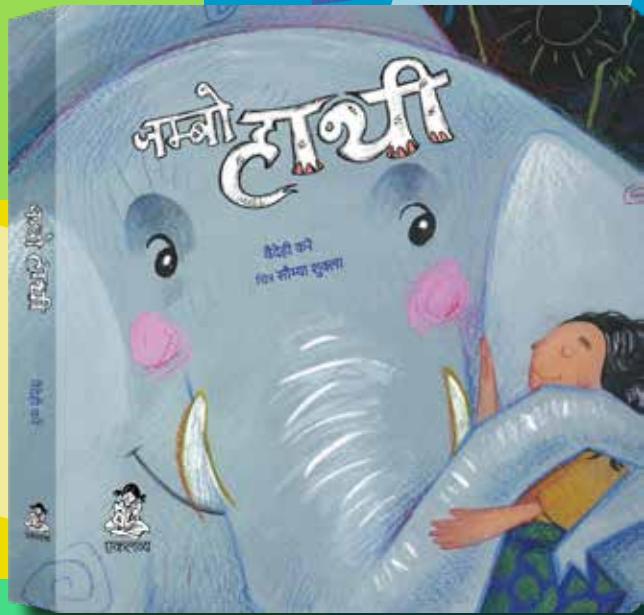
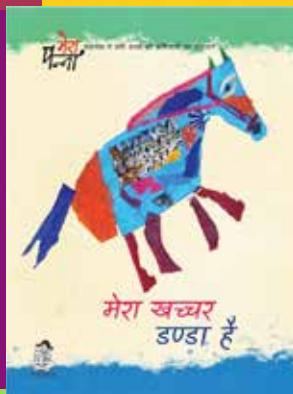
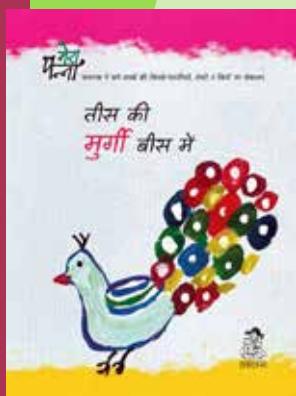
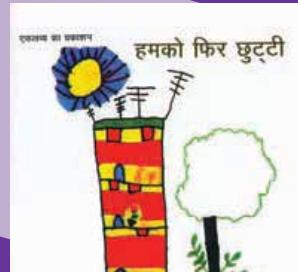
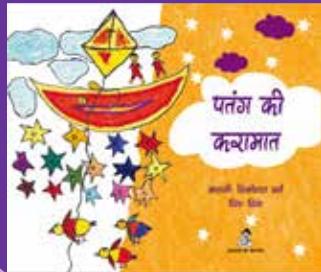
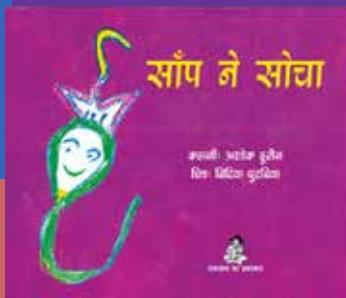
# मेरा पन्ना

## रचनाओं से बनी किताबें...

बच्चों का दुनिया देखने का नजरिया अमूमन बड़ों जैसा नहीं होता। वे शब्दों या चित्रों के ज़रिए अपने आसपास की चीजों को जिस बारीकी से बयाँ करते हैं उनमें उनकी एक खास शैली देखने को मिलती है।

बाल साहित्य में बच्चों की रचनाओं को अक्सर बहुत कम जगह मिलती है। लेकिन चकमक की हमेशा से यह कोशिश रही है कि बच्चों की रचनात्मकता को माकूल जगह दी जाए। इसलिए चकमक में शुरुआत से ही ‘मेरा पन्ना’ नाम से एक कॉलम रहा है। चकमक में छपी बच्चों की रचनाओं को एकलव्य ने कई किताबों के रूप में भी प्रकाशित किया है।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23



प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोजारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।

सम्पादक: विनता विश्वनाथन